संसार और धर्म

लेखक : कि० घ० मशरूवाला

अनु० महेन्द्रकुमार जैन

अिस पुस्तकमें श्री किशोरलाल मशरूवालाने अपने मार्मिक और मौलिक ढंगसे जिन विषयोंकी विशद चर्चा की है, वे मुख्यतः ये हैं: १ धर्म और तत्त्व-चिन्तनकी दिशा अेक हो तभी दोनों सार्थक बनते हैं; २. कर्म और अुसके फलका नियम केवल वैयक्तिक नही, बल्कि सामूहिक भी है; ३. मुक्ति कर्मके विच्छेदमें या चित्तके विलयमें नही, परन्तु दोनोंकी अुत्तरोत्तर शुद्धिमें है; ४. मानवताके सद्गुणोंकी रक्षा, पुष्टि और वृद्धि ही जीवनका परम ध्येय है। पुस्तकके आरंभमें प्रसिद्ध तत्त्वचिन्तक पंडित सुखलालजीकी 'विचार-कणिका' तथा अन्तमें श्री केदारनाथजी जैसे साधुपुरुषकी 'पूर्ति' ने पुस्तककी अुपयोगितामें और भी वृद्धि कर दी है।

की० २–८–०　　　डाकखर्च १–०–०

गोसेवा

[तीसरा संस्करण]

लेखक : गांधीजी; अनु० रामनारायण चौधरी

अिस संग्रहमें सच्ची गोरक्षा और गोसेवाके बारेमें गांधीजीके तथा अुनके निकटके साथियों और सहयोगियोंके लेख तथा भाषण अिकट्ठे किये गये हैं। अुन्होंने अेक जगह कहा है: "मुझसे कोअी पूछे कि हिन्दू धर्मका बड़ेसे बड़ा बाह्य स्वरूप क्या है, तो मैं गोरक्षा बताअूंगा।"

की० १–८–०　　　डाकखर्च ०–६–०

हमारे हिन्दी प्रका

जीवनका सद्व्यय

['इकॉनॉमी ऑफ ह्यूमन लाइफ' का हिन्दी अनुवाद]

अनुवादक
हरिभाऊ उपाध्याय

नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अहमदाबाद

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-१४

पहली बार १०००
दूसरी बार : ३०००, १९४९
तीसरी बार ५०००, १९५७

अनुवादकके दो शब्द

जिस अनन्त विश्व-समुद्रमें मनुष्यका जीवन अेक नौकाकी तरह है। वह नौका धर्मरूपी तख्तोंसे बनी हुअी है, पुरुषार्थ अुसकी पतवार है और विवेक अुसका नाविक। अिन्हींकी सावधानी, सजगता और दूरदर्शितासे वह बड़े-बड़े तूफानों, जीवनको शान्तिहीन बनानेवाली आकस्मिक विकट घटनाओं, महान हिंस्र जलचरों — शोक, दुःख और संकटों — पर विजय प्राप्त करती हुअी अपने लक्ष्य पर पहुंचती है। अिन्होंने कर्तव्य-पालनमें अुपेक्षा, शिथिलता और विलम्ब किया नहीं कि नौका गंभीर सागरके गर्भमें चिरकालके लिअे विलीन हुअी नहीं।

मानव-जीवन कल्पवृक्षकी तरह वांछित फलको देनेवाला और जलके बुदबुदेकी तरह क्षणभंगुर है। फिर वह जन्म अेक बार हाथसे खो गया कि पुन अुसकी प्राप्ति होना सहज नहीं। 'दुर्लभ मानुष जन्म।' अिसीलिअे वह अमूल्य माना जाता है। संसारकी कोअी वस्तु न अितनी अुपयोगी है, न अितनी दुर्लभ और न अितनी अमूल्य।

अैसी अनमोल परन्तु क्षणभंगुर और फिर भी दुष्प्राप्य वस्तुका अुपयोग किस तरह करना चाहिये — मनुष्य-जीवनका सद्व्यय किस तरह करना चाहिये — यह जानना प्रत्येक नर-देहधारीका परम कर्तव्य है। और प्रस्तुत पुस्तकके विद्वान, तत्त्वविद्, बहुदर्शी और अनुभवी लेखकने अिस पुस्तकके द्वारा वही मार्ग संसारको दिखाया है। कहा है —

अनन्तपार किल शब्दशास्त्रम्
स्वल्प [illegible] [illegible]ाः।

[illegible]मारा जीवन है अल्प।
[illegible]। अिसलिअे, जैसे कि
[illegible] हमको भी अुनने
लेखकने अिस ग्रन्थमें
[illegible] सिद्धान्तोंका नवनीत

जिस पुस्तकका यह अनुवाद है अुसके मुखपृष्ठ पर लिखा है— Written by an ancient Brahmin. (अेक प्राचीन ब्राह्मण द्वारा लिखी हुअी।) यह अंग्रेजी पुस्तक सन् १७५१ में पहले पहल प्रकाशित हुअी। सन् १८१२ तक अंग्रेजीमें असके पाच सस्करण हो गये थे। अंग्रेजीका लेखक कहता है कि मैंने चीनीसे अिसका अनुवाद किया। अिन बातोंसे यह अनुमान होता है कि यह पुस्तक मूलत संस्कृत या प्राकृतमें किसी ब्राह्मण (अंग्रेजी अनुवादकके मतानुसार Brahmin Dandmis) आचार्यके द्वारा लिखी गअी होगी। युरोपियन लेखकोंने ब्राह्मण दण्डमिसके द्वारा सिकन्दर महानके नाम लिखे अेक प्रसिद्ध पत्रका अुल्लेख किया है। चीनके कुछ विद्वानोंका मत है कि यह पुस्तक चीनी तत्त्ववेत्ता कनफ्युशियस या लोकिन (Leo-Kiun) की लिखी हुअी है। परतु अंग्रेजीका अनुवादक और क्यू-त्सू (Cao-tsou) नामका विद्वान, जिसने पहले पहल असका अर्थ लगाया, दोनो अिसे किसी ब्राह्मण ही की लिखी हुअी मानते हैं।

अंग्रेजी पुस्तकमें लिखा है कि चीनी भाषामें अिस पुस्तककी प्रति लामाओंके अेक प्रसिद्ध मन्दिरमें प्राप्त हुअी थी। बरसो तक लामा लोग न अिसका अर्थ समझ पाये, न कर पाये। अंग्रेजी पुस्तकसे यह भी मालूम होता है कि अंग्रेजीके अनुवादकने अुस अनुवादको अपने स्वामी अर्ल ऑफ (लार्ड) चेस्टरफील्डको अुपहारके रूपमें भेंट किया था।

परतु अिस ग्रन्थके 'रमणी', 'पति' और 'मानव आत्मा, अुसकी अुत्पत्ति और धर्म' अिन अध्यायोंमें जो विचार प्रकट किये गये हैं, अुनसे मुझे शक होता है कि यह ग्रथ किसी प्राचीन सस्कृत-पडित या ब्राह्मणका लिखा नही हो सकता। 'रमणी' और 'पति' अिन दो अध्यायोंमें प्रदर्शित विचार यद्यपि प्राचीन आर्य-आदर्शोंके प्रतिकूल नही हैं, तथापि लेखन-शैली और भावोंके प्रकाशनकी कोमलतामें आधुनिक सस्कारोंकी गन्ध जरूर आती है। और ये बातें हमें हठात् युरोपियन हृदयकी याद दिला देती हैं। आत्मा-संबधी अध्याय पश्चिमी अपरिपक्व विचारोंसे भरा है। पृष्ठ ४२ पर लेखक मर्गे, कुत्ते और बकरेकी आत्माके सबधमें लिखता है— "जब ये मरते हैं तब [illegible] आत्मा पंचत्वको प्राप्त हो जाती है, अकेली तेरी (मनुष्यकी) आत्मा [illegible] बच रहती है।" पृष्ठ ४२ पर लिखा है— "यद्यपि वह (आत्मा) [illegible]त् भी कायम रहेगी, तथापि यह न समझ कि वह तेरे पहले अुत्पन्न

हुअी है, मेरे शरीरकी रचनाके साथ ही अुसका नाश प्रकट हुआ है।" ये विचार तो स्पष्टतः विचित्र मालूम होते हैं। 'सोऽहम्', 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म', 'अेकोऽहं द्वितीयो नास्ति'—अिन आर्य-सिद्धान्तोंके विरोधी वचन किसी प्राचीन ग्रन्थके कैसे हो सकते हैं? अतअेव या तो यह सारी पुस्तक ही मूलतः अंग्रेजीमें लिखी गयी है और प्रचार आदिके खयालसे तथा अुस कालके समाजकी मनोदशाके अनुरूप अुसका चीनीसे अनूदित होना और अुसका मूल संस्कृतमें होना लिख दिया गया, या यह भी हो सकता है कि अपने धर्म और देशके विचारों और सिद्धान्तोंके अनुसार अिस अध्यायके विचारोंमें अंग्रेजी अनुवादकने परिवर्तन कर दिया हो। अनुवादका श्रेय चीनी भाषाको अिसलिअे दिया गया होगा कि अुस कालमें अिंग्लैंडमें चीनके सम्बन्धमें लोगोंके हृदयमें बड़ी जिज्ञासा और अुत्सुकता रहती थी। 'लेटर्स आफ दि चायना मैन' तथा गोल्डस्मिथका अुदाहरण अिसके लिअे पर्याप्त है। अुन दिनों चीनकी चर्चा अिंग्लैण्डवासियोंका प्यारा विषय हो गया था।

पर अधिक विचार करने पर यह ग्रन्थ स्वयं लार्ड चेस्टरफील्डका ही लिखा मालूम होता है। लार्ड चेस्टरफील्ड अैसे नैतिक विषयोंके ग्रन्थ-लेखकके रूपमें प्रसिद्ध ही हैं। अिसकी शैली भी अुनकी शैलीसे मिलती-जुलती है। और कितने ही अंग्रेज लेखकोंने संस्कृत-पंडितोंकी भाषा-शैलीका अनुकरण करना अेक फैशन-सा बना लिया है। अध्यापक बेनके ग्रन्थ जिन्होंने पढ़े हैं, वे अिस बातको सहज ही मान लेंगे। अंग्रेजीके अनुवादकने न तो स्वयं अपना नाम कहीं लिखा है, न चीनी या संस्कृत ग्रंथका। यह मौन रहस्यपूर्ण है और हमें अिसी नतीजे पर पहुंचाता है कि अिस ग्रंथके कर्ता और कोअी नहीं, स्वयं लार्ड चेस्टरफील्ड है।

पर यह बात गौण है। मुख्य बात है ग्रंथकी अुपयोगिता। वह अिसी बातसे सिद्ध है कि अब तक फ्रेंच, लैटिन, जर्मन, अिटालियन, और वेल्श आदि युरोपकी समस्त भाषाओंमें अिसका अनुवाद हो चुका है और कअी प्रसिद्ध चित्रकारोंने अिस पर चित्र भी बनाये हैं। भारतमें महामना मालवीयजी अिसके पीछे पागल हैं। अुन्होंने कैअी युवकोंको अिसे पढ़ने और अिसका मनन करनेकी सलाह दी है। मुझे भी अिसके हिन्दी अनुवादके लिअे अुन्होंने अुत्साहित किया है, और अिसकी प्रस्तावना भी अुन्हींके कर-कमलोंसे लिखी जानेवाली थी। पर अुनकी कार्य-व्यस्तता और पुस्तकके शीघ्र प्रकाशित होनेकी

आवश्यकताने अिस अनुवादको अिस सौभाग्यसे वंचित कर दिया। बिहारके नेता बाबू राजेन्द्रप्रसादजी अिसके सम्बन्धमें लिखते हैं :

"यह ग्रंथ छोटा है, पर अमूल्य है। यह अुन रत्नोंमें है, जिनकी कीमत कभी घट नहीं सकती। यह महान धर्मग्रंथोंकी तरह बराबर मनुष्यके चरित्र-गठनमें सहायता देता रहेगा। . . अिस ग्रन्थके प्रायः प्रत्येक वाक्यसे आज हम सत्याग्रहके संग्राममें काममें ला सकते हैं और जहां तक अिसकी शिक्षा ग्रहण करके अुसका अनुकरण हम कर सकते हैं, वहीं तक हमें सफलता भी होगी। महात्मा गांधीजीने जो नया रास्ता हिन्दुस्तानको बताया है, वह नया अिसी अर्थमें है कि हम अपने पूर्वजोंके विचारोंको भूल गये हैं। अिस छोटे ग्रन्थसे प्रमाणित हो जायगा कि वे विचार केवल हमारे पूर्वजोंके ही नहीं, वरन् समस्त धर्मोन्नत जातियोंके थे और होने चाहिये। जिस प्रकार हम धर्मग्रंथोंका पाठ करते हैं, अुन पर मनन करते हैं और अुनका अनुकरण करते हैं, अुसी प्रकार अिस ग्रन्थका भी पठन, मनन और अनुकरण करना चाहिये। विशेषकर यदि किसी ग्रन्थके द्वारा चरित्र-गठन करानेकी आशा रखी जाती हो, तो अिससे बढ़कर विद्यार्थियोंके लिअे दूसरा ग्रन्थ नहीं मिल सकता।"

मुझे अपनी तरफसे अिसके विषयमें सिर्फ अितना ही कहना है कि अिसका अध्ययन और अनुवाद करके मुझे बड़ी स्फूर्ति, बड़ा आनन्द और बड़ा अुत्साह मिला। यह पुस्तक मनुष्य-मात्रके लिअे मार्गदर्शिका और कर्तव्य-कुंजी है। अिसकी अुक्तियां हृदय पर गहरा असर डालती हैं। मैं अपने मित्र श्री गणेशशंकरजी विद्यार्थी, प्रताप-संपादक, को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिन्होंने अैसी अनमोल पुस्तकके अनुवादकी प्रेरणा मुझे की।

अिसके अनुवादमें मैंने भाषा और भाव दोनोंके सौन्दर्य पर भरसक समान दृष्टि रखी है। जहां निर्वाह होता देखा वहां प्राय: शब्दशः अनुवाद किया है, और जहां आवश्यक जान पड़ा वहां अधिक स्वतन्त्रतासे अनुवाद किया है। अब रही सफलता। अिसकी जांचके अधिकारी पाठक हैं, अनुवादक नहीं। यह तो 'पत्र, पुष्प, फल, तोयम्' जो कुछ मुझसे बन पड़ा, पाठकोंके हाथोंमें प्रेमपूर्वक सौंपता है।

सत्याग्रहाश्रम, साबरमती, हरिभाऊ उपाध्याय
मार्गशीर्ष व० ९, १९८० वि०

न्याय और दया तो अुसके सिंहासनके सम्मुख ही खड़े रहते हैं; अुनारशीलता और प्रेमसे अुसका मुख-मण्डल सदा देदीप्यमान बना रहता है।

अुसके तेजकी समता करनेवाला कौन है? वह तो सर्वशक्तिमान है। अुसकी सत्ताकी स्पर्धा कौन कर सकता है? क्या कोअी अुसके ज्ञानकी बराबरी कर सकता है? क्या सौजन्यमें किसीकी तुलना अुसके साथ हो सकती है?

हे मनुष्य, तुझे अुसीने पैदा किया है। अुसीके संकेतसे अिस मृत्यु-लोकमें तेरा स्थान नियुक्त हुआ है। तेरे मनकी विविध शक्तियां अुसीकी दयालुताकी देन हैं। तेरा शरीर-चमत्कार अुसीके करोंका कौशल है।

अतअेव अुसका आदेश सुन, क्योंकि वह श्रेयस्कर है। और, जो अुसकी आज्ञाका पालन करेगा, अुसकी आत्माको निस्सन्देह शांति मिलेगी।

ॐ शांति: शांति: शांति: ।।

अनुक्रमणिका

पूर्वार्ध

अुत्तरार्ध

जीवनका सद्व्यय : पूर्वार्ध

१

व्यक्तिगत मानवी कर्तव्य

१. विचार

हे मनुष्य, तू आत्मचिन्तन कर, और यह तो सोच कि 'मेरे जीवन धारण करनेका अुद्देश्य क्या है?'

अपनी शक्तियोंका ध्यान कर, अपने अभावों और सबधों पर ध्यान दे, जिससे तुझे जीवनके कर्तव्योंका ज्ञान हो जाय और अपने समस्त कार्योंमें तुझे मार्ग दिखाओ देता रहे।

जब तक अपने शब्दोंको तौल न ले, कोओी बात मुहसे न निकाल और जो कोओी कार्य तू करना चाहता है अुसके सबधमें अपनी धुन और लगनकी जाच जब तक न कर ले तब तक कोओी काम न कर। असका फल यह होगा कि अकीर्ति तुझसे सदा दूर रहेगी, शर्मिन्दगी तेरे घरके लिओ बेगानी चीज होगी, पश्चाताप तेरे नजदीक न आवेगा और न शोककी छाया तेरे गालो पर दिखाओ देगी।

जो मनुष्य विचारहीन है, वह अपनी जिह्वा पर अकुश नही रख पाता। वह तो जो मनमें आता है वही कह बैठता है और फिर अपने ही मूर्खताभरे शब्दोंकी बदौलत फसकर झगडेमें पड जाता है।

जो मनुष्य बिना अिस बातको सोचे या देखे कि दूसरी ओर क्या है जल्दीमें दौडकर किसी चहार-दीवारीको फादता है, वह अुसके दूसरी तरफके गड्ढेमें गिर सकता है। यही हाल अुस मनुष्यका होता है जो, बिना नतीजा सोचे ही, किसी कामको अेकदम कर बैठता है।

अिसलिअे विचारकी पुकार पर कान कर। अुसके शब्द मानो बुद्धिमत्ताके शब्द है। अुसके बताये मार्गोंके द्वारा तू सुरक्षित रहेगा, और अन्तको सत्यसे तेरी भेंट हो जायगी।

२. विनय

हे अपने ज्ञानके गर्वमें मस्त रहनेवाले मनुष्य! तू है कौन चीज? अरे! अपने प्राप्त किये गुणों पर तू क्यों शेखी मारता है?

ज्ञानी बननेकी पहली सीढ़ी यह है कि तू अपनेको अज्ञानी समझ। और यदि तू दूसरेकी दृष्टिमें अपनेको मूर्ख न ठहराना चाहता हो, तो अपनी समझमें ज्ञानी होनेकी रानाको छोड दे।

जिस प्रकार अेक सादी साड़ी ही किसी सुन्दरी स्त्रीका सर्वोत्कृष्ट अलंकार है, अुसी प्रकार सद्व्यवहार ज्ञानका सबसे बडा भूषण है।

विनयशील मनुष्यके भाषणसे सत्य भी दमक अुठता है और जिस संकोचके साथ वह बातचीत करता है अुससे अुसकी भूलोंका दोष दोष नही मालूम होता।

वह केवल अपने ही ज्ञान पर भरोसा नही रखता; बल्कि मित्रोंके परामर्श पर भी विचार करता है और अुसके लाभका भागी होता है।

वह अपनी प्रशंसा सुननेसे मुह मोड लेता है और अुस पर विश्वास नही करता। अपनी पूर्णताका ज्ञान होनेमें अुसका नम्बर आखिरी होता है।

तो भी जिस प्रकार घूघटसे किसी युवतीके मुखडेकी सुन्दरता बढ जाती है, अुसी प्रकार विनयकी छायासे अुसके सद्गुण भी भूषित होते हैं।

लेकिन अुस घमण्डी आदमीको तो देख, जरा अुस व्यर्थके अभिमानीकी ओर तो देख, वह कैसे बढिया कपडे पहनता है, किस तरह राजमार्गोंमें घूमता है, कैसे अगल-बगल झाकता ताकता है और लोगोंकी दृष्टिको अपनी ओर खीचता है?

वह अपना सिर अूचा अुठाकर गरीबोंको तुच्छ दृष्टिसे देखता है, अपनेसे छोटे लोगोके साथ वह बुरी तरहसे पेश आता है और अिसके बदलेमें जो लोग अुससे श्रेष्ठ हैं वे अुसके अभिमान और मूर्खताको गिरी नजरसे देखते हैं और अपहास करते हैं।

...के मतको कोअी चीज नही समझता। वह तो बस अपने कुछ समझता है और अन्तको चक्करमें पड़ जाता है।

कल्पना-शक्तिके अभिमानमें फूला ही नही समाता। बस, ...ी बातें करने और सुननेमें बड़ा मगन रहता है।

अपनी प्रसन्नताको तो वह किसी अधीरीकी तरह पी जाता है, और जिसके बदलेमें गुणामदी लोग स्वयं अुसे चाट जाते हैं।

३. अुद्यमशीलता

जो दिन बीत चुके वे तो अब सदाके लिअे चले गये और आनेवाले दिन, संभव है, फिर न आवें। अिसलिअे, हे मनुष्य, तुझे चाहिये कि वर्तमान समयका अुपयोग कर ले। न भूतका अफसोस कर और न भविष्य पर अधिक अवलंबित रह।

यह क्षण तो तेरा है। अिसके बादका क्षण भविष्यकालके गर्भमें है। और तू नहीं जानता कि अुसमें से क्या प्रकट होनेवाला है।

अिसलिअे जिस किसी कामके करनेका तू निश्चय करे, अुसे शीघ्र कर डाल। जो काम सबेरे ही करना है, अुसे शाम पर न छोड़।

आलस्य अभावों और कष्टोंका पिता है। लेकिन सद्‌गुणके लिअे किये गये परिश्रमसे आनन्दकी अुत्पत्ति होती है।

अुद्यमशीलताकी भुजाओंके सामने अभाव परास्त हो जाता है। अुत्कर्ष और सफलता तो अुद्योगशील मनुष्यके मार्गो अर्दली हैं।

बता तो वह कौन है, जिसने द्रव्य अुपार्जन किया है, जो सत्ताधारी हुआ है, जो सम्मानसे भूषित है, नगरमें जिसकी कीर्ति छा रही है और जो राज-दरबारमें स्थान पाता है? यह भी कौन है, जिसने अपने घरसे आलस्यको मार भगाया है और दीर्घसूत्रतासे कह दिया है कि 'तू मेरी शत्रु है'?

बस, वह तड़के अुठता है और रातको देरसे सोता है, वह ध्यानमें अपना मन और कार्यमें अपना तन लगाता है और दोनोंके स्वास्थ्यकी रक्षा करता है।

पर दीर्घसूत्री मनुष्य स्वयं अपने लिअे भी भाररूप है। अुसका समय अुसके सिर पर अेक बोझ हो जाता है। वह किसी तरह अपना समय बिताता फिरता है और यह भी नहीं जानता कि अुसे क्या करना चाहिये?

अुसका जीवन, बादलकी छायाकी तरह, निकल जाता है और वह अपनी स्मृतिके लिअे कोअी चिह्न पीछे नहीं छोड़ जाता।

व्यायाम न करनेके कारण अुसका शरीर रोगग्रस्त रहता है। वह अगर काम करना चाहे, तो हिलने-डुलनेकी भी शक्ति अुसमें नहीं होती। बस,

२. विनय

हे अपने ज्ञानके गर्वमें मस्त रहनेवाले मनुष्य! तू है कौन चीज? अरे! अपने ज्ञानकी पूंजी पर तू क्यों शेखी मारता है?

ज्ञानी बननेकी पहली सीढ़ी यह है कि तू अपनेको अज्ञानी समझ। और यदि तू दूसरोंकी दृष्टिमें अपनेको मूर्ख न ठहराना चाहता हो, तो अपनी समझमें ज्ञानी होनेकी सनकको छोड़ दे।

जिस प्रकार ऐक सादी साड़ी ही किसी सुन्दरी स्त्रीका सर्वोत्कृष्ट अलंकार है, अुसी प्रकार सद्व्यवहार ज्ञानका सबसे बड़ा भूषण है।

विनयशील मनुष्यके भाषणमें सत्य भी चमक अुठता है और जिस संकोचके साथ वह बातचीत करता है अुससे अुसकी भूलोंका दोष दोष नहीं मालूम होता।

वह केवल अपने ही ज्ञान पर भरोसा नहीं रखता; बल्कि मित्रोंके परामर्श पर भी विचार करता है और अुनके लाभका भागी होता है।

वह अपनी प्रशंसा सुननेसे मुह मोड़ लेता है और अुस पर विश्वास नहीं करता। अपनी पूर्णताका ज्ञान होनेमें अुसका नम्बर आखिरी होता है।

तो भी जिस प्रकार घूंघटसे किसी युवतीके मुखड़ेकी सुन्दरता बढ़ जाती है, अुसी प्रकार विनयकी छायासे अुसके सद्गुण भी भूषित होते हैं।

लेकिन अुस घमण्डी आदमीको तो देख, जरा अुस स्वयंके अभिमानीकी ओर तो देख, वह कैसे बढ़िया कपडे पहनता है, किस तरह राजमार्गोंमें घूमता है, कैसे अगल-बगल झाकता ताकता है और लोगोंकी दृष्टिको अपनी ओर खीचता है?

वह अपना सिर अूचा अुठाकर गरीबोंको तुच्छ दृष्टिसे देखता है, अपनेसे छोटे लोगोंके साथ वह बुरी तरहसे पेश आता है और जिसके बदलेमें जो लोग अुससे श्रेष्ठ हैं वे अुसके अभिमान और मूर्खताको गिरी नजरसे देखते हैं, और अुपहास करते है।

वह दूसरोंके मतको कोअी चीज नही समझता। वह तो बस अपने ही रायको सब कुछ समझता है और अन्तको चक्करमें पड़ जाता है।

वह अपनी कल्पना-शक्तिके अभिमानमें फूला ही नही समाता। बस, दिन भर अपने ही विषयकी बातें करने और सुननेमें बड़ा मगन रहता है।

२. विनय

हे अपने ज्ञानके गर्वमें चूर रहनेवाले मनुष्य! तू है कौन ची
अरे! अपने ज्ञान जैसे गुणों पर तू क्यों शेखी मारता है?

ज्ञानी बननेकी पहली सीढ़ी यह है कि तू अपनेको अज्ञानी म
और यदि तू दूसरोंकी दृष्टिमें अपनेको मूर्ख न ठहराना चाहता हो,
अपनी मूर्खतामें ज्ञानी होनेकी गर्वको छोड़ दे।

जिस प्रकार एक सादी साड़ी ही किसी सुन्दरी स्त्रीका सर्वोत
अलंकार है, उसी प्रकार सद्व्यवहार ज्ञानका सबसे बड़ा भूषण है।

विनयशील मनुष्यके ज्ञानकी गन्ध भी दमक उठती है और
मूर्खोंके साथ यह बातचीत करता है उसमें उसकी भूलोंका दोर दोर
मालूम होता।

वह केवल अपने ही ज्ञान पर भरोसा नहीं रखता; बल्कि मि
परामर्श पर भी विचार करता है और उसके लाभका भागी होता है।

वह अपनी प्रशंसा सुननेसे मुह मोड़ लेता है और उस पर विश्व
नहीं करता। अपनी पूर्णताका ज्ञान होनेमें उसका नम्बर आखिरी होता

तो भी जिस प्रकार घूंघटसे किसी युवतीके मुखड़ेकी सुन्दरता
जाती है, उसी प्रकार विनयकी छायासे उसके सद्गुण भी भूषित होते

लेकिन उस घमण्डी आदमीको तो देख, जरा उस व्यर्थके अभिमानी
ओर तो देख, वह कैसे बढ़िया कपड़े पहनता है, किस तरह राजमार्ग
घूमता है, कैसे अगल-बगल झांकता ताकता है और लोगोंकी दृष्टिको अप
ओर खींचता है?

वह अपना सिर ऊंचा उठाकर गरीबोंको तुच्छ दृष्टिसे देखता है
अपनेसे छोटे लोगोंके साथ वह बुरी तरहसे पेश आता है और इसके बदले
जो लोग उससे श्रेष्ठ हैं वे उसके अभिमान और मूर्खताको गिरी नजरसे देखत
हैं, और उपहास करते हैं।

वह दूसरोंके मतको कोई चीज नहीं समझता। वह तो बस अपन
ही रायको सब कुछ समझता है और अन्तको चक्करमें पड़ जाता है।

वह अपनी कल्पना-शक्तिके अभिमानमें फूला ही नहीं समाता। बस,
दिन भर अपने ही विषयकी बातें करने और सुननेमें बड़ा मगन रहता है।

अुडानें भारता हुआ ठेठ भगवान भुवन-भास्करके तेज पर भी अपनी दृष्टिको स्थापित करता है।

रातको स्वप्नमें भी महान पुरुषोंके आदर्शोंको वह देखता है और दिनभर बड़े हर्षके साथ अुनका अनुसरण करता है।

वह बड़े बड़े मनसूबे बांधता है और बड़ी प्रसन्नतामें अुनको पूर्ण भी करता है। जिससे अुसकी कीर्ति दुनियाके चारों कोनोंमें छा जाती है।

परन्तु मत्सरी मनुष्यका हृदय वैर और कटुतासे भरा रहता है। अुसकी जबान तो बस जहर अुगलती है। अपने सहवासीके अुत्कर्षको देखकर वह बेचैन हो जाता है।

पश्चात्ताप करता हुआ वह अपनी झोंपड़ीमें बैठा रहता है। और जो दूसरोंका भला होता है, वह अुसे अपनी ही हानि मालूम होती है।

घृणा और मत्सर अुसके हृदयको नोंच-नोंचकर खाया करते हैं। और ...नके दिलको कभी चैन नहीं मिलता।

स्वयं अुसके हृदयमें भलाओीके प्रति प्रेम नहीं होता, अिसलिअे अुसके ...में यह विश्वास बना रहता है कि और लोग भी मेरी ही तरह हैं।

जो अुससे आगे बढ़ते हैं, अुन्हें वह न-कुछ समझनेका प्रयत्न करता है। ...के समस्त कार्योंको वह सबके सामने बड़े भद्दे रूपमें पेश करता है।

वह हमेशा दूसरोंके बुरे कामोंकी ताकमें रहता है, परन्तु मनुष्यका ...प अुसका पीछा नहीं छोड़ता और वह मकड़ीकी तरह खुद अपने ही ... जालमें फंस जाता है।

५. दूरदर्शिता

दूरन्देशीकी सीखको सुन, अुसकी सलाहों पर ध्यान दे और अुन्हें हृदयमें अंकित कर रख। अुसके सिद्धान्त सार्वभौमिक हैं और समस्त ... अुर्माके सहारे रहते हैं। ... मनुष्यकी पथदर्शिका और सहचरी है।

अपनी जबान पर लगा ..., अपने होठों पर पहरा बिठाल दे; ... वही तेरे ही मुखके ... दौलत तुझे अपनी शान्ति न खोना पड़े।

जो लोग बेचारे ... देखकर अुनका अुपहास करते हैं, अुन्हें ...न रहना चाहिये कि ... ही पगु न हो जाय। जो दूसरोंकी ... वर्णन बड़े ... करता है, अुसे स्वयं अपने ही छिद्रोंकी ...के साथ ... ।

अुसका मन अन्धकारमय हो जाता है। अुसके विचार कुण्ठित हो जाते हैं। वह ज्ञानकी लालसा तो लगाये रहता है, लेकिन अुसके लिअे अुद्योग नहीं कर पाता। वह बादाम तो खाना चाहता है, परतु अुसके छिलके फोड़नेसे दूर भागता है।

अुसके घरमें अव्यवस्थाका साम्राज्य रहता है; अुसके नौकर-चाकर फजूलखर्च और गुस्ताख-लापरवाह होते हैं और वह विनाशोन्मुख हो जाता है; वह अपनी आखो अुसे — विनाशको — देखता है, अपने कानों अुसका शब्द सुनता है, अुसके दुष्परिणामको समझता है और अुससे बचनेकी अिच्छा भी करता है; परतु निश्चयका पता नहीं। अन्तको विनाश, अेक तूफानकी तरह, अुस पर झपट पडता है और लज्जा और पश्चात्ताप श्मशान तक अुसका पीछा नहीं छोडते।

४. औीर्ष्या

यदि तेरी आत्मा प्रतिष्ठाकी प्यासी है, यदि तेरे कानोको प्रशसाके अुद्गारोंसे सुख होता हो, तो जिस धूलिसे — भौतिक पदार्थोंसे — तेरा पिण्ड बना है, अुससे अूपर अुठ और किसी अुच्च तथा प्रशसनीय वस्तुको अपना लक्ष्य बना।

जिस वट-वृक्षको देख, जिसकी शाखायें अब आकाश तक फैल गअी हैं। किसी दिन यह पृथ्वीके गर्भमें अेक छोटेसे बीजके रूपमें था।

जो कुछ व्यवसाय तू करता हो, अुसमें सर्वोच्च बननेकी कोशिश कर। सत्कार्यमें किसीको अपनेसे आगे न बढ़ने दे। अितना होते हुअे भी दूसरेकी योग्यता या गुणोंका द्वेष न कर; बल्कि स्वयं अपनी ही बुद्धिकी अुन्नति कर।

अपने प्रतिस्पर्धियोंको बुरे और नीच अुपायोंसे दबानेकी रीतिसे घृणा कर; बल्कि अुनसे श्रेष्ठ बनकर ही अपनेको अूचा अुठानेका प्रयत्न कर, जिससे तुझे अिस अुच्चताकी लडाअीमें यदि सफलता न मिले तो सम्मान अवश्य प्राप्त हो।

सात्विक औीर्ष्याके कारण मनुष्यकी वृत्ति अुच्च होती है। अुसे अपनी कीर्तिकी चाह लगी रहती है और बड़े आह्लादके साथ, अेक दौड़ाककी भाँति, वह अपना मार्गक्रमण करता है।

दबाये जाने पर भी वह तो, ताड़के पेड़की तरह, अूचा ही अुठता

अुडानें मारता हुआ ठेठ भगवान भुवन-भास्करके तेज पर भी अपनी दृष्टिको स्थापित करता है।

रातको स्वप्नमें भी महान पुरुषोंके आदर्शोंको वह देखता है और दिनभर बड़े हर्षके साथ अुनका अनुसरण करता है।

वह बड़े बड़े मनसूबे बांधता है और बडी प्रसन्नतासे अुनको पूर्ण भी करता है। जिससे अुसकी कीर्ति दुनियाके चारों कोनेंमें छा जाती है।

परन्तु मत्सरी मनुष्यका हृदय वैर और कटुतासे भरा रहता है। अुसकी जबान तो बस जहर अुगलती है। अपने सहवासीके अुत्कर्षको देखकर वह बेचैन हो जाता है।

पश्चात्ताप करता हुआ वह अपनी झोपडीमें बैठा रहता है। और जो दूसरोंका भला होता है, वह अुसे अपनी ही हानि मालूम होती है।

घृणा और मत्सर अुसके हृदयको नोच-नोचकर खाया करते हैं। और अुसके दिलको कभी चैन नही मिलता।

स्वयं अुसके हृदयमें भलाअीके प्रति प्रेम नही होता, अिसलिअे अुसके दिलमें यह विश्वास बना रहता है कि और लोग भी मेरी ही तरह हैं।

जो अुससे आगे बढ़ते हैं, अुन्हें वह न-कुछ समझनेका प्रयत्न करता है। अुनके समस्त कार्योंको वह सबके सामने बड़े भद्दे रूपमें पेश करता है।

वह हमेशा दूसरोंके बुरे कामोंकी ताकमें रहता है, परतु मनुष्यका अतिद्वेष अुसका पीछा नही छोडता और वह मकडीकी तरह खुद अपने ही बनाये जालमें फस जाता है।

५. दूरदर्शिता

दूरन्देशीकी सीखको सुन, अुसकी सलाहों पर ध्यान दे और अुन्हें अपने हृदयमें अंकित कर रख। अुसके सिद्धान्त सार्वभौमिक हैं और समस्त सद्‌गुण अुसीके सहारे रहते हैं। वह मनुष्यकी पथदर्शिका और सहचरी है।

अपनी जबान पर लगाम चढ़ा, अपने होंठों पर पहरा बिठाल दे; क्योंकि कहीं तेरे ही मुखके शब्दोंकी बदौलत तुझे अपनी शान्ति न खोना पड़े।

जो लोग बेचारे लूलो-लगडोंको देखकर अुनका अुपहास करते हैं, अुन्हें सावधान रहना चाहिये कि कहीं वे खुद ही पगु न हो जाय। जो दूसरोंकी दुर्बलताओंका वर्णन बड़े आनन्दके साथ करता है, अुसे स्वयं अपने ही छिद्रोंकी बात बड़े दुःखके साथ सुननी पड़ती है।

अधिक भयंकर कष्टोंका भी सामना करना पड़ता है; परन्तु नीतिके अवलम्बनसे मनुष्यकी रक्षा होती है।

सदाचारी मनुष्य समाजके लिये अेक आदर्श होता है। मान उनकी बदौलत गुणोंसे गुणों बढ़ जाता है— जब वह ठहराकर बातें करने लगता है, तब तो अुसके अपने गुणोंकी दीवानगी बन्द हो जाती है और बात-चीतका मजा किरकिरा हो जाता है।

अपने विषयमें कभी बड़ी डींग न हांक; क्योंकि जिसने तू जिसका होगा, न दूसरोंका मजाक भी अुड़ा, क्योंकि अैसा करना खतरनाक है।

कड़वी दुर्ग जिह्वामें विष समान है। जो अपनी जिह्वाको नहीं रोक सकता, वह मुसीबतमें फंसे बिना नहीं रह सकता।

अपनी स्थितिको देखकर चल, लेकिन अितना खर्च न कर जिसे तू सहारा न कर सकता हो। जिससे जवानीमें कुछ रकम जोड़ सकेगा, जो बुढ़ापेमें तुझे आराम पहुंचायेगी।

लोभ पापका मूल है, परन्तु मितव्यय हमारे सद्गुणोंका पालक है।

बस, तू अपने ही काममें ध्यान लगा। सारी दुनियाकी चिंता तू न कर। यह पागलपन है।

मनोरंजनका साज-सामान जुटानेमें मनमाने रुपये न अुड़ा। क्योंकि अुसको जुटानेमें जो कष्ट होते हैं, वे अुसके द्वारा प्राप्त होनेवाले सुखसे कहीं बढ़ कर होते हैं।

अपने अुत्कर्षको अितना अुन्मत्त न होने दे कि वह सावधानीकी ही आंखें फोड़ डाले और न प्रचुरताको अितना मुंह लगा कि वह मितव्ययका हाथ काटनेकी हिम्मत करने लगे। जो जीवनकी अनावश्यक वस्तुओंमें बहुत ज्यादा गर्क रहता है, अुसे जीवनकी आवश्यक वस्तुओंके लिअे जिन्दगी भर सिर धुनना पड़ता है।

दूसरोंके अनुभवोंसे तू अक्ल सीख। और अुनके दोषोंको देखकर अपनी गलतियोंको सुधार।

जब तक तू किसी मनुष्यको आजमा न ले, तब तक अुस पर विश्वास न रख, तो भी अकारण ही किसीका अविश्वास भी न कर; अैसा करना

परन्तु जब तू यह परख ले कि अमुक आदमी ओमानदार है, तो अुसे अपने हृदयमें, खजानेकी तरह, हिफाजतसे रख, अुसे अमूल्य रत्न समझ।

जो मनुष्य टकोंके लिअे अपनी जान देता है, अुसकी कृपाको ठोकर मार दे, अुसे अपने लिअे अेक फंदा समझ। याद रख, अुसके बंधनसे तू कभी छुटकारा न पा सकेगा।

कल जिसकी जरूरत होगी, अुसको आज ही काममें न ले; दूरदर्शितासे जिसके लिअे कुछ प्रबंध किया जा सकता है अथवा खबरदारीसे जिसका बचाव हो सकता है, अुसे भवितव्यताकी आशा पर मत छोड़।

तथापि दूरदर्शितासे भी अचूक सफलताकी आशा न कर; क्योंकि दिन नहीं जानता कि रात क्या कर दिखानेवाली है।

मूर्ख हमेशा ही अभागा नहीं होता, और न ज्ञानीको हमेशा ही सफलता मिलती है। तो भी मूर्खजनको कभी पूर्ण आनन्द नहीं मिला और न ज्ञानीको कभी पूर्ण सुख ही प्राप्त हुआ है।

६. धैर्य

अिस जगतमें जन्म धारण करनेवाले प्रत्येक मनुष्यको अपने जीवनमें सुख, दुःख, दुर्दैव, अभाव, कष्ट और हानिका थोड़ा-बहुत भाग मिले बिना नहीं रहता।

अिसलिअे, अे मुसीबतके पुतले! बेहतर है कि तू अपने मनके आसपास धैर्य और सहनशीलताकी किलेबंदी शीघ्र ही कर दे, जिससे तू अपने भाग्यमें बदी मुसीबतोंके दबावसे अपनी रक्षा निश्चयके साथ कर सके।

जिस प्रकार अूट रेगिस्तानमें परिश्रम, गरमी और भूख-प्यास सबको सहन करता हुआ बराबर आगे ही बढ़ता चला जाता है, शिथिल होकर बैठ नहीं जाता, अुसी प्रकार मनुष्यका धैर्य भी हर तरहकी मुसीबतके समय अुसे सहारा पहुंचाता है।

तेजस्वी मनुष्य भाग्यकी कुदृष्टिको कोअी चीज नहीं समझता। अुसकी आत्माकी महानताको कभी कोअी गिरी निगाहसे नहीं देख सकता।

वह अपने सुखको अुसके हास्य पर — अुसकी कृपा पर अवलंबित नहीं रहने देता। और, अिसीलिअे अुसके तिरस्कारसे वह भयभीत नहीं होता।

दृढ़तापूर्वक डटा रहता है और लहरोंको

पर्वतके शिखरकी तरह अुसका मस्तक अूचा अुठ जाता है, और दुर्दैवके ण अुसके चरणो तक ही पहुचकर रह जाते हैं।

सकटके समय हृदयकी दृढता अुसकी रक्षा करती है और मनकी रता अुसे सहारा देती है।

समर-भूमिमे प्रवेश करनेवाले वीर पुरुषकी तरह वह जीवनके सकटोका काबला करता है और विजय-श्रीको पाकर लौटता है।

जब दुर्दैव अुसे दबाने लगता है, तब अुसकी शान्ति अुसके बोझको ल्का करती है और अुसका निश्चय दुर्दैवको दबा देता है।

परंतु जो आदमी दुर्दैवसे डरकर अुसके सामने थर-थर कापने लगता अुसे लज्जित होना पड़ता है।

दरिद्रताके सामने दुम दबानेसे वह नीच लोगोकी श्रेणीमें आ जाता है र दब्बू बनकर अपमान सहन करके मानो वह विपत्तियोको निमंत्रण ता है।

जिस प्रकार हवाके झोकेसे घासके तिनके हिलने लगते हैं, अुसी प्रकार ुभकी छाया-मात्रसे वह कापने लगता है।

और प्रत्यक्ष सकटके समय तो वह हैरान हो जाता है और अूब जाता दुर्दैवके दिनोमें अुसका धीरज छूट जाता है और निराशा अुसकी आत्माको दबाती है।

७. संतोष

हे मनुष्य, तू अिस बातको कभी न भूल कि अुस अनादि अनन्त अीश्वरके न और विधानके ही द्वारा तेरा स्थान अिस मृत्युलोकमें नियुक्त हुआ है। तेरे अन्त करणका हाल जानता है। वह तेरी अिच्छाओंके नखरोंको भी ता है। परतु केवल दयावश होकर ही वह तेरी कुछ प्रार्थनायें कबूल करता है।

परतु, फिर भी, सारी अुचित अिच्छाओ और शुद्ध अन्त करणसे किये नेवाले सारे प्रयत्नोंके लिये अुनकी अुपकार-बुद्धिने अुन बातोंके स्वभावमें —धर्ममें ही—सफलताकी सभावना रख छोड़ी है।

तुझे जो बेचैनी मालूम होती है, तथा जिस बदनसीबीके लिये तू रो है, अुनके मूलके अुद्गम पर ध्यान दे और अपनी मूर्खता, अपने घमण्ड

अीश्वरी योजना पर फिजूल नाक-भौंह न चढ़ा, वरन् अपने ही हृदयको शुद्ध कर। अपने मनमें यह कभी न कह कि यदि मेरे पास धन होता, या सत्ता होती, या अवकाश होता तो मैं सुखी होता। क्योंकि, जान रख, ये सब चीजें अपने साथ साथ अपने मालिकोंके लिअे अपनी विशेष विशेष असुविधाओंको भी ले आती हैं।

गरीब आदमी धनवानोंकी चिंताओं और क्लेशोंकी कल्पना नहीं कर पाता, हुकूमतकी कठिनाअियों और झंझटोंका अनुभव नहीं करता और न अुसे फुरसतकी थकावटका ही ज्ञान होता है। यही कारण है, जो वह अपने भाग्य पर हमेशा अफसोस किया करता है।

परन्तु किसी मनुष्यके अुस सुखको, जो हमें अूपर ही अूपर दिखलाअी पड़ता है, देखकर अुसकी अीर्ष्या न कर, क्योंकि अुसके दिलके दुःखोंका तुझे पता नहीं है।

थोड़ेमें संतुष्ट हो रहना बड़ी भारी बुद्धिमानी है। जो मनुष्य अपनी संपत्तिको बढ़ाता है, वह मानो अपनी चिन्ताओंको बढ़ाता है। परन्तु संतोष मानो अेक गुप्त धन है। चिन्ता अुसका पता कभी नहीं पा सकती।

तो भी, यदि तू संपत्तिके मोहमें अितना नहीं फंस गया है कि जिससे तेरे न्याय, या संयम, या दयालुता या विनय पर पाला पड़ गया हो, तो स्वयं लक्ष्मी भी तुझे सुखसे वंचित नहीं कर सकती।

परन्तु अिससे तुझे यह सबक लेना चाहिये कि शुद्ध और निर्मल आनन्दका प्याला पीना मर्त्य मनुष्यके भाग्यमें किसी तरह नहीं बदा है।

अीश्वरने सद्गुण रूपी अेक दौड़ बनाअी है। अुसे पूरा करना मनुष्यका कर्त्तव्य है; और सुख अुसका लक्ष्य है। अुसके पास मनुष्य तब तक नहीं पहुंचता, जब तक वह दौड़ पूरी न कर ले — मंजिल तय न कर ले और अीश्वरके दरबारमें विजयमाला न पहन ले।

८. संयम

अिस मृत्युलोकमें सुख प्राप्त करनेका सबसे नजदीकका रास्ता है अीश्वरदत्त बुद्धि और स्वास्थ्यका अुपभोग करना।

ये प्रसाद यदि तुझे प्राप्त हैं और बुढ़ापे तक तूने अुन्हें सुरक्षित रखा है, तो ये तुझे विलासिताके मार्गसे बचायेंगे और अुसके लालचसे दूर रखेंगे।

जब विलासिता अपनी बढ़िया-बढ़िया प्रलोभन-सामग्री और स्वादिष्ट पदार्थ सामने रखने लगती है, जब वह मधुर मुसकानके साथ तेरी ओर निहारती है और तुझे आनन्द-भोगमें मग्न रहनेके लिअे अुकसाती है, बस तभी समझ ले कि खतरेका समय आ पहुचा है और तर्कको अुसके पहरे पर मुस्तैदीके साथ खड़ा कर दे।

क्योंकि यदि तूने अुसकी—बुद्धिके प्रतिपक्षीकी—बातों पर ध्यान दिया, तो समझ ले कि धोखा हुआ और तेरा घात हो जायगा।

जिस आनन्दका वह अभिवचन देती है, अुसका अन्त अुन्माद और दुःखमें होता है और अुसके सुख-साधन रोगोंके और अन्तमें मृत्युके दरवाजे ले जाते हैं।

विलासिताकी दावतको देख, अुसके निमंत्रित मेहमानों पर नजर फेंक और अुन लोगोंको भी निहार जो अुसकी मुसकान पर मुग्ध हो गये हैं तथा अुसके मोहजालमें फस गये हैं।

क्या वे दुर्बल नही दिखाअी देते? क्या वे रोगी नही हैं? क्या वे निर्वीर्य नही हैं?

अुनके आनन्दोपभोगका वह अल्प समय भी अन्तको बीत जाता है और अुसके बाद खिन्नता और कष्टके अूबा देनेवाले दिन आते हैं। देख तो, अिस विलासिताने अुनकी क्षुधाको किस तरह भ्रष्ट और अरुचिकर बना दिया है, जिससे अुन्हें अब अुसके बढ़ियासे बढ़िया पक्वान्नकी जरा भी अिच्छा नही होती। वे खुद अपने आराध्य-देवके ही शिकार हो गये हैं। यह तो अेक अीश्वर-नियुक्त न्याय और स्वाभाविक परिणाम है, जो अीश्वरके प्रसादका दुरुपयोग करनेवालोंको दण्डके रूपमें मिलता है।

परतु वह सुन्दर रूपवाली कौन है, जो बड़ी शानके साथ कदम अुठाती हुअी सामनेके मैदानमें अठखेलिया कर रही है?

अुसके गालो पर गुलाबी छटा छा रही है, अुसके श्वासोच्छ्वासमें मानों प्रभातकालकी मधुरता भरी हुअी है, सरलता और विनयसे युक्त आह्लाद अुसकी आखोंमें चमक रहा है और आनन्दमें मग्न होकर वह मीठी तानें छेड़ रही है।

अुसका नाम है आरोग्य-सुन्दरी। वह व्यायामकी पुत्री है, जिसने अुसे संयम-शक्तिके द्वारा जन्म दिया है। पौरुष और तेज अुसके पुत्र हैं। वे हवामें रहते हैं।

वे वीर, कर्तृत्ववान और प्रसन्न-चित्त हैं। अुनकी देहके समस्त सद्-गुण और सौन्दर्य अुनमें वास करते हैं।

अुत्साह अुनकी नसोंको सचालित करता है। बल अुनकी हड्डियोंमें निवास करता है और परिश्रम अुनके लिअे दिनभर आनन्दका साधन रहता है।

अुनके निरालसी अुद्योगशीलतासे अुनकी क्षुधा अुद्दीप्त होती है और अुनकी माताका परोसा भोजन अुनको तरोताजा बनाता है।

मनोविकारोंके साथ युद्ध करनेमें अुन्हें आनन्द आता है और बुरी आदतोंको जीतनेमें वे अपना गौरव मानते हैं।

अुनका सुख परिमित होता है और अिसीलिअे वह टिक पाता है। अुनकी विश्रान्ति थोड़ी लेकिन गहरी और शान्तिकर होती है।

अुनका रक्त शुद्ध होता है और चित्त प्रशान्त। वैद्य तो अुनके घरका रास्ता जानते ही नहीं।

परन्तु अफसोस! मनुष्य-सन्तानके सदा सुर्ग-अुन्नतका पता नहीं और न निदमवता अुनके दरवाजे पाअी जाती है।

देख, बाहरसे तो अुसके लिअे नित-नये स्वादोंका रास्ता खुला रहता है और भीतर अेक विश्वासघातिनी अुसका धावा करनेके लिअे छिपी बैठी है।

अुसके स्वास्थ्य, अुसके बल, अुसकी सदवृत्ता और अुसकी बाल्य-सरलता अुसके हृदयमें विपरीत अभिरुचि जाग्रत करती है।

वह अपने लताकुंजमें खड़ी होकर अपने मोह-जालको फैलाती है और अुसके मनको आकर्षित कर लेती है। वह कोमलांगी है। अुसकी देह-लता लचीली और चित्ताकर्षक है। अुसकी आंखोंमें कामुकता छिटकती है और मोह तो अुसके हृदयमें बैठा ही रहता है। वह अपनी अंगुलीसे अुन्हें संकेत करती है और अपने कटाक्ष-बाणसे अुन्हें वश कर लेती है। फिर मीठी मीठी बातें करके अुन्हें ठगनेका प्रयत्न करती है।

अरे! अुसके मोह-पाशसे दूर रह। अुसके जादूभरे शब्दोंको न सुन, अपने कान बंद कर ले। यदि तू अुसकी अधमुंदी आंखों पर मुग्ध हो गया, यदि अुसके मृदुल शब्दोंके सुननेमें तूने मन लगाया, यदि अुसके बाहुपाशमें फंस गया, तो समझ ले कि वह तुझे सदाके लिअे अपना गुलाम बना लेगी।

लज्जा, रोग, अभाव, चिन्ता और पश्चात्ताप हमेशा अुसके पीछे—अुसके साथ—रहते हैं।

जहा तू अुसके फदेमें पडा कि बस काम-चेष्टाओंसे निर्बल, भोग-विलासमें अतिलिप्त और आलस्यसे शिथिल हुआी शक्ति तेरे शरीरका साथ छोड़ देगी और स्वास्थ्य तेरी प्रकृतिसे नमस्कार कर लेगा। तेरी आयु क्षीण होती जायगी और तेरा वह अल्पजीवन भी गौरव-हीन होगा। तेरे शोककी सीमा न रहेगी और अितना होने पर भी तुझे किसीकी दयाके दर्शन न होंगे।

२

मनोधर्म

१. आशा और भय

आशाके अभिवचन कमलकी कलियोंसे भी ज्यादा मीठे, ज्यादा प्यारे और बडी बडी अपेक्षायें अुत्पन्न करनेवाले होते हैं। परतु भयकी तो धम-किया भी हृदयको कम्पित कर देती है।

तथापि देखना, आशा तुझे मोहित न करे और न भय सत्कार्योंसे रोके। अिससे तुझे समस्त प्रसगोका सामना समान चित्तसे करनेकी शक्ति प्राप्त होगी।

मृत्युका भी डर नेक आदमीको भयभीत नही कर सकता। जो कभी बुरा काम करता ही नही, अुसे डर किस बातका?

अपने समस्त अगीकृत कार्योमे अुचित विश्वासके द्वारा अपने प्रयत्नोंमें प्राणोका सचार कर। यदि तू सफलतासे निराश हो गया हो, तो तुझे कभी सफलता नही मिल सकती।

व्यर्थके भयोंसे अपनी आत्माको दहशत न खाने दे और न अपने दिलको कल्पनाके भूतोंसे टूटने ही दे।

विपत्तिका अुत्पत्तिस्थान है भय। परतु जो मनुष्य आशावान है, वह अपनी सहायता आप ही करता है।

जब कोअी शुतुर्मुर्गका पीछा करता है, तब वह अपने सिरको छिपा लेता है। परतु अपने तनकी सारी सुध भूल जाता है। अिसी प्रकार भय अुसे सकटके मुखके सन्मुख ला रखता है।

यदि तू किसी कामको असंभव समझता हो, तो तेरे मनकी निराशा अुसे सचमुच ही वैसा बना देगी। परन्तु जो मनुष्य निश्चयपूर्वक दीर्घ प्रयत्न लगातार करता रहता है, वह समस्त कठिनाअियोंको पार कर जाता है।

स्पर्धाकी आशा केवल मूर्खोंके ही हृदयको आश्वासन देती है। परन्तु जो समझदार है, वे अुसके पीछे नहीं पड़ते।

तर्कको अपनी समस्त अिच्छाओंके आगे चलने दे और अुन्हें सम्भवनीयताकी सीमासे आगे न बढ़ने दे। जिससे तुझे अपने स्वीकृत कार्यमें सफलता मिलेगी और तेरा हृदय कभी निराशासे खिन्न न होगा।

२. हर्ष और विषाद

अपनी विनोद-वृत्तिको अितना न बढ़ा कि जिससे तेरा मन अुन्मत्त हो जाय, न दुःखको अितना प्रबल होने दे कि जिससे तेरा हृदय दब जाय। अिस संसारमें न तो कोअी अच्छी बात अितनी हर्षदायक है और न बुरी बात अितनी कष्टदायक है, जिससे तू समान वृत्तिकी तराजू पर या तो बहुत ही अूचा अुठ जाय या बिल्कुल नीचे — रसातलको चला जाय।

देख, वह सामने हर्षका प्रासाद खड़ा है। अुसके बाहरकी तरफ रंग-बिरंगी चित्रकारी की हुअी है। जिससे वह बड़ा प्रसन्न दिखाअी देता है। अुसमें से आनन्द और हर्षकी जो ध्वनियां निरन्तर आ रही हैं, अुनसे तू अिस बातको जान सकता है।

गृह-स्वामिनी गाती और हंसती हुअी दरवाजे पर खड़ी है और जो अुधरसे गुजरते हैं अुन्हें जोरसे आवाज लगाती है।

वह अुन्हें बुलाती है कि आओ, अन्दर आओ और जीवनके आनन्दका आस्वादन करो। वह अुनसे कहती है कि यह आनन्द सिवा मेरे घरके और कहीं मिलनेका नहीं।

परन्तु तू अुसके दरवाजेमें पैर न रख; और न अुन लोगोंसे, जो अुसके घरमें बराबर आते-जाते रहते हैं, कुछ संपर्क ही रख।

वे अपनेको हर्षके पुत्र अर्थात् 'आनन्दी' कहते हैं। वे निरन्तर हंसते, खेलते और चैन करते हैं। परन्तु अुनके समस्त कार्योंमें अुन्मत्तता और मूर्खता भरी रहती है।

दुष्टताके साथ अुनका घनिष्ठ सबध है और अुनके कार्य अुन्हें पापके रास्ते ले जाते हैं। सकट और भय अुनको चारों ओरसे घेर लेते है और सर्वनाशकी खाओी अुनके पैरों तले मुह फैलाये रहती है।

अब अुस दूसरी दिशाकी ओर आख अुठा और अुस खाओीको देख, जो कि पेडोंसे ढकी हुओी है और मनुष्यकी दृष्टिसे परे है। वह दु.खका निवास-स्थान है।

अुस घरकी मालकिनको देख। अुसका हृदय नि.श्वासोंसे धक् धक् किया करता है, अुसका मुख शोक-सताप और हाहाकारसे भरा रहता है। अुसे मनुष्यकी मुसीबतोंकी चर्चा करनेमें ही आनन्द आता है।

वह जीवनके साधारण योगायोगको देख कर ही रोती है। मनुष्यकी दुर्बलता और दुष्टता अुसके ओठोंका विषय होता है।

अुसकी दृष्टिसे सारी प्रकृति बुराअियोंसे भरी हुओी है। जिस वस्तुको वह देखती है वही अुसे अपने चित्तकी अुदासीसे छाओी हुओी मालूम होती है और दु खदर्दकी पुकारोंसे अुसका घर दिनरात शोकाकुल रहता है।

अुसकी झोपडीके नजदीक न जा। अुसकी सास सक्रामक है। वह अुन फलोंको झुलसा देगी और फूलोंको कुम्हला देगी, जो जीवनके अुपवनको रमणीय बनाते और भूषित करते हैं।

पूर्वोक्त आनन्दाश्रमसे बचते समय कही अैसा न हो कि तेरे पैर तुझे विषादके महलके आसपास भटका कर ले जाय। अतअेव सावधानीके साथ मध्यम-मार्गमे चलनेका सतत अुद्योग कर। वह तुझे अेक सुगम अुतारसे शांति-देवीके कुजमे पहुचा देगा।

वहा शाति निवास करती है; सुरक्षितता और सतोष भी अुसीके पास रहते हैं। वह प्रसन्न तो रहती है, परतु विलासिनी नही। वह गभीर तो है, परतु शोकाकुल नही। यह जीवनके हर्ष और विषादको स्थिर और समान दृष्टिसे देखती है।

अिस शातिदेवीके कुंजसे, जैसे कि किसी अूची जगहसे, तू अुन लोगोंकी मूर्खता और मुसीबतको देख पावेगा जो या तो अपने हृदयकी विलासिताके अनुगामी होकर चैनकी बसी बजानेवाले और रगीले-छबीले सहचरोंके साथ रहते हैं या खिन्नता और अुदासीके शिकार हो कर मानव-जीवनके कष्टों और [illegible]। रोना दिनरात रोया करते हैं।

अुनको देखकर तेरे हृदयमें दया अुपजेगी और अुनके मार्गकी भूले तेरे पैरोंको अिधर-अुधर भटकनेसे रोकेंगी।

३. क्रोध

जिस प्रकार बवण्डर अपने झकोरसे पेडोंको चीरता-फाडता हुआ प्रकृतिकी आकृति बिगाड़ देता है या जिस तरह भूकम्प अपने क्षोभसे बड़े बड़े नगरोंको अुलट-पुलट देता है, अुसी तरह क्रोधी मनुष्यका क्रोधावेग अपने आसपास अनेक नुकसान अुत्पन्न कर लेता है, सकट और विनाश तो अुसके सिर पर मडराया ही करते हैं।

परन्तु तू स्वय अपनी दुर्बलताओं पर ध्यान दे और अुन्हें भूल, जिससे तू दूसरेको क्षमा कर सके।

अपनेको क्रोधके आवेगके वश न होने दे, अैसा करना या तो अपने ही हृदयको चोट पहुचानेके लिअे या अपने मित्रों तथा स्वजनोंका घात करनेके लिअे तलवार खीचना है।

यदि तू थोडेसे भी क्रोधावेगको धीरजके साथ दबा देगा, तो तेरा यह कार्य बुद्धिमत्तापूर्ण समझा जायगा, और यदि तू अुनको अपने ध्यानसे ही निकाल देगा, तो तेरा हृदय कभी तेरी भर्त्सना न करेगा।

क्या तू नही देखता कि क्रोधी मनुष्य विवेकहीन हो जाता है? अत-अेव जब तक तेरा चित्त शान्त और स्थिर है, दूसरेके क्रोधको देख कर अुससे शिक्षा ग्रहण कर।

क्रोधवश होकर कोअी काम न कर। अरे, समुद्रमें तूफानको अुठता हुआ देखकर भी अपनी डोंगी अुसमें क्यों छोडता है?

यदि अपने क्रोधको वशमें करना तेरे लिअे असाध्य हो, तो कमसे कम अुसे रोक तो जरूर ही ले। यह समझदारी है। बेहतर तो यह है कि तू पहलेसे ही अपनेको क्रोधके पजेमे फसानेवाले समस्त अवसरोंसे बचा ले, पर अगर वे अवसर अुपस्थित हो ही जाय, तो तू अुनसे अपनी रक्षा जरूर कर ले।

अपमानकारक भाषणोंसे मूर्खको तो क्रोध आ जाता है, परन्तु समझ-दार आदमी हसकर अुनकी अुपेक्षा करता है।

प्रतिहिंसाको अपने हृदयमें स्थान न दे। वह तेरे हृदयको विदीर्ण कर डालेगी और अुसकी सत्प्रवृत्तियोंको कुरूप कर देगी।

अपनी हानिका बदला लेनेकी अपेक्षा सदा अुसके लिअे क्षमा करनेको तैयार रह। जो बदला लेनेका मौका ताकता रहता है, वह मानो अपने ही लिअे कुआ खोदनेका अिन्तजार करता है—अपने ही हाथोंसे अपने सिर पर आफत ढहाना चाहता है।

क्रोधी मनुष्यको विनयपूर्वक अुत्तर देना आग पर पानी डालनेकी तरह है। अिससे क्रोधकी आच कम होती है और वह शत्रुसे मित्र हो जाता है।

सोच तो कि क्रोध करनेके योग्य कितनी चीजें है? और तुझे यह जानकर आश्चर्य होगा कि सिर्फ मूर्खजन ही क्रोध करते हैं।

क्रोधका आरभ या तो मूर्खतासे या दुर्बलतासे होता है; किन्तु याद रख, और अच्छी तरह निश्चय रख, कि पश्चात्तापके सिवा दूसरी तरह अिसका अंत बहुत कम होता है।

लज्जा मूर्खताके पीछे पीछे चलती है और क्रोध पश्चात्तापके पीछे हाथ जोड़कर खड़ा रहता है।

४. दया

वसन्त अपने करोसे जिस प्रकार पुष्प और परागको पृथ्वी-पटल पर फैलाता है, जिस प्रकार मेघ जलसिंचन करके शस्यके वैभवको पूर्णता पर पहुंचाता है, अुसी प्रकार दयाका मन्द हास्य दुर्भाग्यकी सन्तानो पर मागल्यकी वृष्टि करता है।

जो दूसरेके साथ दया दिखाता है, वह मानो स्वय अपनेको दयाका अधिकारी बनाता है। परंतु जिसका हृदय दयाशून्य है, वह मानो स्वयं ही दयाके योग्य नही है।

मेमनेके मिमियाने पर कसाअीका हृदय द्रवित नही होता। अुसी प्रकार निर्दयका हृदय (दूसरोके) कष्टोको देखकर द्रवित नही होता।

परतु करुण-हृदय मनुष्यके अश्रुकण वसन्तके हृदय-पटल पर पाटल-पुष्पसे बरसनेवाले हिमबिन्दुकी अपेक्षा भी अधिक सुहावने होते हैं।

अिसलिअे तू गरीबोंकी पुकार सुननेसे कान बन्द न कर और न निर्मल-हृदय मनुष्योकी मुसीबतको देखकर अपने हृदयको कठोर बना।

जब कोअी अनाथ तेरी शरण आवे, जब कोअी कातर-हृदया विधवा ... गिराती हुअी तुझसे सहायताके लिअे अनुरोध करे, तो अुसके कष्टो

पर दया दिखा और जिनका कोअी आश्रयदाता नही है, अुनकी सहायताके लिअे तू अपना हाथ बढा।

जब तुझे कोअी अैसा वस्त्रहीन दीन-भिखारी सडको पर भटकता हुआ मिले, जो जाडेसे ठिठुर रहा हो और जिसके घरबारका ठिकाना न हो, तब तू अुदारतापूर्वक अपना हृदय अुसके लिअे खोल दे, और दानके हाथ फैला कर मृत्युसे अुसकी रक्षा कर। अिससे स्वय तेरी आत्माको भी शाति मिलेगी।

जब कि कोअी गरीब आदमी बीमार होकर बिछौने पर कराह रहा हो, जब कोअी अभागा पुरुष कैदखानेकी यत्रणाओसे त्रस्त हो रहा हो, या कोअी सफेद बालवाला बूढा आदमी अपनी कमजोर आखोसे तेरी दयाके लिअे तेरी ओर देखता हो, तब तू किस प्रकार अुनकी जरूरतोका खयाल न करते हुअे — अुनके दु खोको अनुभव न करते हुअे अतिशय सुखोपभोगमें मग्न रह सकता है ?

५. वासना और प्रेम

सावधान रह ! हे युवक, विलासिताके जादूसे सावधान रह ! कही कोअी कुलटा तुझे, अपनी विषय-तृप्तिके लिअे, मोहजालमें न फसा ले।

कामान्धतासे मनुष्य अपने शुभ साध्यसे भी हाथ धो बैठता है। अुसके क्षोभसे अन्धा होकर वह विनाश-कालको अलबत्ता अपने नजदीक बुला लेता है।

अिसलिअे अुसके मीठे प्रलोभनो पर अपने हृदयको हाथसे न जाने दे और न अपनी आत्माको अुसके जादूभरे मोहका गुलाम होने दे।

आरोग्यका निर्झर, जिससे सुखकी सरिताको जीवन प्राप्त होता है, जल्द ही सूख जायगा और आनन्दका प्रत्येक स्रोत बन्द हो जायगा।

बुढापा तेरे जीवनके आरभ-कालमें ही तुझ पर सवारी कर देगा, तेरा जीवनसूर्य अपने अुदयकालमें ही अस्तमान हो जायगा।

परतु जब सद्गुण और लज्जा किसी सुन्दरीकी मोहकताको बढ़ाते हैं, तब अुसकी आभा आकाशस्थ ज्योतियोंसे भी अधिक देदीप्यमान होती है, और अुसकी शक्तिके प्रभावको रोकना निष्फल है।

अुसके अुरोजका विकास कुमुदिनीसे भी बढ़ जाता है; अुसकी मुसकराहट कमलिनीसे भी अधिक रमणीय होती है।

अुसके नेत्रोंका भोलापन हरिणकी आखोकी तरह है। अुसका हृदय सादगी और सत्यका निवास-स्थान है।

अुसके मुखका चुम्बन मधुसे भी अधिक मधुर होता है और अुसके मु
सुगंधका श्वासोच्छ्वास निकलता है।

अैसे मृदुल प्रेमके लिअे अपने हृदयके द्वारको बन्द न कर। अुस
पवित्र और अुज्ज्वल ज्योति तेरे हृदयको अुच्च बनावेगी और अुसे अै
मुलायम कर देगी कि अुस पर सच्चे और शुद्ध प्रेमके चिह्न अंकित हो जा

३

रमणी

दूरदर्शिताके अुपदेशको, हे प्रेमकी सुन्दर पुत्री! सुन और सत
अनुशासनको अपने हृदयपट पर अंकित कर, जिससे तेरे अन्तःकरणका सौं
तेरे वदनकी कान्तिको बढा दे और कमलके सदृश तेरी मनोमोहकता, प्र
ल्लताके मुरझा जाने पर भी, अपनी मधुरताको ज्योका त्यो कायम रखे।

अपने यौवनके वसन्त-कालमे, अपने वैभवके प्रभात-कालमें, जब
पुरुषोकी आखे बडे आह्लादके साथ तुझे घूरती हैं और प्रकृति अुन
चितवनका रहस्य तेरे कानोमें कहती है, ओह! अुनके फुसलानेवाले शब्दों
सावधानीके साथ सुन। अपने हृदयकी रक्षा अच्छी तरह कर और अुनके मृदु
आग्रह पर ध्यान न दे।

याद रख कि तू पुरुषकी विवेकशील सहचरी बनाअी गअी है, अुसके
विकारोकी गुलाम नही। तेरे अस्तित्वकी अितिश्री केवल अुसकी निस्सार
वासनाओकी तृप्तिमे नही है; बल्कि अुसके जीवनकी कठिनाअियोमें सहायता
देनेमे, अपनी कोमलतासे अुसे संतोष देनेमे और मृदुल प्रेमभावसे अुसकी
चिन्तायें मिटानेमें है।

वह कौन देवी है जो मनुष्यके हृदय पर विजय प्राप्त करती है, जो
अुसे प्रेमके पथमे खीच लाती है और अुसके हृदय पर शासन करती है?

देख, वह सामने चल रही है। अुसकी चालमे कुमारावस्थाका माधुर्य
भरा हुआ है। अुसका अंतःकरण निर्दोष है और अुसके नेत्रोमें विनयशीलता
झलक रही है।

अुसके हाथ काम करनेको अुत्सुक हैं, अुसके पाव दूर दौड़नेमें प्रसन्न
नही है।

वह स्वच्छ वस्त्र पहने है। वह सयमसे आहार करती है। नम्रता और सौम्यता अुसके सिर पर वैभवके मुकुटकी तरह शोभित है।

अुसकी जिह्वा पर सगीतका वास है। अुसके अधरोंमें मधुकी मधुरता टपकती है।

अुसके समस्त शब्दोंमें शिष्टता भरी रहती है और अुसके अुत्तरोंमें नम्रता और सत्यता।

विनम्रता और आज्ञापालन अुसके जीवनके पाठ है, और शान्ति और सुख अुसके पुरस्कार।

दूरदृष्टि अुसकी अर्दलीमें चलती है और सद्गुण अुसके दाहिनी ओर।

अुसकी आखोंमें कोमलता और प्रेम बरसता है, परन्तु विवेक अपने राजदड-सहित अुसकी भौहों पर वास करता है।

अुसके सामने विषयी मनुष्यकी जिह्वा मूक हो जाती है और अुसके सद्गुणकी धाकसे अुसका मुह बन्द हो जाता है।

जब कोअी किसीकी निन्दा कर रहा हो और अुसकी सहवासिनीके चाल-चलनकी चर्चा हो रही हो, अुस समय अुदारता और सौजन्य अुसके मुहको बन्द कर रखते है और स्वच्छताकी अुगली अुसके अधरों पर आ बैठती है।

अुसका हृदय नेकीका घर है। अिसलिअे वह दूसरोंसे बदीकी आशका नही करती।

सुखी होगा वह पुरुष जो अुसे अर्धांगिनी बनायगा और सुखी होगा वह बालक जो अुसे अपनी माता कहेगा।

अुसके गृह-स्वामिनी होते ही शान्ति छा जाती है। वह विचारपूर्वक आदेश करती है और अुसके पालन होनेमें देर नही लगती।

वह प्रातःकाल अुठती है, कामकाजका विचार करती है और प्रत्येकको अुसके योग्य काम बताती है।

अपने परिवारकी चिन्तामें अुसे पूरा आनन्द आता है। केवल अुसीका वह चिन्तन करती है और अुसके सदनमें मितव्ययके साथ शोभा दिखाअी पड़ती है।

अुसकी व्यवस्थामें दिखाअी देनेवाली दूरदर्शिता अुसके पतिके सम्मान आदर-की वस्तु है और अुसकी प्रशसाको सुनकर अुसे मन ही मन आनन्द होता है।

वह अपने बालकोंके मन पर ज्ञानका सस्कार करती है और अपने ही नेक अुदाहरणोंके द्वारा अुनके आचारको अच्छे सांचेमें ढालती है।

तू अपना मुह मोड ले, अुमके रास्तेसे अपने पाव हटा ले और काल्पनिक प्रलोभनोंके मोहजालमें अपनी आत्माको न फसने दे।

परन्तु यदि अुत्तम शिष्टाचारमें युक्त सहृदयता अुसमें दिखाअी दे, यदि अुमका मन अपनी रुचिके अनुरूप गुणोसे युक्त मालूम पड़े, तो अुसको अपने घर ले जा, वह तेरी सखी, तेरे जीवनकी सहचरी और तेरे हृदयकी देवी होनेके योग्य है।

अुसे तू अीश्वर-दत्त प्रसाद समझ कर रख। अपने सदय व्यवहारके द्वारा तू अपनेको अुसके हृदयका प्रेम-पात्र बना।

वह तेरी गृह-स्वामिनी है। अिसलिअे अुसके साथ आदरका व्यवहार कर, जिससे तेरे नौकर-चाकर भी अुसकी आज्ञाका पालन करे।

अकारण ही अुमकी प्रवृत्तियोंका विरोध न कर। वह तेरी चिन्ताओंकी हिस्सेदार है। तू अुसे भी अपने सुखका साथी बना।

अुसके अपराध अुसे सौम्यतासे जतला दे। सख्ती करके जबरदस्ती अुसे अपनी आज्ञापालक न बना।

अपने रहस्यो — गुप्त बातो — के विषयमें अुमके हृदय पर विश्वास रख। वह शुद्ध अन्त करणसे सलाह देती है, तुझे धोखा न होगा।

अुसकी शय्याके प्रति प्रामाणिक रह — अेकपत्नी-व्रत धारण कर; क्योंकि वह तेरे बालकोंकी माता है।

जब कष्टों और रोगोंका आक्रमण अुस पर हो, अपनी दया-मायासे अुसके दु.खोंको हलका कर। दया और प्रेमसे भरी दृष्टिका अेक ही पात तुसके दु खोंको शान्त और रोगको हलका कर देगा तथा दस वैद्योंको अपेक्षा अधिक कारगर होगा।

अुसके स्त्रीत्वकी कोमलता और अुमके शरीरकी सुकुमारता पर विचार कर और अुसकी दुर्बलताओंके प्रति कठोरताका अवलम्बन न कर, बल्कि स्वय अपनी अपूर्णताका स्मरण कर।

२. पिता

तू, हे पिता, अपनेको सौंपे गये कार्यके महत्त्वको सोच। जिन प्राणियोंको तूने जन्म दिया है, तेरा कर्तव्य है कि अुनका भरण-पोषण कर।

तेरे अिन प्राणरूप बालकोंका तेरे लिअे आशीर्वाद या शापरूप होना, समाजके लिअे अुपयोगी या निरुपयोगी व्यक्ति होना, तुझी पर अवलंबित है।

लड़कपनमें ही अपदेशों द्वारा अनको सुसंस्कृत बना और अनके मन सत्यकी दिशामें दीक्षित कर।

अनकी प्रवृत्तिकी गति पर नजर रख। जवानीमें ही अपने पुत्रको सन्म दिखा। अुसके बढ़नेके साथ कहीं बुरी आदतें अुसमें जड़ न जमाने पावें।

अिससे वह पहाड़ों पर अुगनेवाले देवदारुके वृक्षोंकी तरह अुन्न पायेगा, वनके वृक्षोंकी अपेक्षा अुसका मस्तक अूंचा दिखाओी देगा।

दुष्ट पुत्रका होना पिताके लिअे कलंककी बात है। परन्तु जो पु सत्कार्य करता है, वह अपने पिताके बुढ़ापेमें अुसकी प्रतिष्ठाको बढ़ाता है

क्षेत्र तेरा अपना है, अैसा न हो कि अुसकी जुताओीकी तरफ तू ध्या न दे। जैसा बीज तू बोवेगा, वैसा ही फल तुझे मिलेगा।

अुसे आज्ञाका पालन करना सिखा। वह तेरा गुणगान करेगा। अुसे विनय-शीलता सिखा, अुसे लज्जित होनेका मौका न आवेगा।

अुसे कृतज्ञताकी शिक्षा दे; वह लाभ प्राप्त करेगा। अुसे दानका पाठ पढ़ा; वह प्रेमकी प्राप्ति करेगा।

अुसे संयम — व्यसनहीनता — का मंत्र दे; वह आरोग्यको पावेगा। अुसे दूरदर्शिताकी दीक्षा दे; सम्पत्ति अुसके पास आ जायगी।

अुसे न्यायका पाठ सिखा; संसार अुसका आदर करेगा। अुसे सच्चाओ सिखा; अुसका हृदय अुसे नहीं कोसेगा।

अुसे अध्यवसायका पाठ पढ़ा; अुसकी सम्पत्तिकी वृद्धि होगी। अुसे अुपकारशीलताकी शिक्षा दे, अुसका अन्तःकरण अुच्च-अुदात्त हो जायगा।

अुसे विज्ञानकी शिक्षा दे; अुसका जीवन अुपयोगी होगा। अुसे धर्मका ज्ञान दे; अुसकी मृत्यु सुख-पूर्वक होगी।

३. पुत्र

ओीश्वरके अुत्पन्न किये प्राणियोंसे, हे मनुष्य, अक्ल सीख। और अुनकी शिक्षाओंको तू अपने आचरणमें ला।

हे मेरे पुत्र, मरुस्थलमें जा। सारस-युवकको देख। अुसे तेरे हृदयसे बातें करने दे। वह अपने वृद्ध पिताको अपने परों पर बिठाता है, अुन्हे सुरक्षित स्थान पर अुतारता है और अुन्हें दाना-पानी पहुंचाता है।

बालकका भक्ति-भाव पूर्वसे दिखाओ जानेवाली फारिसकी धूपसे भी अधिक मधुर है — हां, पश्चिमी दिशासे अुड़कर आनेवाली अरबके मसालोंकी सुगन्धसे भी ज्यादा भीना है।

तू अपने पिताके प्रति कृतज्ञ रह, क्योंकि अुसने तुझे जीवन दिया है। और अपनी माताके प्रति भी, क्योंकि गर्भावस्थामें अुसने तुझे आश्रय दिया है।

अुनके वचनों पर ध्यान दे, क्योंकि वे तेरे भलेके लिअे कहे जाते हैं। अुनके अुपदेशको सुन, क्योंकि अुनका अुद्गम प्रेमसे हुआ है।

वह तेरे हित पर ध्यान रखता रहा है। तेरे आरामके लिअे अुसने परिश्रम किया है। अिसलिअे अुसकी अवस्थाका खयाल करके अुसका लिहाज कर, अुसके सफेद बालोंका अपमान न होने दे।

अपनी असहाय बाल्यावस्थाको भूल न जा और न अपनी जवानीकी ढिठाईको भूल। अपने वृद्ध माता-पिताकी जीर्ण-शीर्णता पर दया-माया दिखला और ढलती अुम्रमें अुनकी सहायता और भरण-पोषण कर।

जिससे अुनके धवल केश-कलाप शान्तिके साथ मृत्युका स्वागत करेंगे और स्वयं तेरे बाल-बच्चे तेरे अुदाहरणको देखकर, तेरे पुत्रधर्मका बदला अपने पितृ-प्रेमसे देंगे।

४. बन्धु-बान्धव

तुम अेक ही पिताकी सन्तति हो, अुसकी चिन्ताने तुम्हारा लालन-पालन किया है और तुमने अेक ही माताका दूध पिया है।

अिसलिअे तुम अपने भाअियोंके साथ प्यारके बन्धनमें बंध कर अेक हो जाओ, जिससे तुम्हारे पिताके घरमें शान्ति और सुखका निवास हो।

और जब तुम अिस दुनियामें अलग होओ, अपने अुस बन्धनको याद रखो जो तुम्हें प्रेम और अेकताके सूत्रमें बांधता है। और अपने ही खूनके मुकाबलेमें किसी बाहरी आदमीको तरजीह न दो।

यदि तुम्हारा भाअी मुसीबतमें फंसा हो तो अुसकी सहायता करो; यदि तुम्हारी बहन संकटमें हो तो अुसका साथ न छोड़ो।

अिस प्रकार तुम्हारे पिताकी सम्पत्ति अुसके सारे वंशजोंके भरण-पोषणमें सहायक होगी और अुसकी यह चिन्ता-परम्परा तुम्हारे पारस्परिक प्रेममें दिखाओ देगी।

५

औश्वरीय तन्त्र या मनुष्योंका आकस्मिक अन्तर

१. समझदार और नादान

समझदारीका प्रसाद मानो औश्वरीय देन है और औश्वर प्रत्येकको, अुचित मात्रामे, अुसका अंश देता है।

क्या अुसने तुझे ज्ञान प्रदान किया है? तेरे अन्तःकरणको सत्यके ज्ञानसे प्रकाशित किया है? यदि हां, तो अज्ञानियोको अुसका अुपदेश कर और स्वयं अपनी अुन्नतिके लिअे अज्ञोंको वह ज्ञान सिखा।

सच्ची बुद्धिमत्ता मूर्खतासे कम घमण्डी है। विचारवान मनुष्यको बार-बार सन्देह हुआ करता है और अुसके अनुसार वह अपना विचार बदलता रहता है; परन्तु मूर्ख मनुष्य दुराग्रही होता है और अुसे किसी प्रकारका संशय नही होता। वह अपने अज्ञानको छोडकर और सब बातोको जानता है।

ज्ञान-शून्य मनुष्यका घमण्ड घृणा करने योग्य वस्तु है। और व्यर्थकी बकवक करना अज्ञान-जात मूर्खता है। अितना होने पर भी यह बुद्धिमानका काम है कि मूर्खकी अुद्धतताको धैर्यके साथ सहन करे और अुसकी तर्क-विरुद्ध बातोंके लिअे अुस पर दया करे।

तथापि तू अपने ही विचारके घमण्डमें फूल न जा और न अपनी बुद्धिकी श्रेष्ठताकी डींग हांक। क्योंकि स्पष्टसे स्पष्ट मानवीय ज्ञान भी केवल अन्धता और मूर्खता है।

विचारवान मनुष्यको अपनी अपूर्णताका—त्रुटियोका ध्यान रहता है और अिसीलिअे वह नम्रतासे रहता है। वह स्वयं अपने अनुमोदनके लिअे—अितमीनानके लिअे निष्फल परिश्रम करता है; परन्तु मूर्ख अपने ही अन्तःकरणके अुथले झरनेमें झांकता है और अुसकी तहके कंकर-पत्थरको देख-देखकर खुश होता है। वह अुन्हें अूपर लाता है और मोतियोकी तरह दिखलाता फिरता है और अपने जैसोंसे शाबाशी पाकर फूला नही समाता।

वह तीन कौड़ीकी वस्तुओंकी प्राप्ति पर डींग हांकता फिरता है, परन्तु जिस बातमें मूर्ख होना शर्मकी बात है, वहां तक अुसकी समझ और बुद्धिकी पहुंच नही होती।

ज्ञानके मार्गमें होते हुअे भी वह अज्ञानके पीछे दौड़धूप करता है। अुसके अिस परिश्रमका पुरस्कार है — निराशा और लज्जा।

परन्तु विचारवान मनुष्य अपने मनको ज्ञानके द्वारा संस्कृत करता है; कला-कौशलकी अुन्नति करनेमें अुसका मन प्रसन्न रहता है और अुनकी सार्वजनिक अुपयोगिता अुसे सम्मानास्पद बनाती है।

फिर भी वह सद्गुणोंकी प्राप्तिको सबसे बड़ी विद्या मानता है; और सुखका विज्ञान अुसके जीवनके लिअे अध्ययनका विषय होता है।

२. धनी और निर्धन

जिस मनुष्यको ओीश्वरने लक्ष्मी दी है और अुसका सदुपयोग करनेकी बुद्धि प्रदान की है, समझना चाहिये कि अुस पर ओीश्वरकी विशेष कृपा है और अुसकी दृष्टिमें वह बहुत सम्मान्य है।

वह अपनी सम्पत्तिको देखकर आनंदित होता है, क्योंकि वह अुसे सत्कार्य करनेके साधन प्रदान करती है।

वह दीन-दुखियोंकी रक्षा करता है, और बलवानोंके अत्याचारसे निर्बलोंकी रक्षा करता है।

वह अुन लोगोंकी खोज करता है जो दयाके पात्र हैं। वह अुनके अभावों और आवश्यकताओंका पता लगाता है, अुनकी छानबीन करता है और बिना आडम्बरके अुन्हें दुःखोंसे मुक्त करता है।

वह पात्रताको देखकर सहायता और पुरस्कार देता है, वह गुणी जनोंको प्रोत्साहित करता है और प्रत्येक अुपयोगी कार्यकी अुन्नतिमें अुदारता-पूर्वक सहायक होता है।

वह बड़े कार्योंको जुटाता और अुनका सचालन करता है, अुसका देश धन-सम्पन्न होता है, जिससे अुसे नित्य नया काम मिलता रहता है। वह नयी नयी योजनायें तैयार करता है, जिससे कला-कौशल अुन्नति पाते हैं।

वह अुन खाद्य पदार्थोंको, जो अुसकी आवश्यकतासे अधिक होते हैं, अपने निकटवर्ती गरीब आदमीकी चीज समझता है। वह अुन्हें धोखा नहीं देता।

अुसके हृदयकी अुपकारशीलताको अुसका अैश्वर्य कम नहीं कर सकता। अिसीलिअे वह लक्ष्मीको पाकर आनंदित होता है और अुसका यह आह्लाद बिलकुल निर्दोष होता है।

परन्तु लानत है अुस शख्स पर जो अपरिमित धनको बटोर कर जमा करता है और अपनी सम्पत्तिका अुपभोग खुद अकेला ही करता है।

वह गरीबोंको कुचलता है और अुनके ललाट पर चमकनेवाले पसीनेका खयाल नही करता।

वह हृदयहीन होकर दूसरोंसे बलपूर्वक अपना अुत्कर्ष कराता है। अपने बन्धु-बान्धवका सर्वनाश देखकर भी अुसका हृदय टससे मस नही होता।

अनाथोंके आसुओंको वह दूधकी तरह पी जाता है; विधवाओंका विलाप अुसके कानोंको मानो सगीतका स्वर मालूम होता है।

सम्पत्तिके प्रेमसे अुसका हृदय कठोर हो जाता है; न तो किसीका विषाद और न किसीकी आपत्ति अुसे द्रवित कर सकती है।

परन्तु अिस पापका शाप अुसके पीछे हाथ धोकर पड़ा रहता है। अिससे अुसका हृदय निरन्तर भयभीत बना रहता है। अुसके चित्तकी चिन्तायें और अन्तःकरणकी लोभमयी अिच्छायें अुससे अुन मुसीबतोंका काफी बदला लेती है, जो अुसने दूसरोंके लिअे पैदा की है।

अरे, अिस मनुष्यके हृदयकी वेदनाओंके मुकाबले दरिद्रताका दुःख कौन चीज है?

गरीब मनुष्यको अपने तअी तसल्ली पाने दे — नही, आह्लादित होने दे; क्योंकि अुसके पास अिसके बहुतसे कारण है।

वह शान्तिके साथ अपना रूखा-सूखा भोजन करता है; अुसके भोजनके समय खुशामदी और सर्वस्व डकार जानेवाले भोजन-भाअियोंकी भीड़ जमा नही होती।

आश्रित लोगोंके तातेसे वह तग नही होता और न याचनाके शखनादसे वह त्रस्त ही रहता है।

लक्ष्मीके सुखास्वादसे वह वचित रहता है और अिसीलिअे वह अुसके रोगों — दुष्परिणामोंसे भी बचा रहता है।

जो रूखी-सूखी रोटी वह खाता है, वह क्या अुसे मीठी नही लगती? जो पानी वह पीता है, वह क्या अुसे रुचिकर नही लगता? नही, वह तो विषय-विलासी जनोंके बढ़िमासे बढ़िया भोजन-पानसे भी अधिक सुस्वादु होता है।

अुसका परिश्रम अुसके आरोग्यकी रक्षा करता है और अुसको अैसी विश्रान्ति दिलाता है, जिससे धनी जनके मुलायम मखमली गद्दे कोसों दूर रहते हैं।

नम्रताके द्वारा वह अपनी अिच्छाओंको मर्यादित करता है और सम्पत्ति तथा वैभव-प्राप्तिकी अपेक्षा अुसे सतोष-जान शाति और स्वस्थता अधिक सुहाती है।

अिसलिअे धनवान अपनी धनाढ्यता पर गर्व न करे। और दरिद्र अपनी दरिद्रावस्थामें विषादके आगे सिर न झुकावें। क्योंकि ओीश्वरीय नियमके अनुसार सुख तो दोनोंको प्राप्त होता है।

३. स्वामी और सेवक

अपनी दासताकी अवस्था पर, हे मनुष्य, अपनेको न कोस। यह तो ओीश्वरीय योजना है, और अिसमें अनेक लाभ हैं। यह तुझे अपने जीवनकी घोर चिंताओंसे दूर रखती है। सचाओी-ओीमानदारी ही सेवककी प्रतिष्ठा है; नम्रता और आज्ञापालन अुसके सर्वोच्च सद्गुण हैं।

अिसलिअे अपने स्वामीके वाक्प्रहारको — झिड़कियोंको — धीरजके साथ सहन कर, और जब वह तुझे डाट-डपट दिखावे तो अुसे अुलटकर अुत्तर न दे; तेरी अिस त्याग-मूलक खामोशीको वह भूल न सकेगा।

अुसके हितों पर ध्यान रख, अुसके काम-काजमें मन लगा। अुसकी चिन्ता रख, अुसके विश्वासका पात्र बना रह।

तेरा परिश्रम और समय अुसके अधीन हैं, अुनसे अुसे वंचित न रख; कामसे जी न चुरा। क्योंकि अुनके लिअे वह तुझे वेतन देता है।

और तू, हे स्वामी, यदि सेवकोंमें ओीमानदारीकी चाह रखता है, तो अुनके साथ न्यायका बरताव कर। और यदि तू अपनी आज्ञाका पालन तुरन्त ही चाहता हो तो आज्ञा देते समय औचित्यका ध्यान रख।

वे भी मनुष्य हैं। अुनमें भी आत्मतेज है। अुग्रता और कठोरतासे चाहे वे डर भले ही जाय, परन्तु अुनके हृदयमें स्वामीके प्रति प्रेम नहीं अुत्पन्न हो सकता।

तेरी झिड़कियोंके साथ कृपालुता और मिठास मिली रहे और अधिकारके साथ विवेक, जिससे तेरे अुद्बोधन अुसके हृदय पर अंकित हो जाय और अपना कर्तव्य पालन करनेमें अुसे सुख और आनन्द मालूम हो।

जिससे वह कृतज्ञ होकर प्रामाणिकताके साथ तेरी सेवा करेगा, वह प्रेमसे खुशी खुशी तेरी आज्ञाका पालन करेगा, और अिसके बदलेमें तू भी अुसके परिश्रम और स्वामी-भक्तिका अुचित पारितोषिक देनेमें न चूक।

४. राजा और प्रजा

मुझे अपने बराबरीवाले मनुष्योंने साम्राज्य-सत्ताके अूंचे पद पर प्रतिष्ठित करना स्वीकार किया है और मुझे अपना शासक बनाया है; अिसलिअे हे परमात्माके प्यारे, अपने पदकी अुच्चता और गौरवकी अपेक्षा तू अुनके विश्वासका महत्त्व और अुद्देश्य अधिक समझ।

तू बढ़िया वस्त्र पहन कर सिंहासन पर विराजमान है; राज्यवैभवसे तेरा मन्दिर परिवेष्टित है; सत्ताका राजदंड तेरे हाथोंमें सुशोभित है। परन्तु ये राजचिह्न तुझे अपने लिअे नहीं दिये गये हैं; तेरे निजके लिअे ये चीजें नहीं हैं, बल्कि तेरे राज्यके हितके लिअे हैं।

प्रजाका कल्याण ही राजाकी कीर्ति है, प्रताप है; अुसकी सत्ता और राज्यका अवलंबन प्रजाके अन्तःकरण पर है।

महान नृपतिका मन अपनी महत्ता और अैश्वर्यके साथ ही साथ अुच्च होता जाता है; वह बड़ी बड़ी बातोंका विचार करता है और अपने अधिकारके योग्य कार्योंकी खोज करता रहता है।

वह अपनी राजधानीके विचारशील पुरुषोंको बुलाकर आजादीके साथ अुनसे परामर्श करता है और अुन सबकी रायों पर ध्यान देता है।

वह अपने प्रजाजनोंको यथायोग्य दृष्टिसे देखता है; वह मनुष्योंकी योग्यताको परखता है और अुनके गुणोंके अनुसार अुनको कार्यों पर नियुक्त करता है।

अिससे अुसके न्यायाधीश न्यायनिष्ठ होते हैं, अुसके मंत्री विवेकशील होते हैं; और अुसके स्नेहपात्र लोग अुसे धोखा नहीं देते।

कलाओंकी तरफ वह मुसकरा भर देता है और अुनकी अुन्नति हो जाती है और अुसके हाथोंकी अुदारताके द्वारा शास्त्रोंकी अुन्नति होती है।

वह विद्वानों और प्रतिभाशालियों — कल्पना-कुशल जनोंके सहवासमें सुखी रहता है; वह अुनके हृदयमें प्रतिस्पर्धाकी ज्योति जाग्रत करता है अनके परिश्रमसे अुसके राज्यका अुत्कर्ष होता है।

वृद्धि करनेवाले व्यापारीका अुत्साह, धरतीकी सम्पत्ति-बनानेवाले कृषककी कुशलता, कला-निपुणकी निपुणता अुन्नतिका वह प्रेमपूर्वक अभिनंदन करता है और अुदारताके पारितोषिक प्रदान करता है।

वह नये अुपनिवेशोंको बसाता है; वह सुदृढ जहाजोंका निर्माण करता है; वह सुविधाके लिअे नहरोंकी सृष्टि करता है, वह सुरक्षितताके लिअे बन्दरोंकी रचना करता है। अिससे अुसकी प्रजाकी सम्पत्ति बढ़ती है और अुसके राज्यकी सामर्थ्य वृद्धि पाती है।

वह निष्पक्ष होकर विचारपूर्वक कानूनकी रचना करता है। अिससे अुसके प्रजाजन अपने परिश्रमके फलका भोग निःशंक होकर करते हैं और राज-नियम — कानूनके अनुसार बर्ताव रखनेमें ही अुन्हें सुख मालूम होता है।

वह दयाकी नींव पर अपने न्यायकी अिमारत खड़ी करता है। अिस-लिअे अपराधियोंको दंड देनेमें वह कठोर और निष्पक्ष होता है।

अपनी प्रजाकी शिकायतें सुननेके लिअे अुसके कान सदा खुले रहते हैं। जो लोग अुसकी प्रजा पर अत्याचार करते हैं अुनके हाथोंको रोककर वह अुन्हें अत्याचारोंसे मुक्त करनेका सदैव ध्यान रखता है।

जिसलिअे अुसके प्रजाजन अुसे पिताकी तरह मानते हैं और प्रेम तथा आदरकी दृष्टिसे देखते हैं, वे अुसे अपनी समस्त सुख-सामग्रीका रक्षक-पालक समझते हैं।

अुसके हृदयमें प्रजाका प्रेम प्रजावात्सल्यको अुत्पन्न करता है और अुसके सुखकी रक्षा ही अुसकी चिन्ताका विषय होता है।

प्रजाके हृदयमें अुसके प्रति दुर्भाव अुत्पन्न नहीं होता। जिससे अुसके शत्रुओंका व्यूह-जाल अुसके राज्यको हानि नहीं पहुंचा सकता।

अुसके प्रजाजन स्वामिभक्त होते हैं और दृढतापूर्वक अुसका पक्ष ग्रहण करते हैं। वे फौलादके किलेकी तरह अुसके बचावके लिअे तैयार रहते हैं। अिससे अत्याचारीकी सेना अुसके सामने हवामें भूसीकी तरह अुड़ जाती है।

निरापदता और शान्ति अैसे राजाकी प्रजाके निवासस्थानों पर अनुग्रह रखती है। और बल तथा गौरव सदा अुस राजाके सिंहासनके आसपास घूमा करते हैं।

६

सामाजिक कर्तव्य

१. अुपकारशीलता

जब तुझे अपने अभावोंका ध्यान हो, जब तू अपनी अपूर्णताको देखे, तब हे मनुष्य-प्राणी, तू अुस परमेश्वरके अुपकारको मान, जिसने तुझे बुद्धिसे सम्मानित किया है, तुझे वाक्-शक्ति प्रदान की है और तुझे समाजमें स्थान दिया है, जिससे तू परस्पर सहायता और अुपकारका लेन-देन कर सकता है।

तेरे लिअे अन्न, वस्त्र, तेरे निवासकी सुविधा, संकटोंसे तेरी रक्षा, तेरे जीवनके सुख-साधन, ये सब चीजें तुझे दूसरोंकी सहायतासे मिलती हैं। अपने समाजको छोड़कर तू अिनका अुपभोग नहीं कर सकता।

अिसलिअे तेरा यह कर्तव्य है कि तू मनुष्य-जातिका मित्र बन; क्योंकि समाज तेरे साथ स्नेहभाव रखे अिसीमें तेरा हित है।

कमल जिस प्रकार स्वाभाविक रूपसे सौरभके नि:श्वास छोड़ता है, अुसी प्रकार अुपकारशील मनुष्यके हृदयसे सदैव सत्कार्योंका जन्म होता है।

वह अपने चित्तके सुख और शांतिका अुपभोग करता रहता है और अपने सहवासीके सुख और अुत्कर्षसे आनंदित होता है।

वह निन्दाके लिअे अपने कान खुले नहीं रखता। मनुष्योंकी गलतियों और त्रुटियोंको देखकर अुसका हृदय दुखी होता है।

भला करना ही अुसकी अिच्छा होती है। वह भलाअीके अवसर ढूंढा करता है। दूसरोंके कष्टोंको दूर करते समय वह अैसा मानता है, मानो वह अपने को ही अुन दु:खोंसे मुक्त कर रहा है।

अपने मनकी महत्ताके कारण वह मनुष्यमात्रके कल्याणका चिन्तन करता है और अुदार-हृदय हो कर अुनकी अुन्नतिका प्रयत्न करता है।

२. न्याय

समाजकी शांति न्याय पर अवलंबित है और व्यक्तियोंका सुख अुनकी सम्पत्तिके सुरक्षित अुपयोग पर।

अिसलिअे तू अपने हृदयकी वासनाओंको परिमित बना; न्यायके द्वारा अुन्हें ठीक-ठीक रास्ता बता।

अपने सहवासीकी — दूसरेकी — वस्तुको बुरी दृष्टिसे न देख। अुसकी सम्पत्तिको तू स्पर्श तक न कर; अुसे पवित्र रख।

मोह अुस पर हाथ अुठानेके लिअे तुझे मोहित न करे और न अुत्तेजना अुत्तेजित करे, जिससे अुसका जीवन संकटमय हो जाय।

अुसके शीलकी कीर्तिको न बिगाड, अुसके खिलाफ झूठी गवाही न दे।

अुसके नौकरोंको कर्तव्य-भ्रष्ट न कर, जिससे वे अुसे धोखा दें और संकटके समय अुसका साथ छोड दें, और अुसकी हृदयेश्वरीको पाप-कार्यके लिअे न फुसला।

जिससे अुसके हृदयको अैसा दुःख होगा, जिसे तू दूर न कर सकेगा, और अुसके जीवनको अैसा आघात पहुंचेगा, जिसका फिर कोअी अिलाज न हो सकेगा।

मनुष्योंके साथ व्यवहार करनेमें तू निष्पक्ष और न्यायी बन। और जैसा व्यवहार तू अुनसे चाहता है वैसा ही तू अुनके साथ कर।

अपनी जिम्मेदारीको औमानदारीके साथ निबाह, जो लोग तुझ पर भरोसा करते हैं अुन्हें धोखा न दे, विश्वास रख कि औश्वरकी दृष्टिमें चोरी करनेकी अपेक्षा धोखा देना अधिक पाप है।

गरीबोंको पीडित न कर और न मजदूरोंको अुनकी मजदूरीसे वंचित कर।

जब तू लाभके लिअे बिक्री करने लगे तो अपनी अन्तरात्माकी पुकार पर ध्यान दे, और परिमित प्राप्ति पर सन्तोष रख, खरीदारके अनुचित अज्ञानसे लाभ न अुठा।

अपना ऋण चुका दे, क्योंकि तेरी साख पर विश्वास रखकर ही साहूकारने तुझे ऋण दिया है, और अुसका प्राप्तव्य अुसे न देना नीचता और अन्याय है।

अन्तमें, हे समाजशील मनुष्य, तू अपने हृदयका संशोधन कर; स्मृतिको अपनी सहायताके लिअे बुला, और यदि अिनमें से किसी भी बातका अुल्लंघन तूने किया हो तो दुखी और लज्जित हो तथा भरसक अुसका सुधार शीघ्रतासे कर।

३. दया-दाक्षिण्य

वह मनुष्य सुखी है जिसने अपने हृदयमें अुपकारशीलताके बीज बोये हैं; क्योंकि अुसके फल होंगे दया और प्रेम।

अुसके हृदय-स्रोतसे नेकीकी नदियां प्रवाहित होंगी; और अुनकी धारा मनुष्य-जातिके कल्याणके लिअे बहती रहेगी।

वह दीन-हीनको अुसकी मुसीबतमें सहायता पहुंचाता है; और
मात्रकी अुत्कर्ष-वृद्धि करनेमें हर्ष पाता है।

वह अपने सहवासीकी निन्दा नहीं करता; वह द्वेष और मत्सर
पर विश्वास नहीं रखता और न अुसकी चुगलियां करता फिरता है।

वह दूसरोंके अपराधोंको क्षमा कर देता है—अुन्हें अपनी स्मृतिसे
फेंकता है। प्रतिहिंसा और मत्सर अुसके हृदयमें स्थान नहीं पाते।

बुराओके बदलेमें वह बुराओ नहीं करता; वह अपने शत्रुओंसे
नहीं करता; बल्कि मित्रभावसे अुद्बोधनके रूपमें अुनके अन्यायोंका बदला

मनुष्योंकी चिन्ताओं और दु:खोंको देखकर अुसकी दयालुता
होती है; वह अुनके दु:खके भारको हलका करनेका प्रयत्न करता है
अुसमें सफलता मिलनेसे जो सुख अुसे मिलता है अुसे वह अपने
पारितोषिक समझता है।

वह क्रोधी मनुष्यके आवेगको शान्त करके अुनके कलहको मि
और वैमनस्य तथा लड़ाओ-झगड़ोंको रोकता है।

वह अपने आसपास शांति और स्नेहभावकी वृद्धि करता है,
लोग अुसका कीर्तिगान करते हुअे अुसे आशीर्वाद देते हैं।

४. कृतज्ञता

जिस प्रकार पेड़ोंकी शाखायें अपना रस अुन जड़ोंको पहुंचाती हैं,
अुन्होंने जन्म पाया है, जिस प्रकार नदी अपनी धारा अुसी समुद्रमें छो
जहांसे अुसे जल प्राप्त हुआ है, अुसी प्रकार कृतज्ञ मनुष्यका हृदय
अुपकार-कर्ताकी ओर खिंचता है और वह अुस प्राप्त-लाभका बदल
प्रफुल्लित होता है।

वह अुसके अुपकारको प्रसन्नतापूर्वक सिर चढाता है और अपने अु
कर्ताको श्रद्धा और प्रेमकी दृष्टिसे देखता है। यदि बदला चुकाना अुसके
बात न हो, तो वह अुसके अुपकारकी स्मृतिका लालन-पालन स्नेह-पूर्वक
है; वह जीवन-पर्यंत अुसे नहीं भूलता।

अुदार नरके कर आकाशस्थ जलद-पटलकी तरह हैं, जो कि जम
पर फूल, फल और दलकी वृष्टि करते हैं। परन्तु अकृतज्ञ मनुष्यका हृद
स्थलकी तरह है। वह किसी लोभीकी तरह वर्षाकी बूंदोंको पी कर अुन्हें
हृदयमें संचित कर रखता है, पर अुनसे अुपजाता कुछ भी नहीं।

अपने हित-कर्ताकी अीर्ष्या न कर, और न अुसकी की हुअी भलाअीको छिपानेका प्रयत्न कर। क्योंकि, यद्यपि अहसानमन्द होनेकी अपेक्षा अहसान करना अच्छा है, यद्यपि अुदारतासे स्तुति-कीर्ति प्राप्त होती है, तथापि कृतज्ञतासे अुत्पन्न नम्रता हृदयको वशीभूत कर लेती है और कृतज्ञ मनुष्यको नर और नारायण दोनोंकी दृष्टिमें प्रिय बनाती है।

परन्तु घमण्डी मनुष्यकी दी हुअी किसी भी वस्तुको स्वीकार न कर, स्वार्थी और लोभी मनुष्य पर कभी अहसान न कर। क्योंकि अभिमानीके घमण्डसे तू लज्जाका पात्र होगा और लोभीकी लालसा कभी तृप्त न होगी।

५. निष्कपटता

यदि तू सत्यके सौन्दर्यमें निमग्न है और यदि अुसके गुणोंकी पवित्रता पर तेरा हृदय मुग्ध है, तो अुसके प्रति अपनी भक्ति दृढ रख; और अुसका त्याग न कर। अिस व्रत पर यदि तू सदैव कायम रहा, तो तेरी प्रतिष्ठा बढ़े बिना न रहेगी।

निष्कपट मनुष्यकी जिह्वाका मूल अुसके हृदयमें होता है; धूर्तता और कपट अुसके शब्दोंमें स्थान नहीं पाते।

असत्यसे वह लज्जित होकर नीचे देखने लगता है, परन्तु सत्य बोलनेमें अुसकी आखें अेकसी स्थिर रहती हैं।

वह सच्चे मनुष्यकी तरह अपने शीलके गौरवकी रक्षा करता है; और कपट-विद्याको तो वह दूरसे ही घृणा करता है।

अुसका व्यवहार सदा अेकसा होता है। जिससे वह कभी अुलझनमें नहीं फसता। सत्याचरणके लिअे तो अुसके पास काफी साहस होता है, परन्तु असत्य बोलनेसे वह भय खाता है। कपट-व्यवहारकी नीचताकी अपेक्षा वह बहुत अुच्च स्थान पर रहता है; अुसके मुखके शब्द अुसके हृदयके विचारोंके प्रतिबिंब होते हैं।

फिर भी वह दूरदर्शिता और सावधानीके साथ कोअी बात कहता है। वह सत्यका मनन करता है और विचार करके बोलता है।

वह मित्र-भावसे नसीहत देता है और दिल खोल कर अुलाहना भी देता है। वह जिस बातकी प्रतिज्ञा करता है, अुसका पालन निश्चयपूर्वक करता है।

अुसने अपने हाथोंके बल आकाशको फैला रखा है, और अपनी अंगु-
योंके द्वारा तारकाओंका भ्रमण-मार्ग अंकित कर दिया है।

अुसने समुद्रकी सीमा बांध दी है, जिसे वह अुल्लंघन नहीं कर सकता;
र अुसने पंच महाभूतोंको अपने अधीन रखा है।

वह पृथ्वी-मंडलको हिलाता है, जिससे राष्ट्र कांप अुठते हैं, वह अपने
जली-रूपी भाले फेंकता है, जिनसे दुष्टात्माओंका दिल दहल अुठता है।

वह केवल अपने शब्दों या आज्ञाके द्वारा अनन्त कोटि ब्रह्माण्डको
र्माण करता है। वह अुन पर अपने हाथोंसे आघात भर करता है और
शून्यमें विलीन हो जाते हैं।

अुस सर्वशक्तिमानकी विभूतिमत्ताके सामने नम्र हो। अुसके क्रोधको
दीप्त न कर, अन्यथा तेरा सत्यानाश हो जायगा।

अीश्वरके समस्त कार्योंमें अुसकी अीश्वरता दिखायी देती है और वह
नन्त चातुर्यके द्वारा अपने शासन और अधिकारका संचालन करता है।

संसारके शासनके लिअे अुसने नियमोंकी रचना की है। वे भिन्न भिन्न
ाणियोंके लिअे भिन्न भिन्न हैं। और प्रत्येक प्राणी स्वाभाविक रीतिसे अुसकी
च्छाके अनुसार व्यवहार करता है।

अुसके मस्तिष्कमें — मनमें — समस्त ज्ञान परिभ्रमण करता रहता
; भविष्यकालका रहस्य अुसके आगे खुला रहता है।

तेरे हृदयके विचार अुससे छिपे नहीं रहते, वह तेरे विचारोंको —
श्चयोंको अुनके जन्मके पहले ही जान लेता है।

अुसके भविष्य-ज्ञानके लिअे कोअी बात संदिग्ध नहीं है; अुसके दूर-
ानेके नजदीक कोअी बात आकस्मिक नहीं है।

अुसकी प्रत्येक लीला अद्भुत है। अुसके अनुशासन [illegible] होते हैं।
अुसका ज्ञान कल्पनातीत है।

अिसलिअे अुसके ज्ञान पर श्रद्धा रखकर अुसका आदर कर और अुसके
महान आदेशोंके आगे अत्यन्त नम्रतापूर्वक सिर झुका।

परमात्मा दयालु और अुपकारकर्ता है, दया और प्रेमके वशीभूत हो
कर ही अुसने अिस सृष्टिको अुत्पन्न किया है।

अुसके प्रत्येक कार्यमें अुसका सानन्द स्पष्ट रूपसे झलकता है। वह
कृपाका स्रोत और पुण्यका केन्द्र है।

अुनकी आखें प्रत्येक मनुष्यके हृदयके रहस्यको देख लेती है और वह अुन्हें सदा याद रखता है; वह न तो व्यक्तियोंकी और न अुनके पदोंकी मुरव्वत करता है।

जब कि आत्मा अिस मर्त्य जीवनकी भारभूत जंजीरको तोड डालती है, तब अुच्च और नीच, सबल और निर्बल, विज्ञ और अज्ञ सबको अपने अपने कर्मोंके अनुसार परमेश्वरकी ओरसे यथोचित फल मिलता है।

अुस समय जो दुष्टात्मा होंगे वे भयसे थर-थर कापेंगे; परन्तु जो पुण्यवान होंगे अुनके हृदयको अुसके न्यायसे हर्ष होगा।

अिसलिअे, सदा-सर्वदा परमात्मासे डर, और अुसी रास्तेसे चल जो कि अुसने तुझे बताया है। दूरदर्शिताके अुपदेशको सुन, संयम तुझे अिन्द्रिय-जय सिखावे, न्याय तेरा पथदर्शक हो, परोपकार तेरे हृदयको अुत्साहित करे और अीश्वरके प्रति कृतज्ञता तुझे भक्तिकी स्फूर्ति दे। अिनसे तुझे अिस लोकमें सुख मिलेगा और अन्तको परलोकमें शाश्वत आनन्दके सदन स्वर्गधाममें विश्राम मिलेगा।

यही मनुष्य-जीवनका सच्चा सदुपयोग है।

जीवनका सद्व्यय : अुत्तरार्ध

१

मनुष्य-प्राणी

१. मनुष्य-शरीर और अुसकी रचना

हे मनुष्य, तू अज्ञानी और अशक्त है। अतअेव हे मिट्टीके पुतले, तुझे नम्र रहना चाहिये। क्या तू अुस अनन्त और सत्य ज्ञानका चिन्तन करना चाहता है? क्या तू अुस सर्वशक्तिमानके चमत्कारोंको देखना चाहता है, जो तेरे चारों ओर छा रहे हैं? यदि हां, तो तू अपने शरीर पर विचार कर।

तेरी अुत्पत्ति अद्भुत और भयजनक है। अिसलिअे तू अपने स्रष्टासे डर और अुसकी स्तुति कर तथा अुस पर दृढ़ विश्वास रख कर आनन्दित रह।

और, प्राणियोंमें अकेला तू ही क्यों अुन्नत और श्रेष्ठ बनाया गया है? — अिसलिअे कि तू अुसके कार्योंको देख सके। तुझे अुनको देखनेकी क्या आवश्यकता है? अिसलिअे कि तू अुनका यशोगान करे, अुनसे शिक्षा ग्रहण करे। स्तुति क्यों? अिसलिअे कि तू अुनके और अपने स्रष्टाकी पूजा-आराधना भलीभांति कर सके।

चैतन्य — अर्थात् आन्तरिक सावधानता — अकेले तुझीको क्यों प्राप्त हुआ है? और वह तुझे कहांसे मिला है?

मांसमें विचार करनेकी शक्ति नहीं, विवेचना करना हड्डियोंका काम नहीं; सिंह नहीं जानता कि कीड़े मुझे खा जायेंगे, बकरा नहीं जानता कि मैं 'वध' किये जानेके लिअे पोसा जा रहा हूं।

अन्य प्राणियोंकी अपेक्षा तुझमें कुछ विशेषता है; वह तुझे अिन्द्रिय-गोचर ज्ञानकी अपेक्षा कुछ अुच्च बातकी प्रेरणा करती है। देख तो, वह क्या है?

अुसके चले जाने पर भी तेरा शरीर ज्योंका त्यों बना रहता है। अिससे मालूम होता है कि वह अुसका अंग नहीं। अतअेव वह जड़ नहीं, शाश्वत है, स्वतंत्र है, और अपने कर्मोंकी अुत्तरदात्री है।

गधा अपने दांतोंसे तृणको खा लेता है; अिसलिअे क्या अुसे अन्नका स्वाद मालूम हो जाता है? मगरकी रीढ़ तेरी ही तरह सीधी है; पर अिससे क्या वह तेरी तरह सीधा खड़ा हो सकता है?

ओीश्वरने जैसे अिनकी रचना की है, अुसी तरह तुझे भी बनाया है; अिन सबके पीछे तुझे अुत्पन्न किया है; तू अिन सबसे श्रेष्ठ है; तुझे अिन सब पर हुकूमत करनेका अधिकार दिया गया है और स्वयं अपने श्वासोच्छ्वासके द्वारा अुसने तुझे वेदके तत्त्वका ज्ञान कराया है।

अतअेव तू अुसकी सृष्टिका अेक अभिमान करने योग्य पदार्थ है। तू अपनेको पुरुष और प्रकृतिका सन्धि-साधन समझ; अपने अन्तःकरणमें परमात्माके अंशका अनुभव कर, अपने आत्मगौरवको याद कर और बुरे अथवा निन्द्य कर्म करनेकी नीचता न कर।

सांपके मुंहमें जहर और भयको किसने स्थान दिया? घोड़ेको बादलकी तरह हिनहिनानेकी ताकत किसने दी है? अुसी परमात्माने, जिसने तुझे अपने कामके लिअे सांपको मार डालनेकी और घोड़ेको पालनेकी अिच्छा दी है।

२. अिन्द्रियोंका अुपयोग

अिसलिअे कि तेरे शरीरकी महिमा अधिक है, तू शेखी न मार; और न अपने मस्तिष्क पर ही फूल, अिसलिअे कि वह अन्य प्राणियोंकी अपेक्षा श्रेष्ठ बनाया गया है। क्या घरके मालिककी महिमा अुसकी दीवारोंकी अपेक्षा अधिक नहीं?

अनाज बोनेके पहले जमीन तैयार करनी चाहिये, कुम्हारको घड़ा बनानेके पहले ही भट्ठी बना लेनी चाहिये।

जिस प्रकार आकाशका श्वास — ओीश्वरका आदेश — गहरे समुद्रसे कहता है: जिस रास्ते तेरी तरंगें बहें, दूसरे रास्ते नहीं, वे जितनी अूंची अुठें, अिससे अधिक नहीं; अुसी प्रकार हे मनुष्य, तेरी आत्मा तेरे शरीरको आदेश देकर कार्यमें प्रवृत्त करे और अुसके आवेगको दबावे।

तेरी आत्मा तेरे शरीरका राजा है। अिसलिअे अुसकी प्रजाको — अिन्द्रियोंको — अुसके विरुद्ध विप्लव न करने दे।

तेरा शरीर भूगोलकी तरह है; तेरी हड्डियां अुसके स्तम्भ हैं, जो अुसकी सतह पर खड़े हैं और अुसको धारण किये हुअे हैं।

जिस प्रकार समुद्रमें जलस्रोत अुदान होकर अुनका पानी नदियोंमें जाता है, और वहांसे बहता हुआ वह फिर समुद्रके गर्भमें आ जाता है; अुसी प्रकार तेरा चैतन्य तेरे हृदयमें गति पाकर बाहरी अवयवों तक जाता है, और फिर लौट कर अपने स्थान पर आ जाता है।

क्या अिन दोनोंका क्रम सदा अेकसा नहीं चला करता? देख, अेक ही अीश्वर दोनोंका प्रेरक है।

क्या तेरी नाक सुगन्धोंकी सडक नही है? तेरा मुख मिष्टान्नोंका मार्ग नहीं है? तो भी यह जान रख कि अधिक काल तक सुगन्धका अुपभोग जीको अूबा देता है, और मिष्ट भोजनके अतिरेकसे भूख अुत्तेजित होनेके बजाय मर जाती है।

क्या तेरे नेत्र पहरेदार नही हैं? तो भी कितनी ही बार वे, तेरी देख-भाल करनेवाले, सत्य और असत्यका निर्णय करनेमें असमर्थ होते हैं।

अपनी आत्माको सब तरह सौम्य बना, अपने मनको अुसके लाभ पर ध्यान रखनेकी सीख दे, जिससे ये अुसके मंत्री सदा तुझे सत्य तक पहुंचाया करें।

क्या तेरे हाथ अेक चमत्कार नही है? क्या सृष्टिमें अैसी दूसरी वस्तु है? ये तुझे किसलिअे दिये गये हैं? केवल अिसलिअे कि तू अुन्हें अपने भाअियोंकी सहायताके लिअे आगे बढावे।

समस्त जीवधारियोंमें अेक तू ही क्यों लज्जाक्षम बनाया गया है? अिस-लिअे कि ससारको तेरे चेहरेसे तेरी लज्जा दिखाअी दे सकती है। अतअेव कोअी लज्जाजनक कार्य न कर।

भय और अुद्वेग क्यों तेरे चेहरेके तेजको हरण कर लेते हैं? बुरे कामोंसे दूर रह; फिर तू देखेगा कि भय तुझसे नीचे है और अुद्वेग निर्बल है।

तुझ अकेलेको ही स्वप्नमें अनेक आभास क्यों दिखाअी देते है? अुनकी अवहेलना न कर; क्योंकि समझ रख, स्वप्न अीश्वर-प्रेरित हैं।

हे मनुष्य, अकेला तू ही बोल सकता है! तेरे अिस दिव्य विशेषा-धिकार पर कौतुक कर और जिसने तुझे यह प्रदान किया है, अुसकी स्तुति अन्तःकरण और भक्तिभावसे कर, और अपने बालकोंको धर्माचरणके द्वारा और नन्हें बच्चोंको अुपदेश देकर अुन्हें अीश्वर-परायण बना।

३. मानव आत्मा, अुसकी अुत्पत्ति और धर्म

हे मनुष्य, स्वास्थ्य, शौर्य और सुडौलता तेरे बाह्य शरीरके लिअे प्रमादरूप हैं। अिन सबसे श्रेष्ठ है स्वास्थ्य। शरीरके साथ जो संबंध स्वास्थ्यका है, वही आत्माके साथ सत्यका है।

तुझमें आत्मा है, यह बात तेरे समस्त प्रकारके ज्ञानमें सबसे अधिक निश्चित और समस्त सत्य बातोंमें सबसे अधिक स्पष्ट है। अिसलिअे नम्रता-पूर्वक अीश्वरका कृतज्ञ हो, परन्तु अुसे पूरी तरह जाननेके झगडेमें न पड, क्योंकि वह अतर्क्य है।

विचार-शक्ति, ग्रहण-शक्ति, विवेचन-शक्ति तथा अिच्छा-शक्तिको आत्मा न कह; ये तो अुसके कार्य हैं, अुसका मूल तत्त्व नहीं।

अपनी अवज्ञा न हो, *अिस खयालसे तू अुसे स्वर्गमें खींच ले जानेका* प्रयत्न न कर — अुन आदमियोंकी तरह न कर जो अूपर चढ कर फिर गिरते हैं, और न तू अुसे बुद्धिहीन पशुओंकी श्रेणी तक नीचे घसीट कर ले जा।

अुसकी स्वाभाविक शक्तियोंमें अुसे खोज, अुसके गुणोंके द्वारा अुसे पहचान; तेरे सिरके बालोंसे भी अुनकी संख्या अधिक है, आकाशस्थ तारका-ओंसे भी अुनकी संख्या अधिक है।

अरबस्तानकी तरह यह न मान कि आत्मा सब लोगोंमें बटी हुअी है, और न मिश्रके लोगोंकी तरह यह विश्वास रख कि प्रत्येक मनुष्यके अनेक आत्मायें होती हैं, बल्कि यह जान कि तेरे हृदयकी तरह तेरी आत्मा भी अेक ही है।

क्या सूर्य कीचडको सुखा कर कडा नहीं कर देता? क्या वह मोमको मुलायम नहीं करता? जिस प्रकार अेक ही सूर्य दो काम करता है, अुसी तरह अेक आत्मा भी दो परस्पर-विरुद्ध बातोंकी अिच्छा करती है।

अभ्र-पटल चन्द्रमाके मुख-मंडलके सामने परदेकी तरह फैल जाता है, तो भी वह अपने धर्मको नहीं छोडता। अुसी प्रकार आत्मा मूर्ख मनुष्यके हृदयमें भी ज्योंकी त्यों निर्दोष रहती है।

वह अमर है, वह अ-विकार्य है, वह सबमें समान रूपसे व्याप्त है। आरोग्य अुसे अुसका सौन्दर्य प्रकट करनेके लिअे बुलाता है और व्यासंग अुसके

यद्यपि वह (आत्मा) तेरे पश्चात् भी कायम रहेगी, तथापि यह
समझ कि वह तेरे पहले अुत्पन्न हुअी है; तेरे शरीरकी रचनाके साथ ही अुस
सृष्टि हुअी है और तेरे शरीरके साथ ही अुसका ढाचा तैयार हुआ

न तो न्यायदृष्टि तुझे सद्गुण-सपन्न और न दयादृष्टि पापवि
आत्मा दे सकती है। न्यायदृष्टि और दयादृष्टि तुझ पर ही अवलम्बित
और तू ही अुसके लिअे जवाबदेह है।

यह खयाल न कर कि मृत्यु तुझे कृतकर्मोके फलसे बचा सकेगी।
न सोच कि शीलभ्रष्टता तुझे जाच-पडतालसे छिपा सकेगी। अीश्वरकी स
असीम है; अुसकी लीला अगाध है — अुसके लिअे कोअी बात असंभव नहीं

क्या मुर्गा मध्यरात्रिके समयको नही जानता? क्या वह तुझे
कहनेके लिअे बाग नही देता कि सबेरा हो गया? क्या कुत्ता अ
स्वामीके पावोकी आहटको नही पहचानता? और क्या घायल बकरा अ
घावोको आराम करनेवाअी वनस्पतिकी ओर नही दौड जाता? तो
जब ये मरते है, अिनकी आत्मा पचत्वको प्राप्त हो जाती है; अकेली ते
आत्मा ही पीछे बची रहती है।

पशु-पक्षियोकी अिन्द्रिया तेरी अिन्द्रियोसे अधिक तेज है, अिसलि
अुनकी अीर्ष्या न कर, यह जान कि लाभ अच्छी वस्तुओंके केवल प्रा
कर रखनेमें नही है, बल्कि यह जाननेमे है कि अुनका अुपयोग किस त
करना चाहिये।

क्या तेरे बारहसिंगाके-से कान है? या तेरी आखें गरुडकी तरह ती
और आबदार हैं? क्या तूने सूघनेमें शिकारी कुत्तोंकी समता की है?
बन्दरने अपना स्वाद तुझे दिया है? या कच्छपने अपनी भावनायें तुझे
हैं? यदि दी होती तो भी बिना बुद्धिके वे तेरे किस कामकी होती? क
ये अन्य प्राणियोकी तरह मर नही जाते?

क्या अिनमें से किसीको भी मिष्ट और समयोचित वाणी प्राप्त करने
सौभाग्य प्राप्त है? क्या ये तुझे अपने किसी कार्यका कारण बता सकते है

बुद्धिमान — चतुर मनुष्यके ओठ राजसभाके द्वारकी तरह हैं; वे खो
नही गये कि अुनकी सपदा तेरे सामने आअी नही।

अुचित अवसर पर कही गअी समझकी बात चादीके गमलेमें अुगे ह
सोनेके पौधोकी तरह होती है।

क्या तू अपनी आत्माके विषयमें अधिकसे अधिक विचार कर सकता है? ा क्या अुसको प्रशंसामें बहुत कुछ कहा जा सकता है? वह तो अुस ीश्वरकी प्रतिमूर्ति है, जिसने तुझे अुसे प्रदान किया है।

अुसके गौरवको तू सदा याद रख, यह न भूल कि कितनी विशाल ुद्धि तुझे दी गअी है।

जो वस्तु लाभ करती है, अुससे हानि भी हो सकती है, अिसलिअे यान रख कि तुझे अुसे सद्गुणोंकी ओर ही प्रेरित करना है।

यह न मान कि जन-समूहमें वह कहीं खो जायगी, यह कल्पना न कर के तू अुसे अपने हृदय-कपाटमें बन्द कर सकेगा, क्योंकि अुसे तो कर्म करनेमें ी प्रसन्नता है और अिससे अुसे कोअी पराङ्मुख नहीं कर सकता। अुसकी ति नित्य व अुसके कार्य सार्वदेशिक हैं, अुसका चलन-वलन दुर्दमनीय है; दि वह पृथ्वीके बड़ेसे बड़े भाग पर हो, तो भी वह अुस वस्तुको प्राप्त कर ेगी; यदि वह तारका-प्रदेशके भी परे हो, तो भी अुसकी आखें अुसका पता गा लेंगी।

नवीन शोधोंमें अुसे बड़ा आनन्द आता है। प्यासा मनुष्य पानीकी खोजमें ारी हुअी बालू पर भी भटकता है। यही दशा ज्ञान-पिपासु आत्माकी है।

अुसकी रक्षा कर, क्योंकि वह अल्हड़ है। अुसको वशमें रख, क्योंकि वह अनियम-निष्ठ है। अुसके व्यवहारको सुधार, क्योंकि वह बड़ी अुग्र है। वह पानीसे अधिक तरल, मोमसे अधिक मुलायम और हवासे अधिक नम्र है। अिस दशामें क्या अुसे कोअी आसानीसे नियमित कर सकता है?

सारासारका विचार न कर सकनेवाले मनुष्यमें आत्माका होना अैसा ही है, जैसा कि किसी अुन्मत्त मनुष्यके हाथमें तलवारका होना।

सत्य अुसकी खोजका ध्येय है, अुसकी प्राप्तिके जो साधन अुसके पास हैं वे हैं — तर्क और अनुभव। पर क्या ये अशक्त, अनिश्चित और भ्रम-पूर्ण नहीं हैं? तब यह कैसे वहां तक पहुंच पावेगी?

सामान्य लोगोंकी सम्मति सत्यका प्रमाण नहीं है, क्योंकि मनुष्य-समाज सामान्यत: ज्ञानहीन है।

स्वात्मबोध, अपने स्रष्टाका ज्ञान, अुसकी पूजाका ध्यान, जो तेरा धर्म है — क्या ये बातें तेरे सामने स्पष्टरूपसे नहीं हैं? और देख, अिनसे अधिक विश्वासपूर्वक जानने योग्य मनुष्यके लिअे और कौनसी बात है?

४. मानव जीवनकी अवधि और अुसका अुप

चण्डूल पक्षीके लिअे जिस प्रकार प्रभातका दृष्टिपात, जिस प्रकार सन्ध्याकी छाया, मधुमक्खीके लिअे जिस प्रकार शहद जीवन मनुष्यके हृदयको प्रिय है।

यद्यपि यह अुज्ज्वल है तो भी चकाचौंध नही करता; भी जीको अूबने नही देता; मधुर है तो भी अरुचिकर नही देता; पतित है तो भी त्याज्य नही। तिस पर भी अैसा कौन है सच्ची कीमत जानता हो?

जीवनका यथेष्ट आदर करना सीख; जिससे तू ज्ञानके शिख पहुंच जायगा।

मूर्खकी तरह यह न सोच कि जीवनसे बढ़कर कोअी वस्तु नही, और न समझदारका स्वांग बनानेवालेकी तरह यह विचार तिरस्करणीय है; तू अपने लिअे जीवनसे प्रेम न कर, बल्कि लिअे कर जो अिसके द्वारा दूसरेके साथ की जा सके।

सुवर्ण अुसे तेरे लिअे खरीद नही सकता; और न हीरे क्षणको तेरे लिअे फिरसे खरीद कर ला सकती हैं, जिसे तूने अिसलिअे प्रत्येक क्षणका अुपयोग सद्गुणोंकी प्राप्तिमें ही कर।

यह न कह कि यदि तू पैदा न हुआ होता तो बहुत अच्छा या यदि अुत्पन्न हुआ तो बेहतर था कि जल्दी मर जाता, सिरजनहारको यह दोष लगानेका साहस कर कि— "मेरा जन्म तो कौनसी बुरी बात थी?" क्योंकि भलाअी तेरे भलाअीका अभाव ही बुराअी है। अतअेव तू अीश्वरको स्वयं अपनेको ही दोषी सिद्ध नही करता?

मछली यदि यह जान जाय कि बंसीके नीचे कांटा क्या वह अुसे निगलेगी? क्या सिंह यदि यह जान ले कि वह अुनमें पड़ेगा? अतअेव यदि यह आत्मा देहके ही होती, तो न तो मनुष्य जीवित रहनेकी अिच्छा करता और परमात्माने अुसे अुत्पन्न ही किया होता; अिसलिअे बाद भी तू जीवित रहेगा।

मनुष्य

अुसकी दुर्बलतायें और अुनके दोष

१ अभिमान

मनुष्यके हृदयमें अभिमानका बड़ा जोर है; आशा अुसे जिधर भी चाहे ले जाती है; निराशा प्राय अुसे सबको सब निगल लेती है, और तब पुकार-पुकार कर कहता है कि "यहां मेरा कोअी प्रतिस्पर्धी नहीं है।" परन्तु जिन सबकी अपेक्षा अभिमानका अंश अुसमें सबसे ज्यादा है।

अिसलिअे मानव-अवस्थाकी मूर्खता पर आंसू न बहा, बल्कि अुसकी मूर्खताओं पर हंस। जिन मनुष्योंका अभिमान अनियन्त्रित है, अुनके हाथोंमें जीवन स्वप्नकी परछाअियोंकी तरह है।

नाटकों या अुपन्यासोंके चरित्रनायक, जिनको हम अन्य पात्रोंकी अपेक्षा अधिक अुच्च चित्रित करते हैं, अिस अभिमानरूपी दुर्बलताके बुलबुलोंके सिवा और क्या हैं? सर्वसाधारण लोग तो अस्थिर और कृतघ्न हैं। फिर बुद्धिमान मनुष्य सबोंके लिअे अपनेको खतरेमें क्यों डाले?

जो अपने वर्तमान कार्योंकी अुपेक्षा करके भविष्यकी महत्ताका विचार करता है, वह मानो हवाका भक्षण करता है, और अिधर अुसकी रोटी दूसरे ही खा जाते हैं।

अपनी वर्तमान अवस्थाके अनुसार व्यवहार कर, जिससे अधिक अुच्च स्थितियोंमें जाने पर तुझे शरमिन्दा न होना पड़े।

अभिमान जैसी और कौन वस्तु है, जो मनुष्यकी आंखोंको अपने आप अन्धा कर देती है और हृदयको छिपा देती है? देख, जब तू अपने तअीं नहीं देख सकता तब दूसरे लोग साफ तौर पर तेरा पता पा लेंगे।

जैसे सेमलके नेत्ररंजक फूल सुगन्धके बिना केवल निष्प्रयोजन होते हैं; अुसी तरह वह मनुष्य भी निरर्थक है, जो अपनेको बहुत अूंचे पद पर बिठा लेता है, परन्तु अुसके अनुसार योग्यता नहीं रखता।

अभिमानी मनुष्यका हृदय यद्यपि अूपरसे सन्तुष्ट दिखाअी पड़ता है, तो भी अन्दर वह व्यथित रहता है, अुसके आनन्दकी अपेक्षा अुसकी चिंतायें अधिक होती हैं।

अुसकी घोर चिन्तायें अुसकी अस्थिके साथ नहीं जल जाती, चिता भी अुन्हें दहन नहीं कर सकती। वह अपने जड शरीरके बाहर अपने विचारोंको ले जाता है और पहलेसे सोचा करता है कि मेरी मृत्युके बाद मेरा गुणगान किया जाय। परन्तु जो अैसा करनेका अभिवचन देता है, वह अुसे धोखा देता है।

जिस तरह कोअी मनुष्य अपनी पत्नीसे कह दे कि मेरे मरने पर तू अैसे ढंगसे रहना कि मेरी आत्मा अशान्त न होवे, अुसी तरह वह मनुष्य है, जो यह अपेक्षा करता है कि मेरी स्तुति पातालमें भी मेरे कानों तक पहुंचे या कफनमें भी मेरे हृदयको प्रफुल्लित करे।

जब तक तू जीवित है सत्कार्य कर, परन्तु अिस बातका खयाल न कर कि लोग अुसके विषयमें क्या कहते हैं, जिस स्तुतिके तू योग्य है अुसीसे सतुष्ट रह। तेरी भावी सन्तान अुसको सुन-सुन कर गद्गद होगी।

जिस प्रकार तितली अपने रंगोंको नहीं देख पाती, जिस प्रकार जुही अपने आसपास अुडनेवाली सुगन्धको नहीं जान सकती, अुसी प्रकार प्रसन्न-चित्त मनुष्यको खुद अपने गुण नहीं दिखाअी देते। अुसकी परीक्षाके लिअे दूसरोंकी ही जरूरत होती है।

वह कहता है कि मेरे रत्न-जडित वस्त्राभूषण किस कामके हैं? अिन अच्छी-अच्छी चीजोंसे सुसज्जित मेरी मेज किस प्रयोजनके लिअे है, जब कि अुन्हें देखने और जाननेवाला ही कोअी नहीं है? परन्तु यदि वह यह चाहता हो कि संसार अुसकी प्रशंसा करे और वह अुसका पात्र बने, तो अुसे चाहिये कि वह नंगों-भूखोंको अपने वस्त्र और भोजन-सामग्री दे दे।

तू हरअेक मनुष्यसे बेमतलबकी बातें कह कर चापलूसी क्यों करता है? तू जानता है कि जब वह तुझसे वैसी ही बातें करेगा, तब तू अुन्हें पसन्द न करेगा। वह जानता है कि 'मैं अिससे झूठ बोलता हूं', फिर भी वह समझता है कि तू अिसके लिअे अुसे धन्यवाद देगा। तू शुद्ध भावसे बोल। अुसके बदलेमें तुझे शिक्षा मिलेगी।

घमण्डी मनुष्य अपने ही विषयकी बातें करनेमें आनन्द मानता है, परन्तु वह नहीं जानता कि दूसरे लोग अुसके मनकी बातें सुनना पसन्द नहीं करते।

यदि अुसने कोअी भी काम प्रशंसाके योग्य किया है, कोअी भी बात अुसमें स्तुतिके योग्य पाअी जाती है, तो वह अुसकी घोषणा करनेमें हर्ष मानता है। अुसको दूसरोंके द्वारा अिन बातोंका वर्णन सुनकर अभिमान होता

है। अैसे मनुष्यकी अिच्छाये स्वयं ही अपनेको असफल कर देती हैं। लोग नही कहते कि "देखो, अुसने यह किया है; या देखो, अुसके पास यह है" बल्कि यह कहते हैं कि "देखो, अुसे अिस बातका कितना घमण्ड है।"

मनुष्यका ध्यान अेक ही समय बहुतसी बातों पर स्थिर नहीं रहता। जिसका मन बाहरी दिखावे पर ही मुग्ध हो जाता है, वह असली वस्तु से हाथ धो बैठता है। वह अुस मनुष्यकी तरह है, जो क्षुद्र बुलबुलोंको पाने का तो प्रयत्न करता है, परंतु जिसके द्वारा अुसका गौरव बढ़ सकता है अुस वस्तुको पैरों तले रौंदता है।

२. चंचलता

हे मनुष्य, प्रकृति तुझे चचलताकी ओर झुकाती है, अिसलिअे तू अुससे सावधान रह।

तू अपनी माके गर्भसे ही चचल और विविध है, और अस्थिरता तुझे अपने पिताके वीर्यमें प्राप्त हुअी है, तब भला तू कैसे दृढ़चित्त रहेगा?

जिन्होंने तुझे यह शरीर दिया है, अुन्होंने तुझे कमजोरी दी है; परन्तु जिसने तुझे आत्मा प्रदान की है, अुसने तुझे निश्चयसे विभूषित किया है। अुसका सेवन करनेसे तुझे ज्ञान प्राप्त होगा और ज्ञानसे सुख मिलेगा।

जो मनुष्य नेक काम करता है, अुसको अिस बात पर ध्यान रखना चाहिये कि वह अुसको कितनी डींगें हाकता है; क्योंकि मनुष्य अपनी अिच्छासे बहुत कम नेक काम करते हैं।

क्या मनुष्य किसी बाहरी अुत्तेजनासे नेक काम नहीं कर सकता? अनिश्चिततासे तो वह अुत्पन्न नहीं होता? दैवयोगसे तो प्रेरित नहीं है? अथवा किसी अन्य बात पर तो अुसकी हस्ती नहीं है? यदि हां, तो ये सब बातें तथा दैवयोग ही वास्तवमें स्तुतिके पात्र हैं, मनुष्य नहीं।

कोअी कार्य करनेका विचार करते समय जो अनिश्चय मनमें हुआ है, अुससे तू सावधान रह और फिर कार्य-सम्पादन करते समय आनेवाली अस्थिरतासे भी होशियार रह।

अैसा करनेसे ही तू अपनी प्रकृतिकी अिन दो महान दुर्बलताओं पर विजय प्राप्त कर पायेगा।

अुगत काम करनेसे बढ़कर तर्ककी निन्दा और क्या हो सकती है ... की दृढ़ताके सिवा अिस प्रवृत्तिको दबानेवाला कौन है?

अस्थिर मनुष्य यह तो अनुभव करता है कि मेरी स्थितिमें परिवर्तन हो रहा है; परन्तु वह अुसका कारण नहीं जानता। वह यह भी देखता है कि मैं खुद अपनी नजरसे भी बच जाता हूं; परन्तु यह नहीं जानता कि अैसा क्यों होता है। अिसलिअे जो बात ठीक है, अुचित है, अुसे करते समय अपने व्यवहारमें परिवर्तन न कर; तभी लोग तुझ पर विश्वास करेंगे।

तू कार्यके तत्त्वोंको अपने हृदयमें प्रतिबिम्बित कर और ठीक अुनके अनुसार बरताव कर। पहले यह जाच ले कि तेरे सिद्धान्त ठीक हैं; और फिर अुनका व्यवहार करते समय अुन पर अटल रह।

अिससे तेरे मनोविकार तुझ पर अपनी हुकूमत न चला सकेंगे। तेरी यह स्थिरता तुझे अपने गुणों, अपनी नेकियोंका निश्चय करावेगी और दुर्दैवको तेरे दरवाजेसे भगा देगी। फिर चिन्ता और निराशा तो तेरे घरका रास्ता तक न जानेंगी।

जब तक कि तू अपनी आंखों किसीकी बुराअीको न देख ले, अुसके बुरे होनेका संशय न कर, पर यदि अेक बार देख ले तो फिर अुसे न भूल।

जो दुश्मन रह चुका है वह मित्र नहीं हो सकता, क्योंकि मनुष्य अपने दोषोंका — बुराअियोंका — सुधार नहीं करता।

जिसने अपने जीवनके नियम ही स्थिर नहीं किये हैं, अुसके कार्य कैसे ठीक हो सकते हैं? जो बात सर्वसिद्ध नहीं है, वह ठीक नहीं हो सकती।

चंचल मनुष्यकी आत्माको शान्ति नहीं मिलती, और तो ठीक, अुसके मित्र और संबंधी भी अुसे आराम नहीं पहुंचा सकते। अुसका जीवन विषम और अुसकी गति अनियमित होती है। अुसका अन्तःकरण हवाके रुखके अनुसार बदलता रहता है।

आज वह तुझसे प्रेम करता है और कल ही तुझसे घृणा करने लगेगा। क्यों? यह खुद ही नहीं जानता कि किसलिअे अुसने तुझसे प्रेम किया और अब क्यों वह तुझसे नफरत करता है।

आज वह तुझ पर अत्याचार करता है, पर कल ही वह अितना नम्र हो जायगा कि तेरे नौकरकी नम्रता तुझे अुसकी नम्रतासे कम मालूम होगी, क्योंकि जो बिना अधिकारके घमण्डी है, वह अुन जगह भी अपनेको गुलामसे बढ़कर बना लेगा, जहां गुलामीका पता तक नहीं है।

आज वह अपव्ययी है; पर कल गिन गिनकर पैसा मुहमें रखेगा। जो परिमितताको नही पहचानता, अुसकी अैसी दशा क्यो न हो?

गिरगिट अभी काला दिखाअी देता है, पर दूसरे ही क्षण अुस पर हरे घासकी हरियाली छा जाती है। भला बता, अुसे काला कौन कह सकता है?

अस्थिर मनुष्यको कौन पसद कर सकता है, जब कि दूसरे ही क्षण अुसके मुहसे लम्बी सासें निकलने लगती है?

अैसे मनुष्यका जीवन स्वप्नके भूतके सिवा और क्या है? अगर प्रात.कालको वह प्रसन्नताके साथ अुठता है, तो दोपहरको वह काटोंकी सेज पर पड़ा हुआ दिखाअी देता है।

अभी अिस क्षण यदि वह देवता है, तो थोडी ही देरमें अेक तुच्छ कीडा दिखाअी देता है। कभी वह हसने लगता है और कभी रोने। कभी वह किसी बातकी अिच्छा करता है, और क्षणमे ही अनिच्छा प्रकट कर देता है; और थोडी ही देर बाद अुसे यह भी पता नही रहता कि मैं अिच्छा करता भी हूं या नही।

तो भी न आराम और न कष्ट अुसके पास ठहरते हैं। न तो अुसकी चिढ़ अधिक होती है, न कम। न अुसके पास हसीके लिअे कोअी कारण है, न दु.खके लिअे। अिसलिअे हर्ष या विषाद, कोअी भी अुसका साथ नही देते।

चंचल-चित्त मनुष्यका सुख बालू पर बनाये महलकी तरह है। हवाका अेक ही झोका अुसकी नीवको हिला देता है। फिर यदि वह गिर जाय तो आश्चर्य ही क्या!

पर यह कौनसी अुच्च और विशाल मूर्ति है, जो समान और बेरोक मार्ग बताती है, जिसका पैर पृथ्वी पर है और सिर बादलोंसे भी अूचा है?

भव्यता अुसकी भौंहो पर निवास करती है, अुसकी चाल-ढालमें स्थिरता और अुसके हृदयमें शान्तिका राज्य है।

विघ्न यद्यपि अुसके रास्तेमें पैदा होते हैं, पर वह अुनकी ओर देखता तक नही। चाहे तमाम पृथ्वी और आकाश क्यो न अुसके मार्गमें बाधा डालें २ बराबर बेरोक आगे बढ़ता चला जाता है।

पहाड़ अुसके कदमके नीचे दब जाते हैं, अुसके पैर पड़ते ही समुद्र सूख जाता है।

शेर अुसका रास्ता रोककर खडा हो जाता है, पर अुसकी दाल नहीं गलती। चीतेके पदचिह्न अुसके मार्गमें चमकते रहते हैं, पर वह अुनकी परवाह नही करता।

वह ठेठ लडती हुअी सेनाके बीच चला जाता है, और अपने हाथोंसे मृत्युके भयको हटाता जाता है।

तूफान अुसके कन्धो पर गरजता रहता है, परन्तु अुसे हिला तक नहीं सकता; मेघगर्जन अुसके सिरके आसपास हुआ करता है, परन्तु अुस पर कोअी असर नही होता, बिजली भी चमकती है, पर अिससे अुल्टा अुसीके मुख-मण्डलका तेज प्रकाशित होता है।

अुसका नाम है दृढ निश्चय! वह पृथ्वीके दूर-दूरके स्थानोंसे आता है, वह सुखको बहुत दूरसे अपनी आंखोंके सामने देखता है, अुसके नेत्र सुखके मन्दिरके दरवाजेको देख लेते है, फिर चाहे वह ध्रुव-प्रदेशके भी परे क्यो न हो!

वह मन्दिर तक जाता है और बेधडक अुसमें घुस कर सदा वहीं रहता है।

अतअेव भाअी! जो सत् है अुसीमें तू अपने अन्तःकरणको लगा। तब तुझे मालूम होगा कि स्थिरचित्त होना ही बडीसे बडी मानव-स्तुतिका पात्र होना है।

३. दुर्बलता

हे अपूर्णताकी सन्तान! जब तू घमण्डी और चचल है तब दुर्बलके सिवा और क्या हो सकता है? क्या चचलताका सबध दुर्बलतासे नहीं है? क्या अस्थिरताके बिना भी कहीं वृथा अभिमान हो सकता है? अिसलिअे तू अैसेके खतरेसे अपनेको बचा, जिससे तू दूसरेके अुपद्रवोंसे अपनेको मुक्त पा सके।

तू किस बातमें ज्यादा कमजोर है? तभी जब तुझे यह मालूम होता है कि मैं बहुत बडा बली हू, जब तू अपनेको बडा भारी गण्य-मान्य समझता है, जब तू अुन वस्तुओंको और भी अधिक प्राप्त करनेका प्रयत्न करता है जो तेरे पास है, और जब कि तू अपने नजदीककी अच्छी चीजोंसे लाभ अुठाता है।

क्या तेरी अभिलाषायें भी कमजोर नहीं है? या तू यह भी जानता है कि तू किस चीजको चाहता है? जिस चीजकी तू बडी चाहमें रहता है, अुसके मिल जाने पर तू पायेगा कि अरे, अुससे तो मुझे सन्तोष नहीं होता।

जो सुख तेरे सामने है, वह तुझे फीका क्यों मालूम होता है? और भावी वस्तु तुझे क्यों अधिक मीठी लगती है? क्योंकि प्रत्यक्ष सुखके सामने

आज वह अपव्ययी है; पर कल गिन गिनकर पैसा मुहमें रखेगा। जो परिमितताको नही पहचानता, असकी अैसी दशा क्यो न हो?

गिरगिट अभी काला दिखाओी देता है, पर दूसरे ही क्षण अस पर हरे घासकी हरियाली छा जाती है। भला बता, असे काला कौन कह सकता है?

अस्थिर मनुष्यको कौन पसद कर सकता है, जब कि दूसरे ही क्षण असके मुहसे लम्बी सासें निकलने लगती है?

अैसे मनुष्यका जीवन स्वप्नके भूतके सिवा और क्या है? अगर प्रातःकालको वह प्रसन्नताके साथ अुठता है, तो दोपहरको वह काटोकी सेज पर पड़ा हुआ दिखाओी देता है।

अभी अिस क्षण यदि वह देवता है, तो थोड़ी ही देरमें अेक तुच्छ कीड़ा दिखाओी देता है। कभी वह हसने लगता है और कभी रोने। क[illegible] वह किसी बातकी अिच्छा करता है, और क्षणमे ही अनिच्छा प्रकट [illegible] देता है; और थोड़ी ही देर बाद असे यह भी पता नही रहता कि अिच्छा करता भी हू या नही।

तो भी न आराम और न कष्ट असके पास ठहरते हैं। न तो अस[illegible] चिढ़ अधिक होती है, न कम। न असके पास हसीके लिअे कोओी कारण है, दु.खके लिअे। अिसलिअे हर्ष या विषाद, कोओी भी असका साथ नही देते।

चचल-चित्त मनुष्यका सुख बालू पर बनाये महलकी तरह है। हवा[illegible] अेक ही झोका असकी नीवको हिला देता है। फिर यदि वह गिर जाय [illegible] आश्चर्य ही क्या!

पर यह कौनसी अुच्च और विशाल मूर्ति है, जो समान और बे[illegible] मार्ग बताती है, जिसका पैर पृथ्वी पर है और सिर बादलोंसे भी अूचा है

भव्यता असकी भौंहो पर निवास करती है; असकी चाल-ढालमें स्थिर[illegible] और असके हृदयमें शान्तिका राज्य है।

विघ्न यद्यपि असके रास्तेमें पैदा होते है, पर वह अनकी ओर देख[illegible] तक नही। चाहे तमाम पृथ्वी और आकाश क्यो न असके मार्गमें बाधा डा[illegible] वह बराबर बेरोक आगे बढ़ता चला जाता है।

पहाड असके कदमके नीचे दब जाते हैं, असके पैर पड़ते ही समुद्र सूख जाता है।

शेर अुसका रास्ता रोककर खड़ा हो जाता है, पर अुसकी दाल नहीं गलती। कांटेके पदचिह्न अुसके मार्गमें चमकते रहते हैं, पर वह अुनकी परवाह नहीं करता।

वह टेउ लड़ती हुअी सेनाके बीच चला जाता है, और अपने हाथोंमें मृत्युके भयको हटाता जाता है।

तूफान अुसके कन्धों पर गरजता रहता है, परन्तु अुसे हिला तक नहीं सकता; मेघगर्जन अुसके सिरके आसपास हुआ करता है, परन्तु अुस पर कोअी असर नहीं होता, बिजली भी चमकती है पर अिससे अुलटा अुसीके मुख-मण्डलका तेज प्रकाशित होता है।

अुसका नाम है दृढ़ निश्चय! वह पृथ्वीके दूर-दूरके स्थानोंसे आता है, वह सुखको बहुत दूरसे अपनी आंखोंके सामने देखता है, अुसके नेत्र सुखके मन्दिरके दरवाजेको देख लेते हैं, फिर चाहे वह ध्रुव-प्रदेशके भी परे क्यों न हो!

वह मन्दिर तक जाता है और बेधड़क अुसमें घुस कर सदा वहीं रहता है।

अतअेव भाअी! जो सत् है अुसीमें तू अपने अन्तःकरणको लगा। तब तुझे मालूम होगा कि स्थिरचित्त होना ही बड़ीसे बड़ी मानव-स्तुतिका पात्र होता है।

३. दुर्बलता

हे अपूर्णताकी सन्तान! जब तू घमण्डी और चचल है, तब दुर्बलके सिवा *और क्या हो सकता है? क्या चचलताका सबध दुर्बलतासे नहीं है? क्या* अस्थिरताके बिना भी कहीं वृथा अभिमान हो सकता है? अिसलिअे तू अेकके खतरेसे अपनेको बचा, जिससे तू दूसरेके अुपद्रवोंसे अपनेको मुक्त पा सके।

तू किस बातमें ज्यादा कमजोर है? तभी जब तुझे यह मालूम होता है कि मैं बहुत बड़ा बली हूं, जब तू अपनेको बड़ा भारी गण्य-मान्य समझता है, जब तू अुन वस्तुओंसे और भी अधिक प्राप्ति करनेका प्रयत्न करता है जो तेरे पास हैं; और जब कि तू अपने नजदीककी अच्छी चीजोंसे लाभ अुठाता है।

क्या तेरी अभिलाषायें भी कमजोर नहीं हैं? या तू यह भी जानता है कि तू किस चीजको चाहता है? जिस चीजकी तू बड़ी खोजमें रहता है, *अुसके मिल जाने पर तू पायेगा कि अरे, अुससे तो मुझे सन्तोष नहीं होता।*

जो सुख तेरे सामने है, वह तुझे फीका क्यों मालूम होता है? और भावी वस्तु तुझे क्यों अधिक मीठी लगती है? क्योंकि प्रत्यक्ष सुखके लाभोंसे

तू घबरा अुठा है, और तू नही जानता कि जो वस्तु अभी तेरे पास नही है अुसमे क्या क्या दोष हैं।

'सन्तोषमे ही सुख है', अिस मंत्रको याद रख। क्या तू अपना निर्णय आप कर पाया है? क्या वह सिरजनहार तुझे तेरी तमाम अभिलषित वस्तुअें ला देगा? क्या अुस अवस्थामे सुख तेरे पास रह सकेगा? या क्या आनन्द तेरे दरवाजे सर्वदा टिका रहेगा?

अफसोस! तेरी दुर्बलता अुसे रोकती है। तेरी अस्थिरता अुसके खिलाफ फतवा देती है। आनन्दके बजाय तुझे विविधताके दर्शन होते हैं, लेकिन चिरस्थायी सुख तो चिरस्थायी वस्तुसे ही मिल सकता है।

जब वह सुख नष्ट हो जाता है, तब तू अुसके अभाव पर सिर पीटता है; परन्तु जब तक वह तेरे पास था, तू अुससे दूर भागता रहा।

अुसके स्थान पर जो वस्तु तुझे मिली है अुससे तुझे अधिक काल तक आनन्द नही मिलता, और बादको तू अपने ही दिलको कोसता है कि मैंने अुसे क्यो अच्छा समझ लिया। अतअेव केवल अैसी ही स्थिति पर दृष्टि रख, जिसमे तुझसे गलती न होने पावे।

किसी वस्तुकी अभिलाषा करनेके अलावा और भी कोअी अैसी वस्तु है, जिसमे तेरी दुर्बलता अधिक स्पष्ट रूपसे दिखाअी देती हो? हा, है; और वह है वस्तुओका सग्रह करना और अुनका अुपयोग करना।

जब हम अच्छी वस्तुओंका अुपभोग करने लगते हैं, तब अुनका अच्छापन चला जाता है। प्रकृतिने जिन्हें शुद्ध और मधुर बनाया है वे हमारे लिअे कटुताका कारण हो जाते हैं। हमारे आनन्द और हर्षसे कष्ट और दु:ख अुत्पन्न होता है।

अिसलिअे अपने सुख-भोगको अेक सीमामे रख; अिससे वह अधिक समय तक तेरे पास रह सकेगा। तर्कको अपने हर्षका आधार बना, जिससे हर्षका अन्त होने पर दु:ख तेरे लिअे अेक परकीय वस्तु हो जायगी।

प्रेमके आनन्दका आरंभ आहोंके साथ होता है, और अन्त दु:ख और खिन्नताके साथ। जिस वस्तुके लिअे तू व्याकुल था अुससे तेरा जी अघा जाता है; और वह तेरे पास आअी कि अुसको देखते ही तेरा जी अूब जाता है।

प्रशंसाके साथ आदर भी प्राप्त कर; प्रेमके साथ मित्रताका मिलान कर, अिससे अन्तमें तुझे अितना — पूर्ण — सन्तोष होगा जो अत्यानन्दसे बढकर होगा। और अितनी शान्ति मिलेगी जो ब्रह्मानन्दसे भी अधिक होगी।

परमात्माने जो अच्छी बातें तुझे दी है, वे बुराअीसे खाली नही है; परन्तु साथ ही अुसने अुस बुराअीको निकाल डालनेके साधन भी तुझे प्रदान किये हैं।

जैसे हर्ष दु:ख-रहित नही है, वैसे ही दु:ख भी बिना थोडे-बहुत आनन्दके नही है। सुख-दु:ख दोनो यद्यपि अेक-दूसरेसे भिन्न है तथापि वे अेक-दूसरेसे मिले हुअे हैं; अुनमें से किसको पाना और किसको नहीं, यह पूर्णतः हमी पर अवलबित है।

बहुत बार तो स्वय विषाद ही हमें आनद देता है, और हमारे आनन्दके अतिरेकमें आसू छिपे रहते है।

अज्ञानीके हाथमें यदि अच्छीसे अच्छी वस्तु हो, तो भी वह अुसके द्वारा अपना विनाश कर बैठता है, और बुद्धिमान मनुष्य बुरीसे बुरी चीजसे भी अच्छा नतीजा निकाल लेता है।

सो, हे मनुष्य, तेरे जीवनमें अितनी कमजोरी भरी हुअी है कि तुझमें न तो पूरा सज्जन बननेकी और न पूरा दुर्जन बननेकी शक्ति है। बस, तू अिसी बात पर आनन्द मना कि तू दुर्जनताकी सीमा तक नहीं पहुच सकता है, और तेरे पास जो सज्जनता है अुसी पर सन्तोष मान।

सद्गुणका निवास भिन्न-भिन्न स्थितियो और स्थानोंमें है। अिसलिअे जो बात अशक्य है अुसके पीछे न पड। और यदि तू तमाम सद्गुणोंको प्राप्त न कर सकता हो तो अफसोस न कर।

क्या तू चाहता है कि धनवानोका-सा औदार्य और दीनोंका-सा सतोष तुझमें अेक ही साथ आ जाय? अथवा यदि तेरी हृदय-देवीमें वे सद्गुण न हो, जो विधवाओंमें दिखाअी देते हैं, तो क्या तू अुसका तिरस्कार करेगा?

यदि तेरे पिता तेरे देशमें फूट फैलानेमें निमग्न हो जाय, तो क्या तेरी न्यायबुद्धि अुनका अस्तित्व मिटा देगी और तेरी कर्तव्यबुद्धि अुन्हें बचा लेगी?

यदि तेरा भाअी मन्द मृत्युकी पीडासे व्यथित हो, तो अुसके जीवनकी अवधिको बढाना क्या दया नहीं है? और क्या अुसकी हत्या कर डालना मृत्यु नहीं है?

सत्य केवल अेक है, तेरे सशय तेरी अपनी ही कल्पनाओंकी अुपज है। जिसने सद्गुणोंको अुनके वर्तमान रूपमें निर्माण किया है, अुसने तुझे अुनकी श्रेष्ठताका ज्ञान भी दिया है। अिसलिअे अपनी आत्माके सकेतके अनुसार चल। अिसका फल सदा अच्छा ही होगा।

४. ज्ञानकी अपर्याप्तता

वह कौनसी वस्तु है जो प्रिय है, जो वाञ्छनीय है, जो मनुष्यकी पहुंचके अंदर प्रशसनीय है? क्या वह ज्ञान नही है? पर फिर भी अैसा कौन है, जो अुसका सम्पादन करता है?

राजकाजी लोग पुकार कर कहते हैं कि ज्ञान हमारे पास है। राजा भी अपने ज्ञानकी प्रशसा पानेका दावा करता है; किन्तु क्या प्रजाजन अिस बातकी साक्षी देते हैं?

बुराअी मनुष्यके लिअे आवश्यक वस्तु नही है और न पापको सहन करना ही आवश्यक है। तिस पर भी कानूनकी आनाकानी करनेसे कितनी बुराअियां होती है? और कौंसिलोंके निर्णयसे कितने अपराध होते हैं?

अिसलिअे हे राजा! तू बुद्धिमानीसे काम ले। यदि तू अनेक राष्ट्रों पर शासन करना चाहता हो, तो तुझे याद रखना चाहिये कि तेरा अेक अपराध करनेकी सजा दे देना अुन दस अपराधोंसे अधिक बुरा है जो तेरे दण्डसे बच जाते हैं।

जब तेरे प्रजाजनोंकी सख्या बहुत बढ जाती है, और जब तेरे साथ भोजन करनेवाले तेरे साथी भी बहुत हो जाते हैं, तब क्या तू अुन्हे निर-पराध मनुष्योंका सहार करनेके लिअे नही भेजता है? और क्या तू अुन्हें अुस मनुष्यकी तलवारका शिकार होनेके लिअे नही प्रेषित करता, जिसका अुन्होंने कुछ भी नही बिगाडा था?

यदि तेरी अभीष्ट सिद्धिके लिअे तेरे हजारों पुत्रतुल्य प्रजाजनोंको प्राण देना पडते हो, तो अुस समय क्या तू यह नही कहता कि 'यह काम तो होना ही चाहिये।' अुस समय निश्चय ही तू भूल जाता है कि जिस परमात्माने तुझे पैदा किया है, अुसीने अुन्हें भी पैदा किया है; और अुनका खून भी अुतना ही मूल्यवान है जितना कि तेरा है।

क्या तेरा यह कहना है कि अन्याय किये बिना न्याय प्रदान नहीं किया जा सकता? यदि हां, तो निश्चय रख कि अपने अिन शब्दोंके द्वारा तू स्वय अपनी ही निन्दा करता है। यदि तू झूठी आशायें दिलाकर दोषीकी आत्माको फुसलाता है, जिससे वह अपना दोष स्वीकार कर ले, तो क्या तू अुसके प्रति दोषी नही है? या क्या तेरा दोष अुससे अिसलिअे कम है कि ० तुझे सजा नहीं दे सकता?

जब तू बुरा करनेके सन्देह मात्र पर किसीको कष्ट पहुचानेका हुक्म देता है, तब क्या तू यह खयाल कर सकता है कि 'निर्दोष भी मेरे हाथों पीड़ित हो सकते हैं?'

क्या अिस बातसे तेरे अुद्देश्यकी पूर्ति होती है? क्या अुसके स्वीकार कर लेनेमें तेरी आत्माको सन्तोष हो जाता है? यन्त्रणायें अुससे जबरन् अुतनी ही आसानीसे वे बातें कहलवा लेंगी जो कि हुअी नही हैं, जितनी आसानीसे वे बातें कहलवा लेंगी जो हुअी हैं। और मनोव्यथा तो स्वय निरपराधताकी मूर्तिको भी दोषी बना देती है।

यदि फासीके योग्य कारण हो तो तू अुसे फासी भी दे सकता है, पर तू तो फासीसे भी बढ़कर बुरा काम करता है। यदि वह अपराधी हो तो तू अुसका अपराध साबित कर सकता है, पर तू तो अुसके निरपराध होते हुअे भी अुसका नाश कर डालता है।

हे सत्यसे आखें मूदनेवाले, हे अधूरी बुद्धि और ज्ञान रखनेवाले समझदार! जब तेरा न्यायाधीश तुझे अिसके लिअे कारण बतानेकी आज्ञा करेगा, तब तू यह चाहेगा कि चाहे दस हजार अपराधी भले ही छूटकर चले जाय, पर निरपराध मनुष्य अेक भी मेरे खिलाफ खडा न हो।

जब तू न्यायकी रक्षा करनेमें पूरी तरह समर्थ नही है, तब तुझे सत्यका ज्ञान किस तरह होगा? तू कैसे सत्यके सिंहासनके सोपान पर चढ सकेगा?

जिस प्रकार सूर्यके तेजसे अुल्लूकी आखें अन्धी हो जाती हैं, अुसी प्रकार सत्यके मुख-मण्डलकी कान्ति तेरे अुसके सामने पहुचते ही तुझे चकाचौंध कर देगी।

यदि तू अुसके सिंहासन तक पहुचना चाहे, तो पहले अुसके पदासनको नमन कर; यदि तू अुसके ज्ञानको प्राप्त करना चाहे, तो पहले स्वय अपने अज्ञानको पहचान।

सत्यका मूल्य रत्नोंसे भी अधिक है। अिसलिअे अुसकी खोज बडी चिन्ताके साथ कर। ये पुखराज, अिन्द्रनील और लाल तो अुसके पैरोंकी धूलके समान हैं। अिसलिअे अेक पुरुषार्थीकी तरह अुसको पानेका अुद्योग कर।

अुस तक पहुचनेका मार्ग है—परिश्रम। ध्यान अुसका नाविक है, जो तुझे अुसके बन्दरगाह तक निश्चयपूर्वक ले जायगा। परन्तु रास्तेमें अुकता

न जाना — थक न जाना। क्योंकि जब तू अुसके पास पहुंच जायगा, तब मार्गके तेरे सब कष्ट आनन्दमें बदल जायेंगे।

देख, अपने मनमें यह न सोच कि सत्यसे घृणा अुत्पन्न होती अिसलिअे मैं अपनेको सत्यसे दूर ही रखूंगा; और छल-कपटसे मित्रता है, अिसलिअे मैं अुसको ग्रहण करूंगा। क्या चापलूसीके द्वारा प्राप्त मि अपेक्षा सत्यके द्वारा बनाये गये शत्रु अच्छे नहीं हैं?

मनुष्य स्वभावतः सत्यको चाहता है; तो भी जब वह अुसके स आ जाता है, तब वह अुसे पहचान नहीं पाता। और यदि सत्य स्वयं ज अुसके पास जाय, तो क्या वह अुस पर बिगड नहीं बैठता?

परन्तु अिसमें सत्यका दोष नहीं। वह तो मनोरम है। परन्तु मनु दुर्बलता अुसके तेजको सहन नहीं कर सकती।

क्या तू अपनी अपूर्णताको और भी स्पष्ट रूपमें देखना चाहता तो तू अपने अन्तःकरणको अुस समय जांच, जब तू पूजा-अर्चाके लिअे हो। धर्मका अुद्देश्य क्या है? केवल मनुष्यको अपनी दुर्बलताका ज्ञान करा अपनी कमजोरियोंकी याद दिलाना, और यह दिखलाना कि सिर्फ स्व ही तुझे अच्छी बातोंकी आशा करनी चाहिये।

क्या धर्म तुझे याद नहीं दिलाता कि तू पार्थिव है, मिट्टीका पु है और राखमें मिल जाना है? और पश्चात्तापको देख; क्या वह दुर्बलता बुनियाद पर नहीं खड़ा है?

जब तू किसीको कसम देता है और खुद भी कसम खाता है कि किसीको धोखा न दूंगा; तो देख, यह तेरे और अुसके दोनोंके लिअे शर्म बात है। न्यायशील मन, जिसमें अनुताप करना भूल जाय। आनन्द मन, जिसमें तुझे कसमें खानेकी जरूरत ही न रहे।

मूर्खता जितनी कम हो अुतना ही अच्छा है। अिसलिअे तू यह सोच कि मैं थोड़ी-थोड़ी मूर्खता न करूंगा।

जो अपने अपराधोंकी कहानी धैर्यके साथ सुनता है, वही दूसरोंके आरोप पर शान्तिके साथ विचार कर सकता है।

जो किसी बातको सहारन अस्वीकार करता है, वह अपनी ... के साथ सहन करता है।

यदि कोजी तुझ पर व्यर्थ ही सशय करे, तो तू बेधडक होकर अुसका अुत्तर दे; सिवा अपराधीके सशय दूसरे किसको डरा सकता है?

कोमल-हृदय मनुष्य तो अनुनय-विनयसे अपने आग्रहको कम कर देता है; परन्तु अहकारी मनुष्य नम्र वचनोंसे और भी अधिक दुराग्रही हो जाता है। तेरी अपूर्णता तुझसे कहती है कि तू सबकी बात सुन; परन्तु यदि तू न्यायी होना चाहता है, तो तुझे चाहिये कि जो कुछ सुने अुसे विकारहीन होकर गुन।

५ विपत्ति

हे मनुष्य, सज्जनतामें तू दुर्बल और अपूर्ण है, आनन्दमें तू अशक्त और चचल है। पर हा, अेक वस्तु अैसी है जिसमें तू बडा प्रबल, चिर-स्थायी और अचल है। अुसका नाम है विपत्ति।

यह तेरे जीवनका विशेष गुण है, तेरी प्रकृतिका विशेष अधिकार है; तेरे हृदयमें ही अिसका निवास है, तेरे बिना वह कोओी चीज नही; और देख तो, सिवा तेरे मनोविकारोंके अुसका अुद्गम और क्या है?

जिसने तेरे अन्तरमें मनोविकार अुत्पन्न किये है, अुसने तुझे अुनको अपने वशमें करनेके लिअे तर्कशक्ति भी दी है। अुसे काममें ला और वे तेरे वशवर्ती हो जायगे।

ससारमें तेरा प्रवेश क्या शर्मकी बात नही है? क्या मृत्यु गौरवयुक्त नही है? देख तो, लोग मृत्युके शस्त्रास्त्रोंको सुवर्ण और रत्नसे सुसज्जित करते है और अुन्हे पहनते है।

जो मनुष्य अेक मनुष्यको जन्म देता है, अुसे अपना मुह छिपाना पडता है; परन्तु जो सहस्रोंका सहार करता है, वह जगह-जगह आदर पाता है।

पर यह भूल है। सत्यके स्वभावको रूढि बदल नही सकती और न अेक मनुष्यकी राय न्यायका अुन्मूलन कर सकती है। जो बात गौरवके योग्य है वह लज्जाजनक समझी जाती है, और जो लज्जायुक्त है वह गौरवपूर्ण। गौरव और लज्जा भूलसे अेक-दूसरेकी जगह रख दिये गये है।

मनुष्यके जन्मका मार्ग केवल अेक है, परन्तु अुसके विनाशके हजारों मार्ग है।

जो दूसरे प्राणियोंको जन्म देता है अुसका मान और प्रशसा कही नही होती; परन्तु हिंसा-काण्डका पुरस्कार मिलता है विजय और साम्राज्यके रूपमें।

चिन्तन-मनन करना मनुष्यका कार्य है; अपनी स्थितिका ध्यान या ज्ञान रखना अुसका पहला कर्तव्य है। परन्तु हर्षकालमें कौन अपनी दशाका ध्यान रखता है? तब क्या यह औश्वरकी दया नहीं है कि अुसने हमारे नसीबमें दुःख लिख दिया है?

मनुष्य आनेवाले संकटकी कल्पना पहलेसे ही कर लेता है, और जब वह चला जाता है तब अुसको याद किया करता है। पर वह नहीं समझता कि दुःखकी कल्पना प्रत्यक्ष दुःखकी अपेक्षा अधिक कष्टदायिनी होती है। अिसलिअे जब तक दुःख तेरे पास न आ जाय, तू अुसका विचार ही न कर। अिससे तू अत्यधिक दुःखसे बचा रहेगा।

जो आवश्यकताके पहले ही रोता है, अुसे आवश्यकतासे अधिक रोना पड़ता है। यह क्यों? अिसलिअे कि अुसे रोनेसे प्रेम है।

बारहसिंगा तब तक नहीं चिल्लाता जब तक कि शिकारी अुस पर निशाना नहीं ताकता। और न बीवर*की आखोंसे आंसू ही गिरते हैं, जब तक कि शिकारी कुत्ते अुस पर झपटने न लगें। मनुष्य मृत्युकी आशासे ही अुसकी बाट जोहता रहता है। क्योंकि डर खुद प्रत्यक्ष घटनासे भी अधिक दुःखदायी होता है।

अपने कार्योंका हिसाब देनेके लिअे तू सदा तैयार रह। क्योंकि सबसे श्रेष्ठ मृत्यु वह है जिसका ध्यान पहलेसे प्रायः न किया गया हो।

६. निर्णय

मनुष्यको परमात्माने जो सबसे बड़ा वरदान दिया है, वह है निर्णय-शक्ति और संकल्प-शक्ति। वही मनुष्य गुणी है जो अिनका दुरुपयोग नहीं करता।

पहाड़से नीचे गिरनेवाले झरनोंका प्रवाह अपनेमें गिरनेवाली प्रत्येक वस्तुको बरबाद कर देता है; अुसी प्रकार लोकमत अुस मनुष्यके तर्कको घबराहटमें डाल देता है, जो यह देखे बिना अुसके आगे सिर झुका देता है कि अिस बातका मूल क्या है।

अिस बात पर ध्यान रख कि जिसे तू सत्य समझकर ग्रहण करता है, वह खरी सत्यका आभासमात्र न हो। क्योंकि जिस वस्तुको तू निरचनानक

* अेक जल और थलचर प्राणी।

समझता है यह अक्सर धोखेकी टट्टी होती है। अिसलिअे दृढ़ता कर, स्थिरचित्त हो और अपना निश्चय गुद कर, जिससे तुझे स्वय ही दुर्बलताका अुत्तर देना पड़े।

यह न कह कि परिणामसे कार्यका औचित्य सिद्ध होता है; रख कि मनुष्य दैवयोगकी पहुचके परे नहीं है।

किसीका निर्णय यदि तेरे निर्णयसे न मिलता हो, तो अिसके अुसकी निन्दा न कर। क्या दोनोंके निर्णयमें गलती नहीं हो सकती?

जब तू किसी मनुष्यको अुसकी अुपाधियोंके कारण आदरकी देखता है, और किसी अपरिचित मनुष्यका तिरस्कार अिसलिअे कर कि वह अुन अुपाधियोंसे वचित है, तो क्या अिस दशामें तू अूटका अ अुसकी नकेलसे नहीं करता है?

जब तू अपने शत्रुका वध करता है, तब यह न समझ कि तूने बदला लिया है; क्योंकि तू तो अुसे अैसी जगह पहुचा देता है जहा पहुच ही नहीं हो सकती—तू तो अुसे शान्ति दिला देता है; और दु:ख देनेके लिअे जो साधन तेरे पास थे, वे यो ही रखे रह जाते

क्या तेरी माता व्यभिचारिणी थी और क्या तुझे यह बात सु दु:ख होता है? क्या तेरे हृदयकी रानी—तेरी पत्नी चचल है, क्या अुसकी निन्दा सुनकर तुझे व्यथा होती है? पर अिसके कारण लोग तुझसे घृणा करते हैं, वे मानो स्वय अपना ही तिरस्कार करते क्या दूसरेके दुराचारोंके लिअे तू जवाबदेह है?

किसी रत्नकी केवल अिसलिअे अवहेलना न कर कि वह तेरे है; और न किसी वस्तुको अिसलिअे विशेष मूल्यवान समझ कि दूसरेकी है। वस्तुका मूल्य तो सुयोग्य मनुष्यके पास रहनेसे बढ़ता है

अिसलिअे कि तेरी धर्मपत्नी तेरी वशवर्तिनी है, तू अुसका अ कम न कर; और अैसे व्यक्तिसे दूर रह जो यह कहता हो कि ' प्रेम करना चाहता हो तो अिससे शादी कर।' भला बता तो वस्तु है, जिसके कारण अुसने अपना हृदय तुझे अर्पण किया सद्गुणोंके प्रति अुसका विश्वास। तो क्या तुझे अिसीलिअे अ करना चाहिये कि तू अुसका अधिक कृतज्ञ है?

यदि तूने अुचित रूपमें अुसका प्रेम सपादन किया हो, तो जब तक वह तेरे पास है तब तक तू भले अुसकी अुपेक्षा करे, पर अुसका वियोग तेरी आत्माको व्यथित किये बिना नही रहेगा।

यदि कोअी मनुष्य किसीको केवल अिसलिअे भाग्यवान समझता है कि तुझे अैसी पत्नी प्राप्त है, तो चाहे वह तुझसे अधिक समझदार न हो, परन्तु कमसे कम अधिक सुखी अवश्य है।

अपने मित्रकी हानिका अदाज अुसके आसुओमे न लगा; क्योकि आत्यन्तिक विपाद तो बाहरी चिह्नोके द्वारा प्रकट ही नही हो सकता।

यदि कोअी काम बडी धूमधाम और समारोहके साथ किया जाय, तो अुसको महत्त्वकी दृष्टिमे न देख, क्योकि अूची आत्मा वह है जो कार्य तो बडेसे बडा करती है, परन्तु अुसे करते समय दिखावेके मोहमें नही फसती।

कीर्तिमे अुसके कानको कुतूहल होता है जो अुसे सुनता है, परन्तु शाति तो स्वय अुसी मनुष्यके हृदयको आह्लाद देती है जिसमें अुसका निवास होता है।

दूसरेके सत्कार्यों पर बुरे भावोका आरोप न कर, क्योकि तू अुसके हृदयको नही परख सकता। पर हा, अैसा करनेसे ससार यह जान जायगा कि तेरा हृदय अीर्ष्यासे भरा हुआ है।

धूर्त होना मूर्ख होनेकी अपेक्षा अधिक बुरा नही है। परन्तु अीमानदार बनना अुतना ही आसान है जितना कि अीमानदार दिखाअी देना।

हानिका बदला लेनेकी अपेक्षा तू नेकीका अुपकार माननेके लिअे अधिक तैयार रह; जिससे तुझे हानिकी अपेक्षा लाभ ही अधिक होगा।

घृणाकी अपेक्षा प्रेम करनेमें अधिक तत्पर रह, अिससे लोग घृणाकी अपेक्षा तुझसे प्रेम अधिक करेंगे।

स्तुति करनेकी अुत्सुकता रख, पर निन्दा करनेमें आतुरता न दिखा। जिससे तेरे सद्गुणोकी प्रशसा होगी और तेरे शत्रुओकी आखें तेरी त्रुटियोको नहीं देख सकेंगी।

जब तू अच्छा काम करे तो अिसीलिअे कर कि वह अच्छा है, अिसलिअे नही कि लोग अुसे पसन्द करते हैं। जब तू बुरी बातसे बचे तो अिसलिअे बच कि वह बुरी है, अिसलिअे नही कि लोग अुसे बुरा कहते हैं। अीमानदारीके प्रेमके कारण अीमानदार बन, जिससे तू भीतर-बाहर सब कही अीमानदार हो जाय। जो बिना अुसूलके अीमानदार बनता है वह कहीका नहीं रहता।

हे मनुष्य, तुझे अपने अिन पापोकी सजा अब तक क्यो नही मि
अिसलिअे कि अभी अुसका समय नही आया है।

तू अुन आदमियोका अनुकरण न कर, जो सृष्टिकर्तासे न्याय
लिअे अुसकी सृष्टिसे झगडा करते है, और न अिसलिअे तू अुसका भ
छोड कि वह तुझे दण्ड देता है। यदि अैसा करेगा, तो यह तेरा ही
पन कहा जायगा। तेरे बुरे कामोका फल अकेले तुझीको भुगतना होग

जब तक मनुष्य अीश्वरके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करनेकी
नही करता, तब तक वह अपनेको अुसका प्रीतिपात्र क्यों कहता है
दृढ़ विश्वासके साथ अैसा जीवन किस तरह निभ सकता है?

मनुष्य अिस ब्रह्माण्डमें सचमुच अेक कणके बराबर है। तब
समझता है कि यह स्वर्ग और मृत्युलोक मेरे लिअे बनाये गये हैं। वह
है कि अिस सारी सृष्टिका खास सबध मेरे हितसे है।

वृक्षों, मकानो और क्षितिजकी आकृतियोको जलके पृष्ठभाग प
हुअे देखकर मूर्ख मनुष्य समझता है कि ये मुझे आनन्दित करनेके लिअे न
हैं। अुसी तरह मनुष्य, जब प्रकृति अपना निश्चित कार्य करती है, यह
है कि अुसकी ये सारी हरकतें मेरी आखोको सुख देनेके लिअे हो रही

जब वह धूप और गरमी पानेके लिअे सूर्य-किरणोंकी अुपासना क
तब वह कल्पना करता है कि सूर्य मेरे ही अुपयोगके लिअे बनाया ग
और जब वह चन्द्रमाको अपने निशीथ-पथमे भ्रमण करता हुआ देखता
मानता है कि यह मुझे आनन्द पहुचानेके लिअे अुत्पन्न किया गया है

अरे, अपने अभिमानको न समझनेवाले मूर्ख, नम्र बन। विश्वकी
जो नियमित रूपसे अपना कार्य करती है, अुसका कारण तू नही है
ग्रीष्म और शरदका आवागमन तेरे लिअे नही बनाया गया है।

यदि सारे मानव-वशका अस्तित्व खतम हो जाय, तो भी अिस स
विधिमें कुछ परिवर्तन नही होगा। तू अुन करोड़ो प्राणियोंमें से
प्राणी है, जिन्हें संसारमें यह कृपा-प्रसाद मिला है।

यह न समझ कि मैं स्वर्गसे भी अूचा हू; क्योंकि देख, गोला
भी अूपर हैं। और न तू अपने पृथ्वीके सहवासियोंको नीची नि
अिसलिअे कि वे तुझसे नीचे हैं। क्या अुनी अीश्वरके हाथोंसे
नहीं हुअी है?

यदि तू भगवानकी दयासे सुखी है, तो क्या तू अपने सुखोपभोगके लिअे अुस परमात्माकी सृष्टिके दूसरे प्राणियोंको दुख देनेका साहस कर सकता है? याद रख, कहीं लेनेके देने न पड जाय!

क्या ये सब तेरे साथ अुसी विश्वात्माकी सेवा नहीं करते हैं? क्या अुसने हरअेकके लिअे नियम निश्चित नहीं कर दिये हैं? क्या अुनकी रक्षाकी चिन्ता अुसे नहीं है? और क्या तू अुसकी आज्ञाका अुल्लंघन करनेकी धृष्टता कर सकता है?

अपने विचार या निर्णयको तू दुनियाके विचार या निर्णयसे बढ़कर न मान। और जो बात तेरी धारणाके प्रतिकूल हो, अुसे असत्य न मान, और न अुसकी निन्दा कर। दूसरोंके लिअे निश्चय करनेका अधिकार तुझे किसने दिया है? या दुनियासे चुनने और पसन्द करनेका अधिकार किसने छीन लिया है?

अैसी कितनी ही बातें त्याज्य मानी जा चुकी हैं जो अब सत्य समझी जाती हैं। कितनी ही अैसी बातें, जो आज सत्य समझी जाती हैं, आगे चलकर घृणित मानी जाने लगेंगी। तब भला मनुष्य किस बात पर कायम रह सकता है?

जिस बातको तू अच्छा समझता हो अुसे कर। जिससे तुझे सुख प्राप्त होगा। जिस संसारमें बुद्धिकी अपेक्षा सद्गुण प्राप्त करना तेरा अधिक कर्तव्य है।

जिन बातोंको हम समझ नहीं पाते, अुनमें सत्य और असत्यका स्वरूप क्या अेकसा नहीं होता? अैसी दशामें सिवा हमारे विश्वासके अुसका निश्चय कौन कर सकता है?

जो बात हमारी धारणासे परे है, अुस पर हम आसानीसे विश्वास कर लेते हैं; या हम अुस पर विश्वास करनेका ढोंग रचते हैं, जिससे लोग यह समझें कि हम अुस बातको जानते हैं। क्या यह मूर्खता और वृथाभिमान नहीं है?

अैसा कौन है, जो बडे साहसके साथ 'हां' कह सकता है? अैसा कौन है, जो अपनी ही बातको सब-कुछ समझता है? केवल वृथाभिमानी, केवल महा अहंकारी।

प्रत्येक मनुष्य, जब वह अेक राय बनाता है, यह चाहता है कि अुस पर कायम रहे; परंतु जो बडा अहंकारी होता है, वह सबसे अधिक अैसा करता है। जिसमें वह खुद अपनी आत्माको धोखा देनेसे ही संतुष्ट नहीं होता, बल्कि दूसरोंको भी अुस पर विश्वास रखनेके लिअे मजबूर करता है।

हे मनुष्य, तुझे अपने अिन पापोंकी सजा अब तक क्यों नहीं मिली है? अिसलिअे कि अभी अुसका समय नहीं आया है।

तू अुन आदमियोंका अनुकरण न कर, जो सृष्टिकर्तासे न्याय करानेके लिअे अुसकी सृष्टिसे झगड़ा करते हैं, और न अिसलिअे तू अुसका भक्तिभाव छोड कि वह तुझे दण्ड देता है। यदि अैसा करेगा, तो यह तेरा ही पागलपन कहा जायगा। तेरे बुरे कामोंका फल अकेले तुझीको भुगतना होगा।

जब तक मनुष्य औश्वरके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करनेकी परवाह नहीं करता, तब तक वह अपनेको अुसका प्रीतिपात्र क्यों कहता है? अैसे दृढ़ विश्वासके साथ अैसा जीवन किस तरह निभ सकता है?

मनुष्य अिस ब्रह्माण्डमें सचमुच अेक कणके बराबर है। तब भी वह समझता है कि यह स्वर्ग और मृत्युलोक मेरे लिअे बनाये गये हैं। वह मानता है कि अिस सारी सृष्टिका खास संबंध मेरे हितसे है।

वृक्षों, मकानों और क्षितिजकी आकृतियोंको जलके पृष्ठभाग पर नाचते हुअे देखकर मूर्ख मनुष्य समझता है कि ये मुझे आनन्दित करनेके लिअे नाच रहे हैं। अुसी तरह मनुष्य, जब प्रकृति अपना निश्चित कार्य करती है, यह मानता है कि अुसकी ये सारी हरकतें मेरी आंखोंको सुख देनेके लिअे हो रही हैं।

जब वह धूप और गरमी पानेके लिअे सूर्य-किरणोंकी अुपासना करता है, तब वह कल्पना करता है कि सूर्य मेरे ही अुपयोगके लिअे बनाया गया है, और जब वह चन्द्रमाको अपने निशीथ-पथमें भ्रमण करता हुआ देखता है, तो मानता है कि यह मुझे आनन्द पहुंचानेके लिअे अुत्पन्न किया गया है।

अरे, अपने अभिमानको न समझनेवाले मूर्ख, नम्र बन। विश्वकी दृष्टि जो नियमित रूपसे अपना कार्य करती है, अुसका कारण तू नहीं है। यह ग्रीष्म और शरदका आवागमन तेरे लिअे नहीं बनाया गया है।

यदि सारे मानव-वंशका अस्तित्व खतम हो जाय, तो भी अिस संसारकी गति-विधिमें कुछ परिवर्तन नहीं होगा। तू अुन करोड़ों प्राणियोंमें से केवल अेक प्राणी है, जिन्हें संसारमें यह कृपा-प्रसाद मिला है।

यह न समझ कि मैं स्वर्गसे भी अूंचा हूं; क्योंकि देख, गोलोकवाले तुझसे भी अूपर हैं। और न तू अपने पृथ्वीके सहवासियोंको नीची निगाहसे देख — अिसलिअे कि वे तुझसे नीचे हैं। क्या अुसी औश्वरके हाथोंसे अुनकी रचना नहीं हुअी है?

यदि तू भगवानकी दयासे सुखी है, तो क्या तू अपने सुखोपभोगके लिअे अुस परमात्माकी सृष्टिके दूसरे प्राणियोंको दुःख देनेका साहस कर सकता है? याद रख, कहीं लेनेके देने न पड जायँ!

क्या ये सब तेरे साथ अुसी विश्वात्माकी सेवा नही करते है? क्या अुसने हरअेकके लिअे नियम निश्चित नहीं कर दिये है? क्या अुनकी रक्षाकी चिन्ता अुसे नहीं है? और क्या तू अुसकी आज्ञाका अुल्लघन करनेकी धृष्टता कर सकता है?

अपने विचार या निर्णयको तू दुनियाके विचार या निर्णयसे बढकर न मान। और जो बात तेरी धारणाके प्रतिकूल हो, अुसे असत्य न मान, और न अुसकी निन्दा कर। दूसरोंके लिअे निश्चय करनेका अधिकार तुझे किसने दिया है? या दुनियासे चुनने और पसन्द करनेका अधिकार किसने छीन लिया है?

अैसी कितनी ही बातें त्याज्य मानी जा चुकी है जो अब सत्य समझी जाती हैं। कितनी ही अैसी बातें, जो आज सत्य समझी जाती हैं, आगे चलकर घृणित मानी जाने लगेंगी। तब भला मनुष्य किस बात पर कायम रह सकता है?

जिस बातको तू अच्छा समझता हो अुसे कर। अिससे तुझे सुख प्राप्त होगा। अिस ससारमें बुद्धिकी अपेक्षा सद्गुण प्राप्त करना तेरा अधिक कर्तव्य है।

जिन बातोंको हम समझ नही पाते, अुनमें सत्य और असत्यका स्वरूप क्या अेकसा नही होता? अैसी दशामें सिवा हमारे विश्वासके अुसका निश्चय कौन कर सकता है?

जो बात हमारी धारणासे परे है, अुस पर हम आसानीसे विश्वास कर लेते हैं; या हम अुस पर विश्वास करनेका ढोंग रचते है, जिससे लोग यह समझें कि हम अुस बातको जानते हैं। क्या यह मूर्खता और वृथाभिमान नही है?

अैसा कौन है, जो बडे साहसके साथ 'हां' कह सकता है? अैसा कौन है, जो अपनी ही बातको सब-कुछ समझता है? केवल वृथाभिमानी, केवल महा अहंकारी।

प्रत्येक मनुष्य, जब वह अेक राय बनाता है, यह चाहता है कि अुस पर कायम रहे; परन्तु जो बडा अहंकारी होता है, वह सबसे अधिक अैसा करता है। अिसमें वह खुद अपनी आत्माको धोखा देनेसे ही सन्तुष्ट नही होता, बल्कि दूसरोंको भी अुस पर विश्वास रखनेके लिअे मजबूर करता है।

तू यह न कह कि मनुष्यको [illegible] हाथ नहीं हुआ या [illegible] जुस पर पूरा निर्भर रहा है।

अेक मनुष्यको बात या सिद्धान्त [illegible] है, जिस प्रकार दूसरे मनुष्यको बात या सिद्धान्त, पर [illegible] द्वारा ही [illegible] पड़ता है।

३

मनुष्यके दुर्विकार

जिनसे स्वयं दुःखी तथा दूसरोंको दुःख होता है

१. लोभ

सम्पत्ति या संपत्ति जितनी वांछनीय नहीं है कि अुसकी ओर अत्यधिक ध्यान दिया जाय; अतअेव अुसकी प्राप्तिके लिअे बहुत चिन्ता करना व्यर्थ है।

अच्छी वस्तु प्राप्त करनेकी अिच्छा और अुसके पास रहनेसे होनेवाला सुख अपनी-अपनी रुचि पर — राय पर अवलम्बित है। अुस सुख और आनन्दको तू गन्दी चीजोंसे प्राप्त न कर। तू स्वयं अुन चीजोंकी महत्ताकी जांच कर। अिससे तू लोभका शिकार न होगा।

सम्पत्तिकी अमित अभिलाषा करना मानो आत्माको विष पिलाना है। अिसमें जो कुछ अच्छी बातें हैं, अुन्हें यह नष्ट-भ्रष्ट कर देती है। अुसने जड़ जमाअी नहीं कि सारे सद्गुण, सारी ओीमानदारी, सारा स्वाभाविक स्नेह अुससे डर कर भागा नहीं।

लोभी मनुष्य धनके लिअे अपने बच्चोंको बेच डालता है। अुसके माता-पिता भर भले ही जायं, पर अुसकी तिजोरीका ताला नहीं खुलता — नहीं, अुसके मुकाबलेमें वह स्वयं अपनेको भी कोअी चीज नहीं समझता। अिस प्रकार सुखकी खोजमें वह अपनेको दुःखी बनाता है।

जो मनुष्य सम्पत्तिकी खोजमें अिस आशासे कि अुसका अुपभोग करनेसे मैं सुखी होअूंगा, अपने चित्तकी शान्तिको खो देता है, वह अुस मनुष्यकी तरह है जो अपने घरको सुसज्जित करनेकी अिच्छासे घरको बेच कर सजावटका सामान खरीदता है।

जहा लोभका राज्य है, वहा समझ ले कि आत्मा दरिद्र है। जो सपत्तिको मनुष्यकी भलाओीका साधन नही मानता, वह अुसकी तलाशमें दूसरी समस्त अच्छी बातोसे हाथ नही धो बैठता।

जो दरिद्रताको अपनी प्रवृत्तिकी सबसे बडी बुराओी नही समझता और अुससे नही डरता, वह अपनेको अुससे बचानेके लिअे दूसरी तमाम बुराअियोको मोल नही लेता।

हे मूर्ख, क्या सद्गुण सम्पत्तिसे अधिक कीमती नही है? क्या अपराध दरिद्रताकी अपेक्षा अधिक अधम नही है? प्रत्येक मनुष्यके पास अुसकी आवश्यकताके लायक सपत्ति है ही, अुससे सन्तुष्ट रह, और तेरा सुख अुस मनुष्यके दु:खोको देखकर हसेगा, जो अधिक धन सचय करके रखता है।

प्रकृतिने कचनको पृथ्वीके पेटमें छिपाकर रखा है, क्योंकि वह देखने योग्य नही है। चादीको अुसने अैसी जगह रखा है, जहा तू अुसे पैरों तले रौंदता है। अैसा करनेमें क्या अुसका अभिप्राय तुझे यह जता देना नही है कि न सुवर्ण तेरी चाहके योग्य है, और न चादी तेरे नजर डालने योग्य?

लोभ करोडो हतभागियोको मिट्टीमें मिला देता है। लोभी मनुष्य अपने सगदिल मालिकोके लिअे अैसी वस्तुअें पैदा करते है, जो अुन्हें अुलटा दु:ख देती हैं और जो अुन्हें अपने अिन सेवकोसे भी अधिक दरिद्र बनाती हैं।

पृथ्वीने अपने पेटमें जहा कोषको — धनको — स्थान दिया है, समझ लीजिये कि वह स्थान अच्छी वस्तुओंके लिअे अूसर है। जहा पृथ्वीके गर्भमें सुवर्ण रहता है, वहा हरियाली नही अुगती।

जिस प्रकार घोडे अैसे स्थान पर अपने लिअे घास नही पाते हे और न खच्चर ही दाना पाते हैं, जिस प्रकार पर्वतोंके पार्श्वमें न धान्य-सपन्न खेत हसते हुअे दिखाअी देते है, न आम्रवृक्ष फल देते है और न द्राक्षलतामें ही गुच्छे लटकते हैं; अुसी प्रकार अुस मनुष्यके हृदयमें, जो अपने सगृहीत धनके ही ध्यानमें मस्त रहता है, भलाअी बसेरा नहीं करती।

सपत्ति समझदार मनुष्यकी सेविका है, परन्तु मूर्खके लिअे वह अेक जालिम है।

मनुष्य धनकी सेवा करता है; धन अुसकी सेवा नहीं करता। जैसे ... कुमारको नही छोडता, अुसी प्रकार वह धनका सदा

अपने पास रखता है। धन अुसे जलाता है, तरह-तरहके कष्ट देता है; और मृत्यु तक अुसका पिण्ड नही छोडता।

दौलतने क्या लाखो आदमियोके सद्गुणोको मिट्टीमे नही मिला दिया है? क्या अिसने आज तक किसीकी भलमनसाहतमें वृद्धि की है?

क्या यह बुरेसे बुरे आदमियोके पास बहुतायतसे नही होती? फिर तू किसलिअे अुसकी प्राप्तिके द्वारा प्रसिद्ध होनेकी अिच्छा करता है?

क्या वे लोग, जिनके पास दौलत कमसे कम थी, समझदार नही गिने गये हैं? और क्या समझदारी ही सुख नही है?

क्या तेरी श्रेणीके बुरेसे बुरे आदमियोके पास यह अधिकसे अधिक मात्रामें नही है? और अुनका अन्त दुःखमय नही हुआ है?

दरिद्रताको बहुत-सी बातोकी चाह रहती है; परंतु लोभ अुन सब बातोको दुतकार देता है।

लोभी किसीके साथ नेकी नही कर सकता। वह दूसरोके साथ अुतना निर्दय नही होता, जितना कि स्वय अपने साथ होता है।

अर्थकी प्राप्तिके समय परिश्रमी बन; और अुसके विनियोगके समय अुदार। मनुष्य जितना सुखी दूसरेको सुख प्रदान करते समय होता है, अुतना और कभी नही होता।

२. फैयाजी

यदि धनके सग्रह करनेसे बढ़ कर कोअी दूसरी बुराअी हो, तो वह है अुसको बुरे कामोंमें खर्च करना।

जो मनुष्य आवश्यकतासे अधिक धन खर्च करता है—अुसे मनमाना अुडाता है—वह मानो गरीब मनुष्यकी अीश्वरदत्त वस्तुके अधिकारका अपहरण करता है।

जो अपने संगृहीत धनको अुडा देता है, वह मानो नेकीके साधनको अपने पास रखना नहीं चाहता—वह स्वय मानो अपनेको सत्कार्य करनेसे रोकता है, जिसका पारितोपिक अुसके अधिकारमें है और जिसका अन्त अुसके निजी सुखके अतिरिक्त दूसरा नहीं है।

सम्पत्तिके अभावमें आराम पाना अुतना कठिन नहीं है, जितना सम्पत्तिवान होकर सुखी रहना कठिन है। मनुष्य धनाढ्यताकी अपेक्षा दरिद्रतामें अपने मन पर ज्यादा आसानीसे अधिकार कर लेता है।

दरिद्रतामें यदि सिर्फ अेक ही गुण — धैर्य हो तो वह समर्थन करने योग्य है। धनवानके पास यदि दानशीलता, सयम, दूरदर्शिता तथा और दूसरे गुण न हो, तो वह दोषोके पजेमें फस जाता है।

निर्धन मनुष्यको सिर्फ अपनी ही प्राप्त स्थितिका सुधार करना है, परंतु धनवानके सिर तो हजारों आदमियोंके कल्याणकी जवाबदेही है।

जो अपने सचित धनको सोच-समझ कर खर्च करता है, वह मानो अपने दुःखोको दूर करता है, पर जो अुसे बढ़ाकर जमा करता है, वह मानो दुःखोका सग्रह करता है।

यदि कोअी अपरिचित मनुष्य कुछ माग बैठे तो अुसे अिनकार न कर। जिस वस्तुको तू स्वय चाहता है, अुसके लिअे अपने अेक बधुको नाही न कर।

यह जान कि लाखोकी सपत्ति पास रहने, परतु अुसका अुपयोग न जाननेकी अपेक्षा जो कुछ तू दे चुका है अुसके कारण खाली हाथ रहनेमें अधिक सुख है, अधिक आनन्द है।

३. प्रतिहिंसा

प्रतिहिंसा या बदलेकी जड आत्माकी दुर्बलता पर जमती है। जो अत्यन्त कमीना और डरपोक होता है, वही प्रतिहिंसाका अधिक आदी होता है। का-पुरुषके सिवा अैसे कौन है, जो अुन लोगोको भीषण कष्ट देते हैं जिनसे वे द्वेष करते हैं। जो लूट भी लेता है और खून भी करता है, वह औरत नहीं तो और क्या है? बदलेकी अिच्छा तभी होती है, जब पहले हानिका खयाल होता है। परतु जो लोग अुच्च-हृदय होते हैं, अुन्हें यह कहते हुअे शर्म मालूम होती है कि अिसने मुझे हानि पहुचाअी है।

यदि हानि अुपेक्षा करने योग्य न हो, तो हानि-कर्ता मानो दूसरेको हानि पहुचाकर अपनी ही हानि करता है। क्या तू भी वैसा ही करके अपनेसे छोटे लोगोंकी सूचीमें अपना नाम लिखावेगा?

जो तेरे साथ अन्याय करता है अुसका तिरस्कार कर; जो तुझे अशान्ति दिलाता है अुसे धिक्कार दे।

अैसा करनेसे तू केवल अपनी ही शान्तिकी रक्षा नहीं करता; बल्कि अुसके विरुद्ध कुछ प्रयोग न करते हुअे, अपनेको न गिराते हुअे, तू अुसे बदलेकी पूरी सजा देता है।

जिस प्रकार तूफान और मेघगर्जनाका असर सूर्य और तारों पर न होता, बल्कि नीचेके पेड़ और पत्थरों पर अुसके प्रकोपका अन्त होता है, अुसी प्रकार हानि भी महान आत्माओं तक नहीं पहुच पाती, बल्कि अुन्हीं लोगों पर गिर कर लुप्त हो जाती है जो दूसरोंको हानि पहुचाते हैं।

आत्मतेज या तेजस्विताकी कमीसे प्रतिहिंसाकी प्रवृत्ति होती है। महा पुरुषकी आत्मा किसीको सतानेमें घृणा करती है; नहीं, वह तो अुसका हित-साधन करती है, जिसने अुसे कष्ट पहुचानेका अिरादा किया हो।

हे मनुष्य, तू बदला लेनेकी अिच्छा क्यों करता है? तू किस प्रयोजनसे अुसके लिअे सतत अुद्योग करता है? क्या अिसके द्वारा तू अपने प्रतिपक्षीको पीड़ा पहुचाना चाहता है? यदि हां, तो जान ले कि अिससे स्वयं तुझीको अत्यंत कष्ट अुठाने पड़ेंगे।

जिस हृदयमें प्रतिहिंसाके कीटाणु होते हैं, अुसे वे कीटाणु ही नोंच नोच कर खा जाते हैं। परतु जिससे बदला लेनेका वह विचार करता है, वह मनुष्य तो आरामसे रहता है।

प्रतिहिंसासे कष्ट होता है, अिसलिअे वह अनुचित है। प्रकृतिने अिसे तेरे लिअे नहीं बनाया है। क्या जिसे हानि पहुच चुकी है, अुसे और कष्ट पहुंचानेकी आवश्यकता है? और क्या जिसे दूसरेने पीड़ा पहुचाई है, अुसके कष्टका भार बढाना अुचित है?

जो मनुष्य बदलेका ध्यान करता है, वह मानो अुस पीडासे सन्तुष्ट नहीं है जो अुसे अब तक पहुच चुकी है।

जिस दण्डका पात्र दूसरा मनुष्य है, अुसे वह अपने दु:खके पाता है; परतु जिसे वह हानि पहुचाना चाहता है, वह मजेमें हसता हुआ अपनी राह जाता है। फिर भी वह — प्रतिहिंसक — अपनी मुसीबतकी वृद्धि बढ़तीको देखकर आनन्द मनाता है।

[illegible] ाक। अिरादा करनेसे भी दु:ख होता है और अुसकी [illegible] खतरनाक है। कुल्हाड़ी जहांके लिअे अुठाओ जाती है, [illegible] कम गिरती है, और देख, अुठानेवालोंको यह याद नहीं [illegible] पर अुलट कर लग सकती है।

[illegible] लेनेवाला मनुष्य चाहता तो है अपने शत्रुको हानि पहुचाना [illegible] वह स्वयं अपने ही विनाशको निमंत्रण देता है। वह [illegible]

तो लगाता है अपने विपक्षीकी अेक आंख पर, परन्तु स्वयं अपनी ही दोनों आखें गवा बैठता है।

यदि वह अपने लक्ष्यको न पहुंच पाया तो वह अुसके लिअे दुःखी होता है; परन्तु यदि सफलता पा जाय तो अुसके लिअे फिर पछताता है।

न्यायका डर अुसकी आत्माकी शान्तिका हरण कर लेता है, और अुस डरसे अुसको छिपा रखनेकी चिन्ता अुसके मित्रकी शान्तिको नष्ट करती है।

क्या तेरे शत्रुकी मृत्युमें तेरी घृणाको संतोष हो जायगा? क्या अुसको सदाके लिअे मुला देनेमें तेरी गओी हुओी शाति तुझे मिल जायगी?

यदि तू अुसे अुसके अपराधके लिअे दुःख देना चाहता हो, तो पहले अुसे जीत ले और फिर छोड दे, मर जाने पर तो तेरी प्रभुता अुस पर चलेगी नही, और न वह तेरे क्रोधके बलका अनुभव कर पायेगा।

प्रतिहिंसा तो वह है जिसमें बदला लेनेवालेकी विजय हो, और जिसने अुसे हानि पहुचाओी है, वह अुसको अप्रसन्नताके दुःखके भारको अनुभव करे, पर यह तभी होता है जब हानि पहुचानेवाला कष्ट सहन करे, और जिस कारणसे अुसने अुसे दुःख दिया हो अुसके लिअे अुसे पश्चात्ताप हो।

प्रतिहिंसाकी प्रेरणाके मूलमें क्रोध है; परन्तु जो तुझे अूचा और बडा बनाती है वह है अुपेक्षा।

हानिके बदलेमें हत्या करनेकी भावना कायरताके कारण अुत्पन्न होती है। जो हत्या करता है अुसे यह डर बना रहता है कि शत्रु कही जीता न रह जाय और अिसका बदला न चुकावे।

हत्यासे कलह तो मिट जाता है, परन्तु कीर्ति नही मिलती, मार डालना चाहे सावधानीका कार्य हो, पर साहसका नही, यह खतरेसे खाली तो है, पर सम्मानवर्द्धक नही है।

किसी अपराधका बदला लेनेसे बढकर कोओी बात आसान नही, परन्तु अुसके लिअे क्षमा कर देनेसे बढ़कर सम्माननीय दूसरी बात नही।

सबसे बडी विजय मनुष्य अपने ही अूपर प्राप्त कर सकता है। जो हानिको महसूस नहीं करता, वह मानो अुस हानिको हानि-कर्ताके ही घर भेज देता है।

जब तू प्रतिहिंसाका ध्यान करता है, तब तू यह स्वीकार करता है कि मैं जिस अन्यायको अनुभव कर रहा हू; और जब तू अुसकी शिकायत

करता है, तब तू कबूल करता है कि अिससे मुझे हानि पहुची है। क्या तू यह चाहता है कि अपने शत्रुके अुस घमण्डमें यह विजय भी शामिल हो जाय?

जो अनुभव नही की जाती, वह हानि नही समझी जाती; तब जो मनुष्य अुसको महसूस नही करना चाहता, वह बदला कैसे ले सकता है?

यदि तू किसी कष्ट या हानिको सहन करना अपनी शानके खिलाफ समझता हो, तो तेरे पास अैसी शक्तिया है जिनसे तू अिस भावनाको जीत सकता है।

अच्छे व्यवहारसे तेरा शत्रु तुझसे शत्रुता करने पर लज्जित होगा, जब वह तुझे हानि पहुचानेका विचार करेगा, तब तेरी आत्माकी अुन्नता और महत्ता अुसे भयभीत कर देगी।

जितना ही बडा अन्याय हो अुतना ही अधिक गौरव अुसे क्षमा करनेमें है। और प्रतिहिसा जितनी ही अधिक समर्थनीय हो अुतनी ही अधिक प्रतिष्ठा क्षमा-तत्परतामे है।

क्या तू स्वय अपने ही कार्यके विषयमे न्याय करनेका अधिकार रखता है? क्या स्वय अुस कार्यमे शामिल होते हुअे भी तुझे अुसके लिअे सजा सुनानेका अधिकार है? तू खुद अुसकी निन्दा करे, अिसके पहले और लोगोको कहने दे कि तेरा काम ठीक था।

प्रतिहिसक भयभीत रहता है और अिसलिअे तिरस्कृत है; परंतु जो क्षमाशीलतासे भूपित है अुनकी लोग पूजा करते है। अुसके कार्योंके स्तुति स्तोत्र सदा अमर रहते है और सारे ससारका प्रेम खिचकर अुसकी ओर चला आता है।

४. निर्दयता, घृणा और असूया

यदि प्रतिहिसा घोर तिरस्कारकी पात्र है तो निर्दयता कैसी है? देख निर्दयतामें प्रतिहिसाकी दुष्टता तो है ही; परतु अुसकी अुत्तेजनाके लिअे कुछ बहाना भी जरूरी होता है।

मनुष्य जिस बातको स्वीकार नही करते कि निर्दयता प्रकृतिका अंग है। वे अुसे अपने हृदयके लिअे अेक विजातीय वस्तु मानते है और अुसके लिअे लज्जित होते है। और क्या वे निर्दयताको अमानुपता नही कहते?

तब अुनका अुद्गमस्थान कहा है? किस दयामय वस्तु पर अुनका अस्तित्व है? अुसका पिता है भय; और सोच, भीति क्या अुसकी माता नही है?

वीर मनुष्य तब तक अपने शत्रु पर तलवार चलाता है, जब तक वह अुसका प्रतिरोध करता है; परन्तु जहां अुसने आत्म-समर्पण कर दिया कि अुसे सतोष हुआ।

जो डरता है अुसे पद-दलित करनेमें प्रतिष्ठा नहीं है, जो अपनेसे नीचे है अुसका अपमान करना सद्गुणोंमें दाखिल नहीं है। हां, जो गुस्ताख है अुसे अपने अधीन कर; और जो विनीत है अुसे छोड दे। विजयके शिखर पर चढनेका यही मार्ग है।

परन्तु जिसके पास विजय तक पहुचने योग्य ये सद्गुण नहीं हैं, और न जिसके पास अितना अूचा चढनेके योग्य साहस ही है, वह विजयके आसन पर हत्याको बिठाता है और चक्रवर्तित्वके पद पर महारको।

जो सबसे डरता है वह सबको मारता है। अत्याचारी क्यों निर्दय होते हैं? केवल अिसलिअे कि वे भीतिके साम्राज्यमें रहते हैं।

मामूली कुत्ता मुर्देको नोच-खसोट डालता है, परन्तु जब तक प्राणी जीवित होता है, तब तक अुसके मुहकी तरफ देख तक नहीं सकता, परन्तु शिकारी कुत्ता शिकारमें अुसे मार डालनेके बाद अुसे नोचता-खसोटता नहीं।

राजा और प्रजाके — अथवा आन्तरिक — युद्धमें अधिक रक्तपात होता है; क्योंकि जो अुनमें लडते हैं वे कायर होते हैं। षड्यत्री लोग नर-घातक — खूनी हुआ करते हैं, क्योंकि मृत्युके मुहसे शब्द नहीं होता। अपनी पोल खुल जानेका भय ही अुनसे यह घोर कृत्य कराता है।

यदि तू निर्दय न होना चाहता हो तो अपनेको द्वेषकी पहुचके अूपर अुठा ले; और यदि तू अमानुष न होना चाहता हो तो अपनेको महत्ताकी पहुचके परे रख।

प्रत्येक मनुष्य दो भिन्न दृष्टियोंसे देखा जा सकता है, अेकसे तो वह तुझे दुःखदायी दिखायी देगा, और दूसरीसे कम हित करनेवाला। अिनमें से तू अुसको अुस दृष्टिसे देख, जिससे वह तुझे कमसे कम हानि पहुचाता है। तभी तेरे मनमें अुसे हानि पहुचानेकी अिच्छा न होगी।

वह कौनसी बात है जिसका अुपकार मनुष्य अपने भलेके लिअे नहीं कर सकता? जो हमें बहुत क्रोध दिलाता है वह द्वेषका नहीं, तिरस्कारका अधिक पात्र है, क्योंकि मनुष्य जिसकी शिकायत करता है अुसके साथ तो नरमदिल हो जाता है, परन्तु जिसका वह द्वेष करता है अुसे तो जानसे ही मार डालना है।

यदि तेरे लाभमें किसीने बाधा डाली हो तो क्रोधके वशीभूत न हो अिससे तू विवेकको गवा बैठेगा और यह हानि पहली हानिसे भी बढकर होगी।

जब तू किसी लब्ध-प्रतिष्ठ मनुष्यकी ओर्ष्या करता है, जब अुसकी पदवियों और महत्ताको देखकर तेरा क्रोध बढता है, तब तू यह जाननेका प्रयत्न कर कि वे अुसके पास कहासे आयी और खोज कि किन अुपायोंसे अुसको प्राप्त हुअी। बस, तेरी शत्रुता दयामें बदल जायगी।

यदि अुसी दाममें तुझे वह अैश्वर्य प्राप्त होता हो, तो यकीन रख कि यदि तू बुद्धिमान होगा तो अुससे अिनकार कर देगा।

अुपाधियोंके लिअे क्या खर्च करना पडता है? केवल खुशामद! मनुष्य अधिकारको किस तरह खरीदता है? अेकमात्र अुसका गुलाम होकर जो अधिकारको देता है।

क्या तू अिसलिअे स्वयं अपनी आजादी खो देगा कि दूसरेकी स्वतन्त्रता हरण करने योग्य हो जाय? या जो अैसा करता है, क्या तू अुससे ... करेगा?

मनुष्य बिना दामके अपने बडोंसे कोअी चीज नहीं खरीदता; और ... दाम क्या अुसके मूल्यसे अधिक नहीं है? क्या तू संसारके तरीकोंको ... देगा? क्या तू दाम और वस्तु दोनों लेगा?

जिन चीजको तू स्वीकार नहीं करना चाहता, अुसके लिअे तू ... नहीं कर सकता; अिसलिअे द्वेषके अिस कारणसे दूर रह और ... अन्तःकरणसे निष्ठुरताकी अिस जडको हटा दे।

यदि तुझे सम्मान प्राप्त है तो क्या तू अुस चीजके लिअे अुतना ... जो सम्मानको खो कर प्राप्त की गअी है? यदि तू सद्गुणका मूल्य ... है, तो क्या तुझे अुन आदमियों पर तरस नहीं आता, जिन्होंने अिस ... सौभाग्यके साथ अुसका बदला किया है?

यदि तूने स्वयं अपने मनको यह शिक्षा दी हो कि दूसरोंके सुखे ... हितको बिना डाहके सहन कर ले, तो अुनके वास्तविक सुखको ... सुनकर तुझे बहुत आनन्द होगा।

यदि तू किसी गुणवान मनुष्यके पास अच्छी वस्तुको और ... तू आनंदित हो अुठेगा, क्योंकि सद्गुणको सद्गुणीके द्वारा सुख हुआ है।

या दुष्टके सुखमें वृद्धि होता है, वह मानो अपने सुखकी वृद्धि करता है।

५. विषाद

प्रसन्न मनुष्यकी आत्मा पीडामें भी मुख-मण्डल पर मुसकुराहट छा देती है; परन्तु शोकाकुल मनुष्यकी निराशा हर्षकी कान्तिका भी नाश कर देती है।

शोकाकुलताका अुद्‌गम क्या है? आत्माकी अशक्तता। अुसको बल कहासे मिलता है? तेजस्विताके अभावसे। तू यदि अुसके सामने युद्ध करनेके लिअे खडा रहेगा, तो तेरे वार करनेके पहले ही वह समर-क्षेत्रसे भाग जायगी।

वह मनुष्य-जातिकी शत्रु है, अिसलिअे अुसे अपने हृदयसे बाहर कर दे। वह तेरे जीवनकी मधुरतामें विष मिलाती है अिसलिअे अुसे अपने घरमें न आने दे।

वह अेक घासके तिनकेके नुकसानको अितना बडा बना देती है, मानो तेरे सारे वैभवका सत्यानाश हो गया। वह अेक ओर जहा क्षुद्र बातोंके लिअे तेरे अंतःकरणको अुद्विग्न करती है, वहा दूसरी ओर बडे कामकी बातोंसे तेरा ध्यान हटा देती है, देख, तेरे साथ अुसका जो सबंध है, अुसकी सूचना वह पहले ही दे देती है।

वह तन्द्राको तेरे सद्‌गुणो पर बुरकेकी तरह ढाक देती है। वह अुन लोगोंसे अुन्हें छिपा रखती है, जो अुन्हें देखकर तेरा सम्मान करें। अेक ओर तो वह तेरे सद्‌गुणोको अुलझनमें डाल देती और दबा देती है, और दूसरी ओर तेरे लिअे अुनके निमित्त परिश्रम करना अत्यंत आवश्यक बना देती है।

देख, वह तुझे बुराओके द्वारा दबाती है, और जब तेरे हाथ तेरे सिरसे बोझको अुतार कर फेंकना चाहते हैं तब वह अुन्हें बाध देती है।

यदि तू घृणित बातसे बचना चाहे, यदि तू कायरताका तिरस्कार करना चाहे, यदि तू अन्यायको अपने हृदयसे निकाल देना चाहे, तो शोकको तेरे हृदय पर अधिकार न करने दे। अुसे धर्मनिष्ठाका स्वाग न बनाने दे, ज्ञानका ढोंग रचकर वह तुझे ठग न ले। धर्म तेरे विधाताका — परमात्माका — आदर करता है, अुस पर शोककी घटा न घिरने दे। ज्ञान तुझे सुखी बनाता है, अिसलिअे यह जान ले कि दुःख अुसकी दृष्टिके लिअे अरुचिकर है।

किस बात पर मनुष्यको दुःखी होना चाहिये? सिर्फ वेदनाओ और कष्टों पर। जब कि हर्षके साधन अुससे छीने नहीं गये हैं, तब अुसका हृदय [illegible] त्याग क्यों करे? क्या यह केवल विपत्ति भोगनेके ही लिअे विपत्ति [illegible] है?

जो मनुष्य अपने हृदयको अिसलिअे दु:खी करता है कि वह खिन्न है, अिस-लिअे नहीं कि अुसे किसी तरहकी व्यथा हो रही है, वह अुन मातमी आदमोंकी तरह है जो किराये पर शोक दिखाता है और बनावटी आसू टपकाता है।

प्रसग दु:सकी अुत्पत्तिका कारण नही है; क्योंकि जिस बातसे अेकको रंज होता है, अुसी बातसे दूसरोंको सुखी होती है।

मनुष्योंसे पूछ कि क्या तुम्हारे शोकसे बिगडी बात बन जाती है? और वे खुद कबूल कर लेगे कि शोक करना मूर्खता है। जो अपनी बुराअियोंको धैर्यके साथ सहन करता है, जो साहसके साथ विपत्तिसे टक्कर लेता है, अुसकी वे प्रशसा करते हैं, पर वाहवाहीके साथ ही अुनका अनुकरण भी होना चाहिये।

शोकाकुलता प्रकृतिके विरुद्ध है, क्योंकि वह अुसकी गतिमें बाधा डालती है। देख, प्रकृतिने जिसे प्रिय बनाया है, अुसे शोकाकुलता अप्रिय बना देती है।

जैसे कोअी पेड तूफानमें अुखड पडता है और फिर अपना सिर अूचा नहीं अुठाता; अुसी प्रकार मनुष्यका हृदय शोकके आवेगके सामने सिर झुका देता है और अपनी पहली शक्तिको फिरसे नही पाता।

जैसे बरसाती पानीके बहावसे पहाड पर जमी बरफ गल जाती है, वैसे ही सुन्दरता आसुओंके कारण गालोंसे धुल जाती है। अिन दोनोंमें से कोअी भी अपनी पूर्वस्थितिको प्राप्त नही कर पाता।

जैसे मोती द्राक्षार्कसे गल जाता है, यद्यपि पहले अुसका अूपरी भाग धुधला होता दिखाअी देता है; अिसी तरह, हे मनुष्य, हृदयकी अुदासीनता सुखको निगल जाती है, यद्यपि पहले-पहल वह अुस पर सिर्फ अपनी छाया फैलाती हुअी मालूम होती है।

शोकको आम सड़को पर देख; मनोरंजनकी जगहो पर नजर फेंक; क्या कोअी अुसकी ओर देखता है? क्या वह अुनकी आख नही बचाता है और क्या अुसे देखकर प्रत्येक मनुष्य भाग नही जाता?

देख, वह जड-कटे फूलकी तरह किस प्रकार अपना सिर झुका लेता है। देख तो, अुसकी आखें सिवा रोनेके दूसरा कोअी काम नही करती।

क्या अुसके मुखमें बातचीतके लिअे शब्द है? क्या अुसके हृदयमें मिलनेका प्रेम है? क्या अुसके मस्तिष्कमें तर्कशक्ति है? अुससे शोकका कारण पूछ, अुसे पता ही नही है। भला शोकके अवसरका ही पता लगा — न देखेगा, शोकका कोअी अवसर ही नही है।

अुसका बल अुसका साथ नही देता, अन्तको वह स्मशानमें जाकर भस्मीभूत हो जाता है; और कोअी नही पूछता कि अुसको क्या हुआ?

क्या तुझे बुद्धि है? और फिर भी क्या तू अिन बातको नही समझता? या तुझमें धर्मभाव है? और फिर भी तू अपनी गलतीको नहीं जानता? ईश्वरने तुझे दयाके वश होकर अुत्पन्न किया है। यदि अुसका यह हेतु न होता कि तुझे सुख हो, तो अुसने — अुसकी अुपकारी बुद्धिने — तुझे पैदा ही न किया होता। जिस दशामें तू अुसके ऐश्वर्यके सामनेसे भाग जानेका साहस कैसे करता है?

जब तक तू अपनी निर्दोषताने — अपने भोलेपनसे अत्यन्त सुखी है, तब तक मानो तू अुसको बहुत प्रतिष्ठा करता है। और अुसके विधान पर सन्देह करना मानो अुसको असन्तुष्ट करना है।

अुसने जितनी वस्तुअें अुत्पन्न की है, क्या वे परिवर्तनशील नही हैं? यदि है, तो तू अुनके परिवर्तन पर क्यो सिर पीटता है?

यदि हम प्रकृतिका नियम जानते हो, तो फिर किसलिअे हम अुसकी शिकायत करें? यदि हमें अुसका ज्ञान नहीं है, तो हमें अपनी अन्धताके सिवा किसको दोष देना चाहिये? अुसके कारण जिस बातका सबूत पग-पग पर मिलता है, अुसे भी हम नही देख सकते।

यह जान ले कि तुझे संसारके लोगोंको बातूनी ही सिखाना है, तेरा काम तो यही है कि जितना तू अुन्हे जानता जाय, अुतना ही अुन्हें मानता जा। यदि वे तुझे कष्ट पहुंचाते हो, तो अुनके लिअे रंज करना मानो अपने कष्टको बढ़ाना है।

स्त्री पतिव्रता है क्या अुसकी प्रशंसा नहीं होती? जो मनुष्य प्रामाणि
है क्या वह सम्मान पानेके योग्य नहीं है?

कीतिकी पिपासा बडी अुग्र और जबरदस्त होती है; सम्मान
अभिलाषा बडी प्रबल होती है। अिन दोनों वस्तुओंके प्रदान करने
औश्वरके अुद्देश्य महान हैं।

यदि सर्व-साधारणके लिअे साहसपूर्ण कार्य करनेकी आवश्यकता हो
यदि हमारा जीवन देशहितके लिअे दे देना जरूरी हो, तो हमारे सद्गुण
शक्तिका योग कौन करता है? केवल महत्त्वाकांक्षा।

सम्मान प्राप्त करनेसे कुलीन मनुष्य प्रसन्न नहीं होता। अुसे तो सि
बात पर अभिमान होता है कि मैं अिसके योग्य हूं।

क्या यह कहनेकी अपेक्षा कि अिसका पुतला क्यों खड़ा किया गया है, य
पूछना बेहतर नहीं है कि अिसका पुतला क्यों नहीं खड़ा किया गया है?

महत्त्वाकांक्षी जन अन्य सब लोगोंमें हमेशा पहला आता है। व
आगे बढ़ता चला जाता है और कभी अपने पीछे नहीं देखता। हजा
आदमियोंको बड़ी दूर पीछे छोडनेमें अुसे जो हर्ष होता है, अुसकी अपेक्ष
अेक आदमीको अपने आगे देखनेसे अुसकी आत्माको अधिक व्यथा होती है

महत्त्वाकांक्षाका मूल तो प्रत्येक मनुष्यके हृदयमें होता है, पर
सबमें वह अंकुरित और पल्लवित नहीं होता। कुछ लोगोंमें डर अुसे द
रखता है और बहुतेरे लोगोंमें 'विनय' अुसकी वृद्धिको रोक देता है।

यह आत्माका आन्तरिक आवरण है। मनुष्य-शरीरके अुत्पन्न होने प
सबसे पहले वह अुससे आच्छादित हो जाता है और अुसका नाश हो
पर सबके पीछे अुतारा जाता है।

यदि महत्त्वाकांक्षाका अुपयोग योग्यतापूर्वक किया जाय, तो तेरे लि
वह प्रतिष्ठाका कारण होगी। यदि तू अुसका प्रयोग बुरे कामोंमें करेग
तो वह तुझे नीचा दिखावेगी और तेरा सत्यानाश कर देगी।

विश्वासघातीके हृदयमें महत्त्वाकांक्षा छिपकर बैठी रहती है; धूर्तता अुसके
घूंघटमें अपना मुंह छिपाती है; और शान्त कपट-व्यवहार अुसे मीठी वाण
प्रदान करता है। परन्तु अन्तमें लोग जान जाते हैं कि असल बात क्या है।

जाड़ेसे ठिठुर जाने पर भी सर्पकी दंश करनेकी शक्ति नष्ट नहीं
होती और शीतके द्वारा मुंह बंद हो जाने पर भी अुसके दांत ज्योंके त्यों

बने रहते हैं। तू भले ही अुनको दया पर दया दिखा, पर वह अपना धर्म तुझे दिखाये बिना न रहेगा — तू भले अपनी छाती पर अुसे सुला, पर वह तुझे यमराजके घर पहुंचाये बिना न रहेगा।

जो सच्चा गुणी है वह गुणकी महत्ताके लिअे गुणको चाहता है। वह अुन बातोंका तिरस्कार करता है, जो महत्त्वाकांक्षीका लक्ष्य होता है।

यदि सद्‌गुण दूसरोंकी प्रशंसाके बिना सन्तुष्ट न हो सके, तो अुसकी दशा कितनी दयनीय हो जाय? अुसका हृदय अितना अुच्च है कि वह अपनी हानिकी पूर्ति तक नहीं चाहता, और अुससे अधिक तो वह हरगिज नहीं चाहता जितना मिल सकता है।

ज्यों ज्यों सूर्य अूंचा चढ़ता जाता है, त्यों त्यों छाया छोटी पड़ती जाती है; अिसी तरह सद्‌गुण जितना अधिक होता है, अुतना ही कम वह स्तुतिका लोभ करता है। तो भी सम्मानके रूपमें अुसे पारितोषिक मिले बिना नहीं रहता।

वैभव अुस मनुष्यसे छायाकी तरह दूर ही रहता है, जो अुसके पीछे पड़ता है। परन्तु जो अुससे दूर रहता है, अुसके पीछे वह अपने आप चलता है। यदि तू बिना ही गुणके अुसकी चाह करता है तो वह तुझे कभी नहीं मिल सकता और यदि तू अुसके योग्य है तो तू अपनेको कितना ही क्यों न छिपावे, वह तेरे पास आये बिना कभी नहीं रह सकता।

जो वस्तु सम्माननीय है अुसकी प्राप्तिका प्रयत्न कर, जो काम अुचित है वही कर। जिससे दूसरे अैसे लाखों आदमियोंके स्तुति-स्तोत्रोंकी अपेक्षा, जो यह नहीं जानते कि तू अुनके योग्य है, तेरी अन्तरात्माकी प्रशंसा तुझे अधिक हर्षप्रद होगी।

२. विज्ञान और विद्या

मनुष्यके मनके लिअे बढ़ियासे बढ़िया काम है अुस जगत्पिताके कार्योंका मनन करना।

प्रकृतिके विज्ञानसे जिसे प्रसन्नता होती है, अुसके लिअे प्रत्येक वस्तु ओीश्वरकी प्रमाण-भूत है; प्रत्येक वस्तु, जो ओीश्वरके अस्तित्वको प्रमाणित करती है, जिस बातका कारण बताती है कि ओीश्वरकी पूजा-आराधना क्यों करनी चाहिये।

अुसका मन प्रतिक्षण आकाश तक अूंचा अुठता रहता है, अुसका जीवन भक्तियुक्त कार्योंकी अेक शृंखला ही है।

जब तू तारोंकी ओर अपनी आंख अुठाता है, तो क्या आश्चर्य-चमत्कारसे तू भर नहीं जाता? जब तू नीचे पृथ्वीकी ओर देखता है, तो क्या कोई अवाज़ अुच्च स्वरसे नहीं कहती कि अुस सर्वशक्तिमानकी करामातोंको महाविभूति तेरी शक्ति तुझे नहीं बता सकती?

चन्द्र और नक्षत्र अपने-अपने मार्गोंमें — कक्षाओंमें — भ्रमण करते हैं। सूर्य सदा अपने ही स्थानमें बना रहता है, धूमकेतु आकाश-मण्डलमें भ्रमण करता है और अपने निश्चित मार्ग पर पुनः लौट आता है। हे मनुष्य, क्या तो अिन नक्षत्रोंको ओश्वरके सिवा कौन बना सकता था? अुसके अनन्त ज्ञानके सिवा कौन अुनके नियमोंकी रचना कर सकता था?

अुनकी रोशनी आश्चर्यजनक होते हुवे भी वे क्षीण नहीं होते, अुनकी गति अत्यन्त तेज होते हुवे भी कोअी अेक-दूसरेके मार्गमें भ्रमण नहीं करता।

पृथ्वीकी ओर दृष्टि कर और देख कि अुस पर क्या क्या पैदा होता है। अुसके गर्भकी जांच कर और देख कि अुसमें क्या क्या भरा है; क्या ज्ञान और शक्तिके बिना अिनका अस्तित्व सम्भव है?

घासको बढ़नेका हुक्म कौन देता है? कौन अुसे मौसम पर पानी देता है? बैल अुसको काटता है; और घोड़ा आदि पशु अुससे अपना पेट भरते हैं। वह कौन है जो अुन्हें यह देता है?

जो अनाज तू बोता है अुसे कौन बढ़ाता है? कौन तुझे अुसका हजार गुना करके देता है?

आम और अंगूरको कौन तेरे लिअे समय पर पकाता है? क्या तू अुसे जानता है?

क्या क्षुद्रसे क्षुद्र मक्खी भी अपने आप पैदा हो सकती है? और यदि तू ओश्वरसे कुछ भी छोटा होता, तो क्या अुसे वैसा बना सकता था?

पशु जानते हैं कि हम जीवित हैं, परन्तु अिस पर अुन्हें आश्चर्य नहीं होता। वे अपने जीवनको पाकर खुश होते हैं, परन्तु नहीं जानते कि अिसका अन्त भी होगा। हर प्राणी क्रमसे अपना काम करता है और हजारों पीढ़ियां हो जाने पर भी किसी प्राणी-जातिकी कमी नहीं होती।

यदि तू अंशमात्रको देखकर संपूर्णको दिव्य और भव्य समझता है, तो अुन अंशोंके अन्दर अुस जगत्पिताकी महत्ता खोजनेसे अधिक अच्छे काममें तेरी आंखोंका और अुनके चमत्कारोंकी छानबीन करनेसे अधिक अच्छे काममें तेरे दूसरा क्या सदुपयोग हो सकता है?

५

प्राकृतिक दैवयोग

१. अुत्कर्ष और विपत्ति

अुत्कर्षमें तेरे हृदयको सीमाके बाहर न फूलने दे, और न दैवकी अति प्रतिकूलतामें अपनी आत्माको गिरने दे।

अुन्नतिकी मुसकान स्थिर नहीं है। अुस पर विश्वास न रख। न अुसका रोष सदा टिकता है। अिसलिअे आशा तुझे धैर्यका पाठ पढ़ावे।

विपत्तिको अच्छी तरह सहन करना कठिन है; परन्तु अुत्कर्ष-कालमें संयम रखना तो ज्ञानकी चरम सीमा है।

संपत्ति और विपत्ति ये तेरी स्थिरचित्तताकी कसौटी हैं। तुझे अपनी आत्माकी शक्तिका बोध करानेके लिअे अिसके सिवा दूसरी चीजकी जरूरत नहीं। जो चीजें तेरे पास आवें, तू अुन पर नजर रख।

अुन्नतिको देख, वह कैसी मीठी-मीठी बातें करके तुझे फुसलाती है! किस तरह बेजाने वह तेरा बल-वीर्य हरण कर लेती है!

यद्यपि आपत्कालमें तेरा चित्त स्थिर रहा हो, यद्यपि विपत्ति तुझे जीत न पाअी हो, तथापि अुन्नतिने तुझे जीत लिया है। संपत्तिके समय तू नहीं जानता कि तेरी ताकत अब नहीं लौटेगी, तुझे अुसकी फिर आवश्यकता पड़ेगी।

कष्ट और यन्त्रणासे शत्रुओंको भी दया आ जाती है; सफलता और सुखको देखकर मित्र भी अीर्ष्या करने लगते हैं।

विपत्तिमें सत्कार्यका बीज रहता है, विपत्ति वीरताकी पालक और साहसकी धाय है। दुनियामें अैसा कौन है जो अपने पास काफी चीज होते हुअे भी अधिकके लिअे अपनेको खतरेमें डालेगा और आरामसे बीतते हुअे अपने जीवनको संकटमें डालेगा?

सच्चा सद्‌गुण हर तरहकी परिस्थितियोंमें सहायता करता है; परन्तु मनुष्यको अुसके बहुतसे परिणाम तब दिखाअी देते हैं, जब अुसके साथ कोअी दुर्घटना हो जाती है।

विपत्तिमें दूसरे लोग मनुष्यका साथ छोड़ देते है, वह देखता है कि मेरी सब आशाओंका आधार अकेला मैं ही हूं। तब वह अपनी आत्माको जाग्रत और सचेत करके अपनी कठिनाअियोंका सामना करता है और अुन्हे अुसके आगे झुकना पड़ता है।

अुत्कर्ष-कालमें वह अपनेको सुरक्षित मानता है। और ख्याल करता है कि मेरे आसपासके खुशामदी लोग मेरे साथ अत्यन्त स्नेह रखते हैं। जिससे अुसकी लापरवाही बढ़ जाती है और वह निठल्ला हो जाता है। वह अपनी आंखोंके सामनेके खतरेको नही देख पाता। वह दूसरोंका भरोसा रखता है और अन्तको अुनसे धोखा खाता है।

मुसीबतमें प्रत्येक मनुष्य अपनी आत्माको सलाह दे सकता है, परन्तु अुत्कर्ष सत्यको अंधा कर देता है।

अुस हर्षकी अपेक्षा, जो मनुष्यको मुसीबत सहन करनेके अयोग्य बनाता है और अुसे फिर अुसी मुसीबतमें डुबा देता है, वह दुःख बेहतर है जो अुसे सन्तोष तक पहुंचाता हो।

अनिश्चयनामें मनोविकारोंकी प्रबलता होती है, मितता या सौम्यता अनका परिणाम है।

जीवनभर ओीमानदार रह, समस्त स्थितियोंमें सन्तुष्ट रह, जिससे तुझे समस्त संयोगोंमें लाभ मिलेगा और तेरा प्रत्येक कार्य तेरी स्तुतिका कारण होगा।

समझदार आदमी प्रत्येक वस्तुको लाभका साधन बना लेता है और समृद्धिके समस्त रूपोंको वह अेक ही दृष्टिसे देखता है। सफलकालमें वह सयम और नियममें रहता है, विपत्ति पर विजय प्राप्त करता है और सब स्थितियोंमें अविचल रहता है।

न तो अुत्कर्षमें अभिमानी हो और न विपत्तिके समय निराश, न तो संकटको निमंत्रण दे और न कायरकी तरह अुसके सामनेसे भाग। जो वस्तु तेरा साथ नहीं दे सकती अुससे दूर रह।

विपत्तिको आशाके पख न तोड़ने दे और न अुत्कर्षको दूरदर्शिताके प्रकाशको धुंधला बनाने दे।

जो अपने ध्येयसे निराश हो जाता है वह अुसके पास कभी नहीं पहुंच पाता; और जो गड्ढेको नहीं देखता वह अुसमें गिरकर टुकड़े-टुकड़े हो जाता है।

जो युवकोंको अपना [illegible] करता है, जो युवा कहता है 'मेरे बालोंमें [illegible] हुआ' — ओह! वह जाने बहानेका [illegible] अुस बालूमें जाता है जिस समुद्रको लहर [illegible] साथ बहा ले जाता है।

जैसे नदीका स्रोत पहाड़से निकलकर समुद्रकी ओर जाता हुआ नदीके आसपासके सारे खेतोंको आलिंगन करता है और किसी जगह नहीं रुकता; अुसी तरह [illegible] बह जाती है। अुसकी गति निरन्तर है। वह कहीं ठहरती नहीं। वह हवाकी तरह चंचल है। तब क्या तू अुसे कैसे पकड़ सकता? जब वह तुझे आलिंगन करती है, तब मानो तुझे आशीर्वाद देती है परन्तु ज्यों ही तू अुसे धन्यवाद देनेके लिये मुंह खोलता है, वह दूसरेके साथ चली जाती है।

२. पीड़ा और रोग

शरीरका रोग आत्मा पर भी प्रभाव डालता है, अेक-दूसरेके बिना कोअी नीरोग नहीं रह सकता।

सबसे बीमारियोंमें वेदना अधिक दुःखदायिनी होती है। और कुदरतके पास जिसकी बहुत ही कम दवायें हैं।

जब स्थिरता तेरा साथ छोड़ दे तब सबकों याद कर; जब धैर्य तुझको छोड़ दे तब आशाको पुकार।

कष्ट-सहन तेरे स्वभावके लिअे आवश्यक है — यह छायाकी तरह तेरे पीछे लगा हुआ है। क्या तू चाहता है कि चमत्कारोंके द्वारा अुनसे अपनेको बचा ले? या क्या कष्टके अुपस्थित होने पर तुझे अफसोस होता है? अरे, यह तो सबके भाग्यमें बदा हुआ है।

जिस स्थितिमें तू अुत्पन्न हुआ है, अुससे मुक्त रहनेकी आशा करना न्यायोचित नहीं है। परिस्थिति-प्राप्त धर्मका नम्रतापूर्वक पालन कर।

क्या तू ऋतुओंसे कहेगा, 'मत गुजरा करो, मैं बुड्ढा हो जाअूंगा'? क्या यह बेहतर नहीं है कि जिस यातनाको हम किसी तरह नहीं हटा सकते, अुसे सन्तोषपूर्वक सहन करें?

जो दर्द बहुत देर तक रहता है वह सौम्य होता है; अिसलिअे अुसकी शिकायत करते समय संकोच कर। जो बहुत अुग्र होता है वह थोड़ी ही देर ,९ है और तेरे देखते-देखते अुसका अन्त हो जाता है।

तेरा शरीर तेरी आत्माका सेवक है। वह अिसलिअे बनाया गया है कि तेरी आत्माकी सेवा करे। जब तू शरीरकी पीडाओंके लिअे आत्माको व्यथित करता है, तब तू अुसे आत्मासे बढ़कर महत्त्व देता है।

समझदार आदमीका वस्त्र यदि काटोंसे फट जाय तो वह दु:ख नहीं करता; अिसी तरह धीर मनुष्य अपने आवरणको कष्ट पहुचनेके कारण अपनी आत्माको कष्ट नहीं देता।

३. मृत्यु

जिस प्रकार धातुकी बनावटसे कीमियागरके कौशलकी पहचान होती है, अिसी प्रकार मृत्यु हमारे जीवनकी अेक कसौटी है। यह अैसी कसौटी है जो हमारे समस्त कार्योंका नाप बताती है।

यदि तू किसीके जीवनका विचार करना चाहे तो असकी अवधिकी जाच कर। अुसका अन्त प्रयत्नको सफल बनाता है, कपट-व्यवहारका अन्त हुआ कि सत्यके दर्शन होने हैं।

जो अच्छी तरह मरना जानता है, समझ ले कि अुसने अपना जीवन बुरी तरह नहीं खोया, और न अुस मनुष्यने अपना सारा समय व्यर्थ गवाया है, जिसने जीवनके अन्तिम भागका अुपयोग अिस तरहसे किया है कि अुसे गौरव मिले।

जो अुचित रीतिसे मरता है, असका जन्म व्यर्थ नहीं गया, और न वह व्यर्थ जीवित रहा, जिसकी मृत्यु सुखपूर्वक हुअी हो।

जो मनुष्य यह सोचता रहता है कि अेक दिन मुझे मरना है, वह अपने जीवनकालमें सन्तुष्ट रहता है। जो अुसे भूलनेका प्रयत्न करता है, अुसे किसी भी बातसे आनन्द नहीं मिल सकता, अुसका हर्ष असे अैसे रत्नकी तरह दिखाअी देता है, जिसके खोये जानेकी आशका अुसे प्रतिक्षण बनी रहती है।

क्या तू कुलीन मनुष्यकी तरह मरना चाहता है? यदि हा, तो अपने पापोंको तुझसे पहले मरने दे। सुखी वह मनुष्य है, जिसने अपने जीवनका कार्य मृत्युसे पहले ही समाप्त कर लिया है, जिसे मौतकी घड़ी आने पर मरनेके सिवा और कोअी काम बाकी नहीं रहता, जो विलबकी अिच्छा नहीं करता, क्योंकि समय बितानेके लिअे अुसके पास कोअी काम ही बाकी नहीं है।

मौतको न टाल, क्योंकि यह दुर्बलता है। अिससे न डर, क्योंकि तू नहीं जानता कि वास्तवमें यह है क्या। अिसके सम्बन्धमें तू जो कुछ निश्चित रूपसे जानता है वह यह कि मृत्यु तेरे समस्त दुःखोंका अन्त कर देती है।

यह न खयाल कर कि दीर्घतम जीवन अत्यन्त सुखमय होता है, बल्कि यह जान कि जिस जीवनका अुत्तम अुपयोग हुआ है, वही मनुष्यको अत्यन्त आदर प्रदान करता है और मृत्युके पश्चात् वह आनन्दपूर्वक रहता और अुसके लाभोंको भोगता है।

यही मनुष्य-जीवनका सद्व्यय है।

हमारे कुछ और हिन्दी प्रकाशन

गोखले — मेरे राजनीतिक गुरु	१–०–०
खादी	२–०–०
आश्रम-भजनावलि	०–८–०
हिन्दुस्तान और ब्रिटेनका आर्थिक लेन-देन	०–८–०
ठक्करबापा	३–०–०
महादेवभाअीका पूर्वचरित	०-१४-०
हिमालयकी यात्रा	२–०–०
जीवनका काव्य	२–०–०
अुत्तरकी दीवारें	०-१६-०
भावी भारतकी अेक तसवीर	०–८–०
जीवनशोधन	३–०–०
बापू — मैंने क्या देखा, क्या समझा?	३–०–०
सर्वोदयका सिद्धान्त	०-१०-०
हमारी बा	२–०–०
बा और बापूकी शीतल छायामें	२–८–०
बापू – मेरी मा	०-१०-०
मरकुज	१–४–०
गांधीजी	०-१२-०
कलकत्तेका चमत्कार	१–६–०
सरदार पटेलके भाषण	५–०–०
दिल्ली-डायरी	३–०–०
बापूके पत्र मीराके नाम	६–०–०
शिक्षाका माध्यम	०–६–०
भूदान-यज्ञ	१–६–०
अस्पृश्यता	०–२–०
आरोग्यकी कुंजी	०–३–०
सुधरकी कमी और खेती	२–८–०
दारुबंदी	०–२–०

बापूके पत्र — १ : आश्रमकी बहनोंको	१–४–०
भाषावार प्रान्त	०–४–०
रचनात्मक कार्यक्रम	०–६–०
रामनाम	०-१०-०
राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी	१–८–०
वर्ण-व्यवस्था	१–८–०
सत्याग्रह आश्रमका अितिहास	१–४–०
हरिजनसेवकोंके लिअे	०–६–०
राष्ट्रभाषाका सवाल	०–६–०
अेक धर्मयुद्ध	०-१२-०
सयानी कन्यासे	१–०–०
अीशु ख्रिस्त	०-१०-०
निर्भयता	०–३–०
शराबबंदी क्यों ?	०-१०-०
गांधी-साहित्य-सूची	३–४–०
प्रेमपन्थ – १	०–४–०
गांधीचरितमानस	०–६–०

डाकखर्च अलग

नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद-१४

विवेक और साधना

लेखक केदारनाथ

सपा० किशोरलाल मशरूवाला

रमणीकलाल मोदी

यह पुस्तक वेदान्त, भक्ति, ध्यान, योग-साधना, सिद्धि, साक्षात्कार, तप, वैराग्य आदि विषयोंके जिज्ञासुओं और साधकोंको भी विवेककी कसौटी पर परखा हुआ सच्चा मार्ग बतायेगी और सीधा-सादा, सदाचारी तथा कुटुम्ब, समाज व देशकी सेवाका जीवन बितानेके अिच्छुक ससारियोंको भी रूढ़िवाद और अधश्रद्धासे अूपर अुठाकर विवेकका रास्ता दिखायेगी। अिसमें लेखकने जगह-जगह अिस बात पर जोर दिया है कि सद्गुणोंकी वृद्धि करके मानवताका विकास करना ही मनुष्य-जीवनका सर्वोच्च ध्येय और परम सार्थकता है।

की० ४-०-० डाकखर्च १-४-०

रामनाम

लेखक . गांधीजी; सपा० भारतन् कुमारप्पा

रामनाममें गाधीजीकी श्रद्धा बचपनसे ही थी। ज्यों-ज्यों अुनके जीवनका विकास होता गया, त्यों-त्यों अुनकी यह श्रद्धा बढ़ती और मजबूत होती गअी कि रामनाम शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक सभी तरहकी कठिनाअियां और रोगोंको मिटानेका अेकमात्र अुपाय है।

की० ०-१०-० डाकखर्च ०-४-०